# श्री लाल बहादुर शास्त्री

## जीवन, कथा

3·2

मधुर प्रकाशन, दिल्ली-६
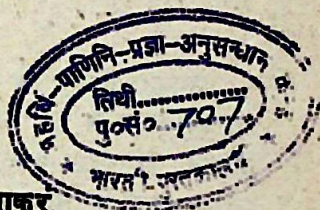
# परिचय

सृजति तावदशेषगुणाकरं
पुरुषरत्न मलंकरणं भुवः ।
तदपि तत्क्षणभंगि करोति चेद्
अहह कष्टमपण्डितता विधेः ।।

विधाता पहले तो समस्त गुणों की खान और देश के गौरव-स्वरूप किसी महापुरुष को उत्पन्न करता है, और फिर शीघ्र ही उसे उठा लेता है। अहो ! यह उस की नासमझी ही तो है।

जीवन-संघर्ष की कसौटी पर सदा खरे तथा अन्तिम श्वास तक देश हित एवं विश्व-शान्ति के चिन्तन में लीन जन-जन के प्यारे भारत मां के दुलारे प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री आज हमारे बीच में नहीं हैं। उनका पार्थिव शरीर कराल काल के हाथों झंझोड़ा जा चुका है। किन्तु उन्होंने जो प्रेरणा प्रत्येक भारतवासी के हृदय में भरी, कठिन से कठिन घड़ियों में देश का जो मार्ग दर्शन किया, क्या उसे कभी भुलाया जा सकेगा ? भले ही उनका भौतिक शरीर हमें दिखाई न पड़े, उनकी सौम्य आकृति हमारे मध्य न हो, तथापि उनका सन्देश सदैव कानों में गूंजता रहेगा और आने वाली पीढ़ियों के हितार्थ उनके जीवन-प्रसंगों में निरन्तर प्रेरणा स्रोत प्रवाहित करता रहेगा।

ऊपर से नवनीत, अन्दर से दृढ़ चट्टान, छोटा कद पर विशाल हृदय, छोटे-बड़े सब की समान रूप से सुनने वाले श्री लालबहादुर शास्त्री अपने गुणों से जब अपनी प्रसिद्धि के चरम उत्कर्ष पर पहुंचे तो मानो नियति को उनसे ईर्ष्या हो गई। उसने उन्हें हमसे छीन ही लिया।

उनकी वृद्धा मां को विश्वास नहीं कि उनका और भारत माता का बहादुर लाल चला गया। वे बराबर यही कहती रहीं कि 'उसका देहान्त कैसे हो सकता है, वह जीवित है।' इसी प्रकार का अविश्वास मन में तब तक रहा जब तक सोवियत विमान से उनका फूलों से सजाया हुआ शरीर भारत के सर्वोच्च जरनलों ने तोपगाड़ी पर न रख दिया और देखने वालों ने देख न लिया।

जनमानस के प्रतीक शास्त्री जी जनता से निकलकर आये थे। और जनता के हृदय को खूब समझते थे। गान्धी जी की तरह पवित्र सिद्धान्तवादी, दरिद्रनारायण के संरक्षक और सेवक, नेहरू की तरह लोकतन्त्री समाजवाद, तटस्थता और शांति में अटूट विश्वास रखने वाले, पन्त की तरह कुशल प्रशासक और टण्डन जी की तरह भारतीय संस्कृति में दृढ़ आस्थावान् श्री शास्त्री जी भारतीयता के प्रतीक थे।

मिष्टभाषी किन्तु दृढ़ संकल्पी शास्त्री जी युद्ध और शान्ति दोनों के विजेता और नेता बने। अपने प्रधानमन्त्रित्व काल की अल्प अवधि में उन्होंने कुछ हिमालय जैसे बड़े और चट्टान-जैसे बड़े मजबूत निर्णय किये। कच्छ के रण का फैसला जहां उनकी शान्ति की नीति का परिचायक था, वहां काश्मीर में पाकिस्तानी हमले के बाद उन्होंने युद्ध छिड़ जाने पर बहादुर की तरह लड़ने का फैसला किया, यह उनकी दृढ़ता का द्योतक था। वे जानते थे कि चीन और पाकिस्तान दोनों मिलकर घात कर रहे हैं। उनके साथ इण्डोनेशिया आदि कुछ अन्य देश भी शामिल हैं और भारत का प्रायः समूचा सीमान्त आग की लपटों से झुलस रहा है, पर एक सच्चे शूरवीर की तरह उन्होंने हथियार का जवाब हथियार से ही देने का निश्चय किया, और संसार जानता है कि सितम्बर १९६५ के इस युद्ध में भारत की विजय उनकी दृढ़ता और संकल्प की नीति
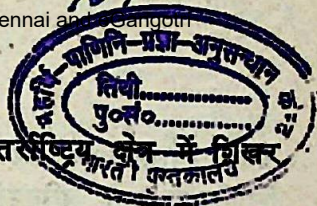
का परिणाम था, जिसने भारत को अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्र में शिखर पर ले जाकर बिठा दिया।

युद्ध की जीत से भी बढ़कर ताशकन्द की शान्ति की जीत ने भारत और उस के प्यारे पूत लाल बहादुर की प्रतिष्ठा को ऊंचा उठाया।

अब से लगभग ६१ वर्ष पूर्व बनारस के समीप एक छोटे से गांव में जन्म लेने वाले शास्त्री जी का विगत जीवन व्यापक रूप से भारतीय जन-जीवन का प्रतिनिधि और प्रतीक रहा है। देश के नीति-नियामक के सर्वोच्च पद पर आसीन होने के बाद भी श्री शास्त्री जी ने अपने बचपन की निर्धनता और जीवन-संघर्ष की कटुता को विस्मृति नहीं किया था। तब वे गंगापार से बनारस पढ़ने के लिए आते थे और नाव-भाड़ा चुकाने में असमर्थ होने के कारण उन्हें कभी-कभी तैर कर ही गंगा पार करनी पड़ती थी। राष्ट्रीय आन्दोलन में कूदने के बाद जब काशी विद्यापीठ में अध्ययन करने लगे, तब भी निर्धनता ज्यों की त्यों थी। संसार के सब से बड़े लोकतन्त्र का प्रधानमन्त्री बनने से कुछ महीने पूर्व भी श्री शास्त्रीजी ने अपनी निर्धनता के उन दिनों की याद करते हुए कहा था कि तब मुझे केवल अढ़ाई रुपये महीने पर जीवन बसर करना पड़ता था और कई-कई महीने तक एक वक्त भोजन पर गुजारा चलता था।

जीवन-संघर्ष की इस कटुता से किशोर लालबहादुर के संवेदन-शीलता उत्कट ही हुई थी। शायद यही कारण था कि जब १९२१ में गांधी जी की आंधी का दौर चला और अंग्रेजों से असहयोग का नारा गूंजा, तो सतरह वर्ष की अवस्था के लालबहादुर भी खामोश नहीं रह सके। उनकी स्कूली शिक्षा-दीक्षा और निजी सुख-समृद्ध की सभी आकांक्षाएं तो हो गईं गौण और उनके स्थान पर उभर आई एक नई प्यास-मातृभूमि को स्वाधीन और सम्पन्न देखने की

वाह। स्वाधीनता-संग्राम के उस क्रान्तिकारी दौर में देशभक्तों के लिए सबसे बड़ी अग्निपरीक्षा थी जेल-यात्रा। कोमल काया वाले ५ फुट कद के लालबहादुर इस कठिन परीक्षा की घड़ियों में कभी पीछे नहीं रहे और सदा खरे ही उतरे। शास्त्री जी ८ बार जेलों में गए और उनके जीवन के लगभग ९ वर्ष अंग्रेजों की जेलों में बीते।

श्री लालबहादुर शास्त्री का जीवन इसका प्रमाण है कि हमारे देश में प्रजातन्त्र की जड़ें मजबूत हैं। बड़ी ही मामूली हैसियत से अपना जीवन आरम्भ करके पारिवारिक प्रतिष्ठा, पद और सम्पदा की सहायता के बिना वे इस देश के सर्वोच्चपद पर पहुंचे। यह पूर्णतया उनके चरित्र-बल और उनके जीवन की एकनिष्ठ प्रामाणिकता का परिणाम था।

उनके जीवन की कुछ प्रेरक घटनाएं जिनमें उनका व्यक्तित्व स्वतः निखर कर सामने आया है, आगे वर्णित की गई हैं।

## जन्म और बाल्यजीवन

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का जन्म सन् १८६९ के २ अक्टूबर को हुआ था। ३५ वर्ष बाद १९०४ के २ अक्टूबर को ही लालबहादुर शास्त्री का भी जन्म हुआ। यह देश का सौभाग्य था। इन्होंने उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले के मुगलसराय में एक निर्धन कायस्थ परिवार में जन्म ग्रहण किया। इनके पिता श्री शारदाप्रसाद एक स्कूल में साधारण अध्यापक थे, बाद में उन्होंने सरकारी नौकरी करली थी। वेतन थोड़ा ही मिलता था। परिवार का निर्वाह बड़ी कठिनता से हो पाता था। लालबहादुर की जन्मपत्री बनवाने के लिए भी इनके पास पैसे न थे। दैवदुर्विपाक से लालबहादुर के जीवन में अभाव की और वृद्धि हुई और इन की डेढ़ वर्ष की अवस्था में ही इनके पिता जी का देहान्त हो गया। परिवार के ऊपर से छत्रच्छाया उठ गयी और भरण-पोषण कठिन हो गया।

इसलिए इनकी माता श्रीमती रामदुलारी [illegible] छोड़कर, अपने पुत्र और दोनों पुत्रियों को साथ लेकर अपने मायके मिर्जापुर चली गयीं। उस अनाथ बालक का भरण-पोषण उनके मामा और नाना ने किया। उनके बचपन के दस वर्ष मिर्जापुर में ही बीते। उसके बाद उनकी मौसी उन्हें वाराणसी ले आयीं और फिर रामनगर में उनकी पढ़ाई हुई। बचपन में इनको लोग ननकू कहते थे। उस समय कोई नहीं जानता था कि एक दिन यही बालक देश का भाग्य-विधाता बन जाएगा।

## शिक्षा-दीक्षा

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा स्थापित हरिश्चन्द्र हाई-स्कूल में लालबहादुर प्रविष्ट हुए और अपनी प्रारम्भिक शिक्षा इन्होंने यहीं पूर्ण की। आर्थिक दृष्टि से ये अत्यन्त दरिद्र थे, इसलिए इनकी फीस माफ थी, पुस्तकों का प्रबन्ध भी इनके मित्र ही किया करते थे। स्कूल के विद्यार्थी एक बार पिकनिक पर गए। अध्यापक ने खर्च पूरा करने के लिए विद्यार्थियों से पैसे इकट्ठे करने को कहा, तो पिकनिक के कार्य में भाग लेने को उत्सुक लालबहादुर ने बड़े सुलभ भाव से कहा था—'पर मास्टर साहब, मेरे पास तो केवल एक ही पैसा है।'

घर से स्कूल आते-जाते मार्ग में गंगा नदी पड़ती थी। प्रतिदिन पैसे देकर नौका द्वारा नदी पार कर घर से स्कूल और स्कूल से घर जाना पड़ता था। जब ये चौदह वर्ष की अवस्था के थे तो एक बार यह प्रसंग भी आया कि इनके पास नौका में बैठने के लिए पैसे नहीं थे और गंगा को तैर कर ही पार करके इन्हें घर पहुंचना पड़ा। इस घटना का वर्णन शास्त्री जी ने इस प्रकार किया है—'अन्धेरा हो चला था। मुझे घर जाना था, और पास में घर जाने के लिए पैसे नहीं थे। अतः मैंने तैर कर ही घर पहुंचने का निश्चय किया और गंगा में कूद पड़ा। सभी लोग आश्चर्य-चकित हो गए, नौका पर

सवार लोग कहने लगे कि भला इस लड़के को तो देखो जो अकेले ही तैर रहा है।'

सन् १९२१ में महात्मा गांधी के असहयोग-आन्दोलन से प्रभावित होकर लालबहादुर जी ने स्कूल में पढ़ना छोड़ दिया और गान्धी जी के आन्दोलन में सम्मिलित हो गए। सत्रह वर्ष की अल्पायु में ही इन्हें अढ़ाई वर्ष की जेल-यातनाएं भुगतनी पड़ीं।

महात्मा गाँधी जी के आन्दोलन से विद्यार्थियों और अध्यापकों ने सरकारी स्कूलों में पढ़ना-पढ़ाना छोड़ दिया। उनके शिक्षा-ग्रहण के लिए कोई शिक्षा-संस्था नहीं थी। इसी बीच महात्मा जी ने वाराणसी में काशी विद्यापीठ की स्थापना की। इस विद्यापीठ के कर्णधार पूर्णतः देशभक्त थे। फलस्वरूप देशभक्ति से परिपूर्ण हृदय वाले नवयुवकों को यहां न केवल शिक्षा-प्राप्ति का अवसर मिलता था, अपितु वे राष्ट्रीय भावना भी ग्रहण करते थे। उन दिनों इस संस्था के अध्यक्ष भारतरत्न डा० भगवान्दास थे। आचार्य नरेन्द्रदेव और डा० सम्पूर्णानन्द जैसे उच्चकोटि के विद्वान् वहां के गुरु थे। जेल से छूटने के पश्चात् लालबहादुर जी डा० भगवान दास जी के सम्पर्क में आये और शिक्षा-प्राप्ति के लिए इसी संस्था में प्रविष्ट हो गए। इन्होंने चार वर्ष तक यहाँ संस्कृत भाषा और दर्शनों का अध्ययन किया। अध्ययनकाल में ही इन्हें गाँधी जी के विचार सुनने और उन पर मनन करने का अवसर मिला। गान्धी जी के विचारों से ये इतने प्रभावित हुए कि इन्होंने यहीं देश-सेवा का व्रत ले लिया। १९२५ में इन्होंने प्रथम श्रेणी में शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके सम्मानित उपाधि प्राप्त की।

## गृहस्थाश्रम

काशी विद्यापीठ से शास्त्री की उपाधि प्राप्त करने के उपरान्त २३ वर्ष की आयु में लालबहादुर जी का विवाह मिर्जापुर के मुन्शी गणेश प्रसाद जी की सुपुत्री सुशीला, धर्मपरायणा कन्या ललितादेवी

के साथ हुआ। यहां विवाह-संस्कार के समय इनकी एक घटना का उल्लेख कर देना भी उपयुक्त होगा। विवाह का दिन था। निर्धन, परन्तु सिद्धांत-निष्ठ लालबहादुर विवाह-मण्डप में बैठे थे। उधर साधन-सम्पन्न श्वसुर महोदय दहेज में ढेर सारी चीजें देने की जिद्द कर रहे थे, पर गान्धी जी का अनुयायी वर एक चरखे और कुछ गज़ खद्दर से अधिक कुछ भी लेने से इन्कार कर रहा था। जब श्वसुर महोदय ने अधिक दबाव डाला, तो गान्धीवादी लाल बहादुर जी को अन्तिम उपाय के रूप में सत्याग्रह की चेतावनी देकर अपने सिद्धांत की रक्षा करनी पड़ी थी।

इन्होंने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया, गृहस्थाश्रम में भी दरिद्रनारायण की कृपा इन पर निरन्तर रही। आय का कोई साधन नहीं, और देश-सेवा का व्रत—जिसमें जेल जाने का आए दिन का चक्कर। गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी ये एक त्यागी-संन्यासी का जीवन व्यतीत करते थे। देश की सेवा के लिए इन्होंने गरीबी का विषपान हंसते-हंसते बिना कोई कड़वाहट मन में लाए किया। स्वाधीनता-संग्राम के दिनों में शास्त्री जी ब्रिटिश-सरकार के विरुद्ध संग्राम में जूझते रहते और प्रायः जेल जाते रहते। इस बीच इनकी पत्नी श्रीमती ललिता देवी जैसे-तैसे घर का खर्चा चलातीं। एक बार जेल-जीवन के दौरान ही ऐसा अवसर आया कि उनकी एक वर्षीय पुत्री मंजु मोतीझारे का शिकार होकर मर गई, क्योंकि डाक्टर से दवा लाने के लिए इनकी पत्नी के पास पैसे नहीं थे।

शास्त्री जी संयुक्त परिवार के समर्थक थे। अपने परिवार के सदस्यों से इन्हें गहरा और सच्चा स्नेह था। इसलिए इनके परिवार के सदस्यों की संख्या अधिक है।

शास्त्री जी ने गृहस्थाश्रम में सदा सरलता और सात्विकता का जीवन बिताया। कभी प्रदर्शन या दिखावा और बाह्याडम्बर नहीं

किया। भारतीय संस्कृति की प्राचीन परम्परा का सदा पालन करते रहे।

उत्तर प्रदेश में जब ये मन्त्री थे, तब गर्मी के मौसम में पी० डब्ल्यू० डी० के अधिकारी इनके बंगले पर कूलर फिट करने के लिए आए। रात को आफिस से आने पर जब इन्होंने पूछा कि यह क्या हो रहा है तब यह जानकर कि कूलर लग रहा है, ये बोले कि 'आदत बिगड़ जाएगी' और पी० डब्ल्यू० डी० वालों को कूलर लगाने से रोक दिया।

शास्त्री जी जब उत्तर प्रदेश के गृहमन्त्री थे, उनकी बड़ी लड़की कुसुम के विवाह के अवसर पर बराती भोजन करने बैठे तो सादा, निरामिष भोजन देखकर कुछ बारातियों ने कहा कि यह क्या ? यह क्या क़ायस्थों की बारात है, जहां न मांस है न मदिरा। शास्त्री जी बोले—'आप इस निरामिष भोजन को कृपा कर ग्रहण करें। मैं शाकाहारी हूं, न मांस-मदिरा खाता हूं और न औरों को खिलाता हूं।' एक बाराती ने कहा—क्या हम ब्राह्मणों की बारात में आये हैं ? इस पर शास्त्री जी निवेदन के स्वर में बोले—आप जैसा भी समझें मेरे संस्कार ऐसे ही हैं।'

इनकी पत्नी श्रीमती ललिता देवी जी पतिव्रता साध्वी धर्मपरायणा महिला हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृति की गहरी छाप इन पर पड़ी हुई है। इनके घर में आने-जाने वालों का तांता लगा रहता है। इनकी पत्नी शास्त्री जी का, परिवार और अतिथियों का—सबका भोजन स्वयं अपने हाथ से तैयार करती हैं। घर में सदा सादा भोजन ही सबको परोसा जाता है। भोजन में ठाठ-बाट और प्रदर्शन का सर्वथा ही अभाव रहता है। वह पीतल और कलई के बरतन तथा वही सात्विक निरामिष भोजन। शास्त्री जी के प्रधान मन्त्री बन जाने पर दिल्ली की महिलाओं का एक शिष्ट मण्डल उनसे मिला और प्रार्थना की कि—आप श्रीमती ललिता देवी जी

को सार्वजनिक सेवा-कार्यों के लिए हमें दे दीजिए। शास्त्री जी नें मुस्कराकर उत्तर दिया कि ललिता जी का बहुत-सा समय हमारे और अतिथियों के लिए भोजन बनानें को रसोईघर में तथा शेष देवघर में ही व्यतीत होता है। यदि ये आपके साथ रहने लगेंगी तो हम सब भूखे ही मर जायेंगे। यह था शास्त्री जी का गृहस्थ धर्म !

## राजनीति की शिक्षा

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय भी यह जानते थे कि निष्ठा-वान् कार्यकर्त्ताओं के बिना राष्ट्र कभी उन्नत नहीं हो सकता। इसी दृष्टि से आपने १९२५ में 'लोक सेवक मण्डल' (सर्वेण्ट्स आफ दी पीपुल सोसाइटी) की स्थापना की। शास्त्री जी १९२६ में इस संस्था के आजीवन-सदस्य बन गए। सदस्य बनते समय आपने यह संकल्प किया था कि सारी जिन्दगी वे सादगी व गरीबी से देश की सेवा करते रहेंगे। यही संकल्प आपके जीवन-पर्यन्त हर कार्य में परिणत होता देखा गया है। इस संस्था के सदस्य बनकर आप इलाहाबाद आ गए। इलाहाबाद को ही आपने अपना कार्यक्षेत्र चुना। यहां इन्हें नेहरू जी का सान्निध्य भी प्राप्त था।

शास्त्री जी ने अनेक बार यह स्वीकार किया है कि लाला जी की इस संस्था से ही उन्होंने राजनैतिक शिक्षा प्राप्त की। शास्त्री जी लालाजी को अपना राजनीति का गुरु मानते थे। महात्मा गान्धी जी के आन्दोलन का प्रभाव भी इन पर पड़ा था, जिसके फलस्वरूप स्कूल की शिक्षा छोड़कर ये सत्याग्रह-आन्दोलन में कूद पड़े थे।

## सार्वजनिक सेवा

शास्त्री जी १९२६ से इलाहाबाद में ही स्थायी रूप से रहने लगे। इनकी देशभक्ति की भावना, कार्य करने की क्षमता, चारित्रिक विशेषताएं, सादगी, सरलता और लोकप्रियता जनता के सामने

शीघ्र ही प्रकट हो गईं। कांग्रेसी कार्यकर्त्ता और नेता इनसे बहुत अधिक प्रभावित थे। अतः १९२६ से निरन्तर सात वर्ष तक इलाहाबाद म्यूनिसिपल बोर्ड के सदस्य रहे। लगभग चार वर्ष तक आप इलाहाबाद इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट के सदस्य भी रहे। इसी बीच सत्याग्रह में भी आपने २॥ वर्ष की कैद काटी। आप की योग्यता, सेवा और कार्यकुशलता का प्रभाव अधिकाधिक चमकता गया। फलस्वरूप जनता ने इनके ऊपर अधिक उत्तरदायित्व डालना चाहा और इन्हें इलाहाबाद जिला कांग्रेस कमेटी का प्रधान मन्त्री बना दिया। तत्पश्चात् सन् १९३० से १९३६ तक आप इलाहाबाद जिला काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे। आप का कार्यक्षेत्र और अधिक बढ़ा। आप दो बार उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मन्त्री निर्वाचित हुए। सन् १९३७ में वे पहली बार उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गये।

अब तो शास्त्री जी का जीवन राष्ट्र का जीवन बन चुका था। १९४१ में आपने एक वर्ष तक जेल भोगी। राष्ट्र की पुकार पर वे कहीं भी और कभी भी प्रत्येक प्रकार को सेवा करने को प्रस्तुत रहते थे। असहयोग आन्दोलन, नमक-कानून अथवा भारत छोड़ो आन्दोलन, सब में शास्त्री जी जेल जाने के लिए एक स्वयं-सेवक की भाँति तैयार रहते थे। देश सेवा करते हुए शास्त्री जी ने आठ बार जेल की यात्रा की और सब मिलाकर लगभग ९ वर्ष तक जेल की कठोर यातनाएं सहीं। जेल-यातनाएं ही शास्त्री जी के कारावास-काल में उनकी अग्नि-परीक्षक हों, ऐसा नहीं, उन दिनों परिवार-पालन भी इनके लिए एक विकट समस्या थी, किन्तु यह वीर सेनानी कभी अपने कर्त्तव्य-पथ से विचलित नहीं हुआ और देश सेवा में अधिकाधिक मनोयोग से लगा रहा। देश सेवा की भावना इनकी रग-रग में व्याप्त हो गई और जीवन के अन्तिम श्वास तक ये उसी में लगे रहे।

शास्त्री जी ने अन्तिम जेल यात्रा 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के अन्तर्गत सन् १९४२ में की और तीन वर्ष का कारावास भोगकर सन् १९४५ में—जब देश के बड़े-बड़े सभी नेता जेल से छोड़े गए—जेल से मुक्त हुए।

सन् १९४६ में देशभर में आम चुनाव हुए। देश में अन्तरिम सरकार बनी। शास्त्री जी उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और मुख्य मन्त्री पं० गोविन्द बल्लभ पन्त के संसदीय सचिव भी नियुक्त हुए। १९४७ से १९५१ तक आप उत्तर प्रदेश के गृह एवं यातायात मन्त्री रहे।

सोना अग्नि में तप-तप कर कुन्दन बन गया। शास्त्री जी अब केवल उत्तार प्रदेश के न रह कर सारे भारत के बन गए। इन की योग्यता और कार्यकुशलता से प्रभावित होकर १९५१ में इन्हें राष्ट्रीय कांग्रेस का महामन्त्री बना दिया गया। इसलिए इन्हें उत्तर प्रदेश का मन्त्री पद छोड़ देना पड़ा। सन् १९५२ के आम चुनाव में वे राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। पं० नेहरु ने इन्हें मन्त्रीमण्डल में लेना अत्यन्त आवश्यक समझा और इन्हें केन्द्र में परिवहन तथा रेल मन्त्री नियुक्त कर दिया। दुर्भाग्य से इन के रेल मन्त्री के कार्यालय में नवम्बर १९५६ में अरियातूर में एक भयंकर रेलवे-दुर्घटना हो गई, जिसमें १५० से अधिक व्यक्तियों की प्राण-हानि हुई और कई सौ घायल हुए। इस महान दुर्घटना का उत्तर-दायित्व अपने ऊपर लेते हुए शास्त्री जी ने घोषणा की कि "रेलों की व्यवस्था में कहीं ऐसी भारी त्रुटि प्रविष्ट हो गई है, जिसके कारण दुर्घटनाएं होती हैं।.........इस दुर्घटना का सारा दायित्व मुझ पर है और मुझे अपने पद से हट जाना चाहिए।" घोषणा के साथ-साथ ही परम त्यागी भरत ने राजगद्दी को लात मारी और मन्त्रिपद से त्यागपत्र दे दिया। उनके इस निर्णय की पूरे भारत व संसद में मुक्तकण्ठ से सराहना की गई। श्री नेहरू ने इस त्यागपत्र के सम्बन्ध

में तब संसद में कहा था कि यह त्यागपत्र स्वीकार इसलिए नहीं किया गया है कि शास्त्री जी किसी रूप में दोषी हैं, अपितु इसलिए स्वीकार कर लिया गया है कि उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति अपने दायित्व को परखें और समझें तथा शिक्षा ग्रहण करें।

शास्त्री जी क्या थे और कितने प्रशस्य हृदय के स्वामी थे, यह उनके ही शब्दों से जाना जा सकता हैं। २७ नवम्बर १९५६ को संसद में अपना त्यागपत्र प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा था कि—कद में कुछ छोटा होने के कारण और बोलने में नम्र होने के कारण सम्भवतः लोग यह सोचने व समझने लगे हैं कि मैं उनके प्रति उदासीन हूं। शरीर से चाहे मैं मजबूत नहीं हूं, पर हृदय से मैं इतना कमजोर नहीं।

सन् १९५७ में देश में पुनः आम चुनाव हुए, और इस बार आप इलाहाबाद से लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। आपको पुनः केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में ले लिया गया, और संचार एवं परिवहन विभाग का मन्त्री बना दिया गया। इसके पश्चात् १९५८ में मन्त्री मण्डल में कुछ फेर-बदल हुआ तो आपको वाणिज्य एवं उद्योगमन्त्री पद पर नियुक्त कर दिया।

इस विभाग को संभालने के बाद आपने एक योजना बनाई। इस योजना द्वारा उद्योग व खेती को परस्पर मिलाया जा सकता था। उनका विचार था कि इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में बेकारी की समस्या सुलझ सकती है और ग्रामों के उद्योग लघु-ग्रह-उद्योगों का रूप ले सकते हैं।

१९६१ में देश के सुयोग्य गृहमन्त्री पं० गोविन्द बल्लभ पन्त की मृत्यु के पश्चात् आपको ही सब से अधिक उपयुक्त समझ कर गृहमन्त्री बना दिया गया।

इस पद को संभालते ही आपने असम में भाषा-विवाद की विषम समस्या का समाधान किया और आसामी व बंगला के बीच दृढ़ सम्बन्धों की स्थापना की।

१९६२ के आम चुनाव में आप इलाहाबाद के ही क्षेत्र से लोकसभा के लिये निर्वाचित हुए और फिर गृह-मन्त्री के पद पर ही रह कर देश सेवा करते रहे। सन् १९६३ में कांग्रेस के प्रधान श्री कामराज ने एक योजना बनाई जिस के अधीन श्री शास्त्री जी ने अपना त्यागपत्र सब से पहले उनके सामने रख दिया। इन के बाद अन्य भी अनेक मन्त्रियों ने अपने त्यागपत्र दे दिये।

शास्त्री जी के हृदय में तो देश-सेवा की अग्नि धधक रही थी। उन्हें तो देश-सेवा करनी है, फिर चाहे वह किसी भी प्रकार क्यों न हो। मन्त्री पद छोड़कर उन्होंने कांग्रेस का संगठनात्मक कार्य करना उचित समझा और पूरे मनोयोग के साथ उसी में लग गए। धन का लोभ तो उन्हें था ही नहीं, उन्हें तो देश-सेवा का लोभ सर्वोपरि था। दुर्भाग्य उन्हीं दिनों देश के प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल-नेहरू का स्वास्थ्य निरन्तर गिरने लगा। देश की समस्या में और विश्व की उलझनों को अकेले सुलझाने में वे अपने को असमर्थ अनुभव करने लगे। अपने सहयोग के लिए उन्होंने सब से उपयुक्त शास्त्री जी को समझा, और विवश होकर उन्होंने शास्त्री जी को पुनः मन्त्रिमण्डल में ले लिया, और इन्हें 'विना विभाग का मन्त्री' बनाया। शास्त्री जी नेहरू जी के निर्देशन में बड़ी योग्यता के साथ कार्य करने लगे।

शास्त्रीजी की बुद्धि बड़ी प्रखर, विचार सुलझे हुए और राजनैतिक चेतना बड़ी जागरूक थी। वे राजनीति के सच्चे अर्थों में महापण्डित थे। गम्भीर-से-गम्भीर समस्या को सुलझाने की इनमें अनुपम योग्यता थी, और ये उसकी गहराई तक पहुंच कर उसे सरलता के साथ सुलझाने में सफल हो जाते थे। चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधान मन्त्री आचार्य चाणक्य का ये वास्तविक स्वरूप थे। विद्या में, बुद्धि में, निश्चय की दृढ़ता में, स्वाभिमान में, त्याग-तपस्या में,सरलता में, सादा जीवन में और कूटनीतिक-राजनीति में, ये चाणक्य से किसी

भी प्रकार कम नहीं थे। यही कारण था कि देश के सामने जब भी कोई विषम परिस्थिति आई तो उस पर काबू पाने के लिए देश ने आप ही को भेजा और आप उस पर विजयी हुए। असम में भाषा-विवाद उत्पन्न हुआ तो नेहरू जी ने उसे सुलझाने के लिए शास्त्रीजी से प्रार्थना की और इन्हें वहां भेजा। भारत और नेपाल के पारस्परिक सम्बन्धों में गलत धारणा फैली तो नेहरू जी ने शास्त्रीजी को ही उसका हल करने और भ्रान्ति को मिटा कर सही रूप उपस्थित करने के लिए नेपाल भेजा। शास्त्रीजी ने परस्पर दृढ़ सम्बन्ध स्थापित करने में कोई कमी न छोड़ी। काश्मीर में हज़रतबल मस्जिद से मुहम्मद साहब के पवित्र बाल की चोरी हो गई। परिणाम स्वरूप वहां दिन-रात उपद्रव होने लगे। लूटमार, आगजनी, उपद्रव, हड़-ताल और हत्या कांड के रौरव दृश्य उपस्थित हुए। पूरे देश में खलबली मच गई और देश साम्प्रदायिक उपद्रवों के ज्वालामुखी पर आ खड़ा हुआ। देश के नेताओं को इन सब से बड़ा दुःख हुआ, उन्होंने सोचा कि इस का किस प्रकार अन्त हो और कौन ऐसा योग्य नेता है जिसमें इतनी शक्ति है कि वह उपद्रवियों को शान्त कर सके। सब की दृष्टि इस महान कार्य के लिए सबसे छोटे शरीर, किन्तु सबसे बड़ी बुद्धि वाले शास्त्री जी पर ही पड़ी और उन्हें इस दंगे को शान्त करने के लिये कश्मीर भेजा। शास्त्री जी ने अपनी विलक्षण बुद्धि का वह चमत्कार दिखाया कि फौरन ही कश्मीर में शान्ति स्थापित हुई और हजरत बल के पवित्र बाल की चोरी को सब एकदम भूल गये। बड़ी बुद्धिमता से इस स्थिति को संभाल कर शास्त्री जी ने कश्मीर और देश को बड़ी गम्भीर विपत्ति से बचा लिया। इन सब गम्भीर स्थितियों को सम्भालने और समस्याओं को सुलझाने का श्रेय लाल बहादुर शास्त्री जी को ही है।

## सरलता और विनयशीलता

शास्त्री जी के जीवन से सदा यही व्यक्त होता रहा कि उन का

चरम लक्ष्य 'सादा जीवन और उच्च विचार' है। इसी को वे अपने जीवन में ढालते रहे। व्यक्ति के गुणों का प्रकाश जितना उसकी मृत्यु के उपरान्त होता है उतना उसके जीवन काल में नहीं हुआ करता। उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि प्रकट करते हुए भारत के स्वराष्ट्र मन्त्री श्री गुलजारी लाल नन्दा ने कहा था कि—शास्त्रीजी सरलता और नम्रता की मूर्ति थे। जिन्होंने शास्त्री जी को एक बार भी कुछ समीप से देखा है, वे उनकी सरलता और विनय-शीलता को भली प्रकार जानते हैं। वास्तव में महापुरुष वही है, जो अपने को कुछ न समझे। शास्त्री जी में गर्व नाम की कोई चीज न थी। ऐसे महापुरुष धरती पर कम हुआ करते हैं।

शास्त्री जी से भेंट करने वाले उस समय चकित होते थे, जब वह अपने कमरे में आए व्यक्ति का उठ कर स्वागत करते, और बात समाप्त होने पर दरवाजे तक उन्हें छोड़ने जाते। उस व्यक्ति से वह हाथ मिलाते, हाथ जोड़कर 'नमस्ते' करते, थैंक्स वा शुक्रिया के जवाब में 'नो मेंशन प्लीज' कहते। एक राजनीतिज्ञ से, फिर सत्ताधारी से इस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

बात अधिक पुरानी नहीं, १९६५ की ही है। प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री प्रयाग गये हुए थे। श्री मधुकर भट्ट की बालकोपयोगी पुस्तक "मां के दो लाल" इसी वर्ष प्रकाशित हुई थी। पुस्तक में मां के दो लाल—"जवाहर लाल और लाल बहादुर" के जीवन के सम्बन्ध में सरल ढंग से बालकों को ज्ञान कराया गया है। पुस्तक भेंट की। शास्त्री जी ने उसे उलट-पलट कर देखा और धन्यवाद देते हुए उसने कहा— "मैं तो निहायत छोटा आदमी हूं। जवाहर लाल जी बहुत बड़े व्यक्तित्व के आदमी थे। उनके साथ मेरा वर्णन हल्का पड़ता है। बालकों की पुस्तक में बड़े-बड़े महापुरुषों पर ही आप लिखें, तो उससे देश की भावी सन्तान का कल्याण अवश्य होगा।"

'जैसा देश वैसा वेश की लोकोक्ति से अनुसार प्रायः सभी लोग आचरण करते हैं। पं० नेहरू भी जब विदेशों में जाया करते थे तो उनके अनेक चित्र ऐसे देखे गये हैं जिनमें वे विदेशी वेश-भूषा में शोभित हो रहें हैं। किन्तु शास्त्री जी सदा अपनी भारतीय परम्परा पर ही अडिग रहे और उन्होंने धोती-कुर्ता ही पहिना। शास्त्री जी प्रधान मन्त्रियों की बैठक में गये, तटस्थ देशों के सम्मेलन में सम्मिलित हुए, बर्मा के प्रधान मंत्री से मिले, पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूबखां से बातचीत करने के लिए ताशकन्द गये—जहां भी वे गये, उन्होंने अपनी भारतीय संस्कृति और परम्परा को ही अक्षुण्ण रखा।

---

## धोती ही पहनूंगा

प्रधानमंत्री श्री शास्त्री का निश्चय है कि वह ताशकन्द में राष्ट्रपति अय्यूब के साथ जब वार्ता करेंगे तो धोती ही पहिने होंगे।

यह निश्चय श्री शास्त्री ने कल संसद सदस्य श्री बाजपेयी जी के समक्ष एक वार्ता में व्यक्त किया। श्री बाजपेयीजी उन्हें पैंट या चूड़ीदार पाजामे का सुझाव दिया था।

श्री बाजपेयी ने बताया की सम्भवतः प्रधान मन्त्री के इस निश्चय का कारण राष्ट्रपति अय्यूब का वह व्यंग्य वाक्य है, कि धोती-वाला क्या लड़ेगा।

---

अपने गांव मिर्जापुर चली गईं। उस अनाथ बालक का भरण-पोषण उसकी बुवा और नाना ने किया। उनके बचपन के दस वर्ष मिर्जापुर में ही बीते। उसके बाद उनकी मौसी उन्हें वाराणसी ले आयीं और फिर रामद्वारा में उनकी पढ़ाई हुई। बचपन में इनको

लोग ननकू कहते थे। उस समय कोई नहीं जानता था कि एक दिन यही बालक देश का भाग्यविधाता बन जाएगा।

१९६२ में शास्त्री जी भारत के गृहमन्त्री थे। उस वर्ष जुलाई मास में संस्कृत प्रचारक मण्डल के तत्त्वावधान में दिल्ली के आर्य समाज मन्दिर दीवानहाल में संस्कृत सम्मेलन आयोजित किया गया था। उसमें श्री शास्त्री जी को भी निमन्त्रित किया गया। संस्कृत की सभाओं में जनता बहुत ही कम संख्या में सम्मिलित हुआ करती है, इस सभा में भी उपस्थिति का यही हाल था। शास्त्री जी अपने ठीक समय पर आर्यसमाज मन्दिर-सभा स्थल-पर उपस्थित हो गए। उस समय तक मन्दिर में मण्डल के अध्यक्ष, मन्त्री, एक अन्य कार्यकर्त्ता तथा आर्यसमाज के कार्यालयाध्यक्ष प्रेमचन्द्र शास्त्री ( मैं ) ही उपस्थित थे। श्री शास्त्री जी के आते ही मैंने बरामदे में उनका स्वागत किया। मन्दिर में केवल दो-तीन ही व्यक्तियों को देखकर उन्होंने पूछा कि क्या मैं समय से बहुत पहले ही आ गया हूं। मैंने कहा कि आप तो ठीक समय पर आए हैं, श्रोता ही नहीं आए। शास्त्री जी मन्दिर में बैठकर उन दो-तीन विद्वानों से ही वार्तालाप में संलग्न हो गए।

जनवरी १९५५ की घटना है। मदुरा रेलवे स्टेशन के रिजर्व विश्रामालय में गाँधी टोपी पहने, एक दुबले-पतले छोटे-से सज्जन इधर-उधर चहलकदमी कर रहे थे। तभी जिला मजिस्ट्रेट का सन्देश लेकर एक अफसर आया और उनसे अनुरोध किया कि वे रेल-मन्त्री को जिला-मजिस्ट्रेट का यह संदेश बतादें। गांधी टोपी धारी सज्जन ने आग्रह स्वीकार कर लिया और कहा कि रेलमन्त्री जो कुछ कहेंगे वह मैं वापिस आकर बता दूंगा। तभी उस अफसर ने पास खड़े एक संवाददाता से पूछा कि रेलमन्त्री किस कमरे में ठहरे हैं ? संवाददाता का उत्तर था 'महाशय ! आप शास्त्री जी से ही तो बात कर रहे थे।' स्वभाव की यह सौम्यता और सरलता

शास्त्रीजी की अपनी विशेषता थी, जिसके कारण वे अपने मित्रों और दूसरों में समान रूप से लोकप्रिय रहे थे। शत्रु तो उनका कोई था ही नहीं। वे अजातशत्रु थे।

कुछ वर्ष पहले की बात है। उनके यहां बिजली और पानी अधिक खर्च होता था तथा उनका भारी बिल सरकार को चुकाना पड़ता था। इस सम्बन्ध में उनकी कटु आलोचना भी हुई। किन्तु इसके उत्तर में उन्होंने बहुत ही मर्मस्पर्शी और महत्त्वपूर्ण बात कही थी। श्री शास्त्री जी ने कहा था कि मेरे यहां आने-जाने वालों का तांता लगा रहता है। कोठी में स्थान कम होने के कारण बाहर तम्बू लगवाना पड़ा और रोशनी का प्रबन्ध करना पड़ा। साथ ही हमारे नौकर-चाकर भी जी खोलकर बिजली फूंकते हैं। मेरा एक कर्मचारी आया और कहने लगा कि सर्दी कड़ाके की पड़ रही है, आप कहें तो हीटर लगा लिया करूं। मैंने 'हां' कर दी। बाद में पता चला कि वे हीटर पर खाना भी पका लेते हैं। अब उन्हें मना कैसे करता! यह थी शास्त्री जी की सरलता और उदारता!

एक बार श्री लालबहादुर शास्त्री इलाहाबाद के साधारण से समारोह में गये। चाय के डिब्बाबन्दी कारखाने के मजदूरों ने यह समारोह किया था। लम्बी-चौड़ी छत पर दरी बिछा कर सामने कुछ कुर्सियां रख दी थीं। वे कुर्सियां कुछ विशिष्ट लोगों के लिए थीं। जब शास्त्री जी पहुंचे तो कुछ लोगों ने उन्हें कुर्सी पर बैठने के लिए निवेदन किया। लेकिन शास्त्री जी ने कहा—'मेरा सही स्थान तो जनता के बीच में है। कभी-कभी अलग बैठना तो अवश्य पड़ता है, पर मुझे रुचता नहीं। यह कहकर शास्त्री जी जनता के बीच दरी पर ही जा बैठे।

१७ दिसम्बर ६५ को, प्रधान मन्त्री होने के बाद, शास्त्री जी पहली बार और अन्तिम बार मिर्जापुर गये। उस दिन वे अपने

मामा लल्लन बाबू के घर पर भी गए और अपनी ससुराल भी। मामा के यहां उन्होंने नाश्ता किया और ससुराल में भोजन। ननिहाल में बहुत वर्षों के बाद दीवारों पर चूने से सफेदी की गई, इसलिए कि प्रधान मन्त्री आ रहे थे। कहा जाता है कि वे जब अपने मामा के यहां गये तो सरकारी अफसरशाही को नहीं ले गये। यह उनकी सरलता का प्रमाण है। जिस कमरे में लालबहादुर जी ने १७ दिसम्बर को भोजन किया था, उसमें न तो कोई अलमारी और न कोई फर्नीचर ही था। केवल एक मूंज की रस्सी की खटिया, मामूली-सी मेज और कुर्सियाँ तथा एक तस्वीर थी, जिसमें श्री नेहरूजी लालबहादुर के कन्धे पर हाथ रख कर खड़े हैं। बगल वाले कमरे की जमीन कच्ची मिट्टी की है। पूरे मकान में कहीं भी नया फरनीचर नहीं है। उनके छोटे साले ननकूलाल अभी भी किसान हैं।

## त्यागशीलता

हमारे प्रधान मन्त्री शास्त्री जी वेदों की आज्ञा—"तेन त्यक्तेन भुंजीथाः" के अनुसार इस संसार में रहते हुए सांसारिक साधनों का त्यागपूर्वक उपभोग करते थे. उनमें लिप्त नहीं होते थे। जल में कमल के पत्ते की जो स्थिति होती है, वही स्थिति शास्त्री जी की इस संसार में थी। वे त्यागी, तपस्वी और निर्मोही थे।

आज विश्व के प्रत्येक मानव की प्रायः यही भावना रहती है कि वह धन-धान्य से सम्पन्न और वैभवशाली बन जाये। परिग्रह और धन-संग्रह की भावना उसके दिल में, रोम-रोम में व्याप्त रहती है। और जिसके पास धन-ऐश्वर्य की अधिकता होती है, उसी का सम्मान एवं आदर विशेष रूप से किया जाता है। इसी को देखकर नीति शास्त्र के आचार्यों ने अपना सिद्धान्त निर्धारित कर लिया है—

**यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः ॥**
**यस्यार्थाः स पुमाल्लोके यस्यार्थाः स च पण्डितः ॥**

जिसके पास धन होता है उसके ही मित्र बनते हैं, जिसके पास धन होता है बन्धु-बान्धव उस से ही अपना नाता रखते हैं, जिसके पास धन होता है वही मनुष्य मनुष्य समझा जाता है, और जिसके पास धन होता है वही समझदार, बुद्धिमान, और विद्वान् माना जाता है। आज विश्व भर में धन की बड़ी महिमा है।

किन्तु भारतीय संस्कृति इसके विपरीत है। ऋषियों ने योग के साधन रूप यमों में पाँचवा स्थान अपरिग्रह को दिया है। अपरिग्रह, त्याग अर्थात् अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तु का संग्रह न करना। इससे मन शान्त रहता है। और अपरिग्रह की प्रवृत्ति ही हमारी मानसिक अशान्ति का कारण है। भविष्य को हम अपना ही मान बैठे हैं। अपनी वर्तमान आवश्यकता का हमें ज्ञान है, फिर भी हम संग्रह करते हैं।

**जीर्यन्ते जीर्यतः केशाः दन्ताः जीर्यन्ति जीर्यतः।**
**चक्षुः श्रोत्रे च जीर्यंते तृष्णैका तरुणायते ॥**

मनुष्य जैसे-जैसे जरावस्था की ओर बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे ही उसके केश, दांत, आँख और कान आदि सब इन्द्रियां तो जीर्ण होती जाती हैं किन्तु उसकी तृष्णा बढ़ती जाती है।

परिग्रह करते-करते यदि हम अपनी कामनाओं की तृप्ति करना चाहें, तो यह कभी नहीं हो सकता। अग्नि में घी की आहुति दी जाय तो अग्नि शान्त होने के बजाय अधिक प्रदीप्त होगी, इसी प्रकार कामनाएं भी घटने के स्थान पर बढ़ती ही जायेंगी।

इसीलिए हमारे पूर्वज ऋषि-मुनि अपरिग्रह का उपदेश जनता को दिया करते थे। नियम और विधान समय तथा परिस्थिति के

अनुसार परिवर्तनशील होते हैं। आज का समय उस समय से बहुत बदल गया है जब ऋषियों ने अपरिग्रह का उपदेश दिया था।

उत्तर में हिन्दु कुश पर्वत तक, पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक, दक्षिण में नल्लौर तक और पश्चिम में अरब सागर तक विस्तृत विशाल साम्राज्य—मौर्य साम्राज्य—का संचालन सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य के सहयोग से उनके प्रधानमन्त्री आचार्य चाणक्य ने किया। घर के अन्दर नन्द के साथियों का असन्तोष, बाहर विश्व-विजेता सिकन्दर की प्रशिक्षित सेनाओं का आतंक, शत्रुओं का कोई अन्त नहीं था। ऐसे संकटों से घिरे हुए साम्राज्य को २४ वर्षों तक निर्विघ्न चलाना उसके लिए राज्य नियमों के पालन की सुव्यवस्था करना, और इसी बीच में आक्रमणकारी यूनानियों को पीछे धकेल कर हीन सन्धि करने के लिए बाध्य करना कोई साधारण बात न थी। नये राज्यों के सम्मुख जो कठिनाइयाँ आया करती हैं, वे सभी आचार्य के सामने थीं। उनके समय में देश न केवल धन-धान्य से समृद्ध रहा, वह सुरक्षित भी रहा। उसमें इतनी शक्ति थी कि उसकी सेनाएं बढ़ती हुई विदेशी सेनाओं को परास्त करके पीछे धकेल दें।

इतने प्रतापी और महान् थे मौर्य साम्राज्य के प्रधानमन्त्री आचार्य चाणक्य! क्या वे सांसारिक विभूतियाँ उपलब्ध करने में असमर्थ थे? नहीं। उनकी प्रवृत्ति परिग्रह की नहीं थी, वे धन-संग्रह में विश्वास नहीं रखते थे। अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए कम-से-कम सामान वे अपने पास रखते थे।

भारत के प्रतापी सम्राट् चन्द्रगुप्त का सन्देश लेकर जब कंचुकी प्रधान मन्त्री आचार्य चाणक्य के पास पहुंचता है, तब उनके निवास-स्थान की विभूति को देख कर वह कह उठता है—

अहो राजाधिराज-मन्त्रिणो विभूतिः! तथाहि—

उपलशकलमेतद् भेदकं गोमयानां
वटुभिरुपहृतानां बर्हिषां स्तूपमेतत् ।
शरणमपि समिद्भिः शुष्यमाणाभिराभिः
विनमितपटलान्तं दृश्यते जीर्णकुड्यम् ॥

राजाधिराज के मन्त्री की यह विभूति !

एक ओर गोबर के उपलों को तोड़ने के लिए पत्थर का टुकड़ा रखा है, और दूसरी ओर शिष्यों द्वारा लाई हुई कुशाओं का ढेर पड़ा है। पुरानी दीवार की छत पर हवन की समिधाएं (लकड़ियां) सुखाई गई हैं, जिनमें छत का सिरा झुक गया है।

आचार्य चाणक्य तत्कालीन भारत की राजधानी पाटलिपुत्र में रहते हुए भी तपस्वी मुनि की तरह रहा करते थे। इसलिए जब सम्राट् चन्द्रगुप्त उनसे मिलने आता था, तब उनके पाँव छूता था।

हमारे प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री भी परिग्रह की प्रवृत्ति—धन संग्रह की भावना—को प्राथमिकता नहीं देते थे। अपनी वर्त्तमान आवश्यकता की पूर्ति के लिए जो सामान और धन आवश्यक है उससे अधिक भविष्य के लिए, जुटा कर रखने में उनका विश्वास नहीं था। वे भारतीय संस्कृति के प्रतीक और प्राचीन ऋषि-मुनियों के आदेशों के पोषक और पालक थे। अपनी सन्तान के लिए भी जुटा कर रखना वे अपना धर्म नहीं मानते थे। उनका विश्वास था—

पूत सपूत तो क्यों धन संचय ?
पूत कपूत तो क्यों धन संचय ?

हमारे प्रधानमन्त्री कितने अपरिग्रहशील थे, कितते निर्मोही थे और कितने मितव्ययी थे, और कितने त्यागी थे, इसका चित्रांकन करने वाली घटनाओं की कमी नहीं है।

वे धन, पद, प्रतिष्ठा सभी मामलों में पूर्ण निष्काम थे। इसका प्रमाणं अनेक घटनाओं से मिल चुका है। उनके त्याग की सब से बड़ी घटना यह है कि १९५६ में महबूब नगर (हैदराबाद) में हुई। रेल-दुर्घटना को अपनी नैतिक जिम्मेदारी मानकर इन्होंने उस समय केन्द्रीय रेलवे मन्त्रि पद से त्यागपत्र दे दिया जिसे सम्भवत: किसी भी देश के इतिहास में अनुपम त्यागपूर्ण घटना माना जा सकता है।

बताया जाता है कि कामराज-योजना के पश्चात् जब वे केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल से हटे तो नेहरू जी को इस बात की चिन्ता हुई कि लालबहादुर जी का खर्चा किस तरह चलेगा, क्योंकि उन्होंने धन-संग्रह सर्वथा नहीं किया है। वस्तुतः यह एक तथ्य था।

सादगी—१९४८ में शास्त्री जी उत्तर प्रदेश के गृहमन्त्री थे। एक दिन पी० डब्ल्यू० डी० वालों ने उनके बंगले के कमरे का हिस्सा खोदकर कूलर फिट करने की व्यवस्था की। बच्चे-बड़े सभी प्रसन्न थे कि अब गर्मी के दिन यहीं बितायेंगे। रात को जब शास्त्री जी आफिस से बंगले लौटे तो पूछा—यह सब क्या है? बताया गया कि कूलर लग रहा है। शास्त्री जी बोले—'नहीं' यह सब कुछ नहीं लगेगा। आवश्यकता पड़ने पर लू-धूप में निकलना ही है, लड़कियां शादी के बाद न जाने किस स्थिति में रहें। हमको इलाहाबाद के कटघरे वाले मकान में रहना है। इससे आदत बिगड़ जायेगी। और फोन करके पी० डब्ल्यू० डी० को आज्ञा दे दी कि इस कोठी में कूलर नहीं लगेगा।

लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित 'लोक सेवक मण्डल' का सदस्य बनते समय शास्त्री जी ने संकल्प किया कि सारी जिन्दगी वे सादगी व गरीबी से देश की सेवा करते रहेंगे। उसी संकल्प का स्मरण इस घटना से होता है।

गरीबी—देश की सेवा के लिए उन्होंने गरीबी का विषपान हंसते-हंसते मन में बिना कोई कड़वाहट लाए किया। स्वाधीनता-

संग्राम के दिनों में वे ब्रिटिश-सरकार के विरुद्ध जूझते रहे और प्राय; जेल जाते रहते। इसी बीच उनकी पत्नी श्रीमति ललिता शास्त्री जैसे-तैसे घर का खर्च चलातीं। एक बार वे जेल-जीवन व्यतीत कर रहे थे कि उनकी एक वर्षीया पुत्री मोतीझारे का शिकार हो गई। डॉक्टर से दवा लाने के लिए उनकी पत्नी के पास पैसे नहीं थे, इस कारण बेचारी पुत्री स्वर्ग सिधार गई।

**पोते की स्लेट**—पन्त जी के देहावसान के पश्चात् शास्त्री जी भारत-सरकार के गृहमन्त्री के पद पर काम कर रहे थे। महीने का अन्तिम सप्ताह था। पोते ने एक नई स्लेट ला देनें की फरमाइश की। बाबा का उत्तर मिला—'दो दिन किसी तरह काम चलाओ। पहली को महीना मिलते ही ला दूंगा।' यह उत्तर एक साधारण क्लर्क का नहीं, एक केन्द्रीय मन्त्री का था, जिसकी आय का साधन केवल मन्त्रिपद का मासिक वेतन था।

**आप से नहीं, रेलवे मन्त्री से**—उस समय वे रेलवे मन्त्री थे। बम्बई में एक सज्जन उनसे मिलने आये और घण्टी बजाई। शास्त्री जी निकल कर बाहर आए और उनका स्वागत किया। आगन्तुक सज्जन शास्त्री जी के चेहरे से परिचित नहीं थे और भारी भरकम चेहरे व उत्तम वस्त्र-विन्यास की कल्पना के विपरीत छोटे-से कद और साधारण वस्त्र वाले व्यक्ति को देख कर वे बोले—'मैं आपसे नहीं, रेलवे मन्त्री-महोदय से मिलना चाहता हूं।'

शास्त्री जी कुछ बोले नहीं और भीतर चले आए। अपने सचिव से कहा—'आगन्तुक सज्जन को भीतर ले आओ।' अब उन्हें रेलवे-मन्त्री के कमरे में ले जाया गया तो कुर्सी पर शास्त्री जी को देखकर वे दंग रह गए और क्षमा मांगी।

**केन्द्रीय मन्त्री के कुर्ते**—श्री शास्त्री जी १९५३-५४ में केन्द्रीय रेलवे-मन्त्री थे। उन्हीं दिनों वे सासाराम में एक मीटिंग में गए।

वे जवाहर-वास्कट पहन कर आए थे। पर यहां का मौसम गरम था, अतः जवाहर-वास्कट उतारना जरूरी हो गया। सूटकेस में केवल चार कुर्ते थे और सभी के कालर फटे थे। जवाहर-वास्कट में तो वे छिप जाते थे। अब क्या किया जाये ? शास्त्री जी के निजी सचिव श्री कैलाश नारायण सक्सेना को एक युक्ति सूझी। शीघ्र ही वे तीनों कुर्तों के कालर ठीक करा लिए। दर्जी ने समझा कि कोई पर-देसी है, पर जब उसने ड्राइवर से पता लगाया तो उसको यह जानकर आश्चर्य हुआ कि ये तो रेलवे-मन्त्री के कुर्ते हैं !

**अब मैं मन्त्री नहीं !**—१९६३ में मन्त्रिमण्डल से हटने के पश्चात् शास्त्री जी इलाहाबाद गये। हवाई जहाज से उतर कर मोटर पर चढ़कर उन्होंने अपने होल्डाल की खोज की। मित्रों ने कहा कि पीछे से आ जायेगा। शास्त्री जी ने कहा—नहीं, मैं अब मन्त्री नहीं हूं कि उसकी दूसरे लोग देखभाल करेंगे। अपना होल्डाल लेकर ही वे डेरे पर रवाना हुए।

**कार किश्तों में**—कहते हैं कि लालबहादुर शास्त्री के पास इतने रुपये नहीं थे कि वे कार खरीद सकें। उन्होंने किश्तों में कार खरीदी। और उसकी किस्तें अभी तक पूरी नहीं हुईं। क्या किसी देश का प्रधान मन्त्री ऐसा है जो अपनी कार किश्तों में खरीदे ?

**अनुचित दबाव**—सुनते हैं कि इनके ज्येष्ठ पुत्र श्री हरिकृष्ण कनाट प्लेस, नई दिल्ली के ले लैंड आफिस में कार्य करते हैं। वहां से उन्हें ५००) मासिक वेतन मिलता है। शास्त्री जी के प्रधानमन्त्री बनते ही कम्पनी ने श्री हरिकृष्ण का वेतन एकदम ८००) रुपये करने को कहा। जब शास्त्री जी को यह मालूम हुआ तो यह कह कर कि यह तो कम्पनी पर अनुचित दबाव है और अन्याय है, अपने

पुत्र का वेतन ५००) ही करवा दिया। यह थी त्यागमय भारतीय संस्कृति और ईमादारी तथा सच्चाई जो शास्त्री जी के दिल में विद्यमान थी।

**ईमानदारी और सच्चाई**—मिर्जापुर के एक व्यवसायी एक बार शास्त्री जी के एक सम्बन्धी को लेकर दिल्ली गये थे, कोई साधारण-सा काम कराने। लालबहादुर जी ने साफ मना कर दिया। उन्होंने कहा कि आप चाहे मेरे रिश्तेदार ही क्यों न हों, किन्तु मैं सिफारिश पर कोई काम नहीं करता। वे सज्जन निराश होकर लौट आये।

ईमानदारी और सच्चाई का एक और ज्वलंत उदाहरण यह है कि जुलाई ६५ में सेण्ट स्टीफन कालेज दिल्ली में प्रवेश के लिए दो घण्टे से पंक्ति में खड़े लड़के से जब प्रिंसिपल ने उसके पिता का नाम पूछा तो उसने कहा—'लालबहादुर शास्त्री!' प्रिंसिपल चौंक गया, प्रधानमन्त्री का लड़का और दो घण्टे से 'क्यू' में! किसी ने उसकी सिफारिश नहीं की।

**बैंक बेलेन्स**—भारत का यह दीनबन्धु प्रधानमन्त्री जिस दिन मरा, उस दिन दुनिया यह देख कर दंग रह गई कि 'बैंक बैलेन्स' के नाम पर वह कुछ ऋण छोड़ गया है।

उत्तर प्रदेश-सरकार और भारत-सरकार के वर्षों मन्त्री रहकर भी देश के इस गरीब प्रधान मन्त्री ने स्वार्थ त्याग और निर्मोहिता की हद कर दी। उसने अपने लिए या अपने कुटुम्बियों के लिए कुछ नहीं सोचा, कुछ नहीं किया। पद का मोह तो उन्हें छू तक नहीं गया था। मन्त्री पद को उन्होंने कभी महत्व नहीं दिया। जीवन भर शास्त्री जी ने अपरिग्रह प्रवृत्ति का पालन किया और कभी इसका अतिक्रमण नहीं होने दिया। संसार के सब से महान् लोकतन्त्र का माननीय प्रधान मन्त्री लालबहादुर शास्त्री इतना त्यागी, तपस्वी और निर्मोही था, और था बहुत अधिक निर्धन!

जायदाद—लालबहादुर जी गरीबी में पले । प्रधानमन्त्री के पद पर रहकर भी उनके पास दो जोड़े जूते और तीन पुराने कोटों के अलावा कुछ नहीं था। उनके सोने के कमरे में सदा रस्सी की खटिया ही रही। वे मरे तो कुछ कर्ज छोड़कर मरे। परिवार के बच्चों के रहने के लिए एक छप्पर तक नहीं; भरण-पोषण के लिए कोई व्यवस्था नहीं, छोटी-मोटी रकम का जीवन-बीमा तक नहीं। एक बीघा जमीन नहीं, कोई बैंक-बैलेन्स नहीं।

कोई प्रधान मन्त्री के पद पर रहकर भी धन से इतना निर्लिप्त रहे, यह सचमुच गौरव की बात है। जो लोग अपने खानदान या समृद्धि पर गर्व करते हैं। वे इससे शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

## दरिद्रनारायण के प्रतिनिधि

शास्त्री जी का जन्म एक गरीब अध्यापक के घर हुआ, गरीबी में पले, और अपने जीवन में सदा उन्होंने गरीबी ही देखी। घर का खर्च चलाना भी इनके लिए कठिन था । दवाई लाने के लिए पैसे न होने के कारण इनकी १।। वर्षीया पुत्री का देहावसान हो गया। इस कारण इन्हें देश की गरीब जनता से हमदर्दी थी और देश की गरीबी को वे खूब अच्छी तरह पहचानते थे। इनकी हर समय यही कोशिश रहती थी कि देश से गरीबी किसी प्रकार मिट जाये और किसान खुशहाल बन जायें।

प्रधानमन्त्री बनने पर पहला स्वतन्त्रता-दिवस आया। १५ अगस्त १९६४ को लाल किले पर तिरंगा फहराया और भाषण करते हुए शास्त्री जी ने कहा—"हम रहें या ना रहें, लेकिन यह झण्डा रहना चाहिए और देश रहना चाहिए और मुझे विश्वास है कि यह झण्डा रहेगा; हम और आप रहें या न रहें, लेकिन भारत का सिर ऊंचा रहेगा। भारत दुनिया के देशों में एक बड़ा देश होगा और शायद भारत दुनिया को कुछ दे भी सके।"

आपने एक और अवसर पर भाषण देते हुए कहा था कि हमारे

सामने जो समस्याएं हैं उनमें सबसे दारुण समस्या गरीबी की है। हमारे करोड़ों देशवासी गरीबी में जकड़े हुए हैं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं किसी प्रकार अपने देशवासियों के गरीबी के बोझ को कुछ हल्का कर सकूं। खासकर मैं अपने समाज के पिछड़े और दलित लोगों को, अपने अनुसूचित जाति और अनुसूचित आदिम जाती के भाइयों को नहीं भूल सकता, जो सदियों से उपेक्षा और उत्पीड़न के शिकार रहे हैं। मेरे लिए यह सौभाग्य और गर्व का विषय होगा कि मुझे अपने समाज की व्यवस्था को अधिक न्यायपूर्ण बनाने के लिए काम करने का अवसर मिलेगा।

भारत की खाद्य-समस्या से भी शास्त्री जी चिन्तित रहते थे। उनका विश्वास था कि खाद्य-समस्या का समाधान करने के लिए उपज का बढ़ाना जरूरी है। रेडियो से भाषण करते हुए १० अक्टूबर १९६५ को आपने कहा था कि—"अपनी जरूरत भर का अनाज पैदा करना आज मैं उतना ही जरूरी समझता हूं, जितना रक्षा का प्रबन्ध करना। अनाज के लिए बाहर के देशों के सहारे रहना न केवल देश की अर्थव्यवस्था के लिए बुरा है, बल्कि इससे हमारे विश्वास और स्वाभिमान को भी ठेस पहुंचती है। हमें अपने पैरों पर खड़ा होना है। आज अनाज का मोर्चा लगभग उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना फौजी मोर्चा।" शास्त्री जी खाद्य-समस्या का हल करना चाहते थे किन्तु स्वाभिमान खोकर नहीं। शास्त्री जी ने कहा था कि हम भूखे रह लेगें किन्तु दूसरों के आगे हाथ नहीं फैलायेंगे। अन्न की समस्या को कुछ हल्का करने के लिए उन्होंने देश की जनता को सलाह दी कि प्रति सोमवार के सायंकाल अन्न न खाना चाहिए, इससे अन्न की कुछ बचत हो सकती है। अधिकाँश जनता ने शास्त्री जी का आदर करते हुए इस प्रस्ताव को स्वीकार किया और वे स्वयं सोमवार के सायंकाल को अन्न नहीं खाते थे। होटलों में भी इस दिन सायं के समय अन्न के बने पदार्थ नहीं परोसे जाते थे।

## गरीबों का ही आदमी

श्री शास्त्री जी के निधन का शोक-समाचार सुनकर स्तब्ध दिल्लीवासियों ने अपने प्यारे नेता को विभिन्न रूपों में याद किया।

फूल भी उदास थे, आँखें भीगी थीं, शब्द गिले से थे, पर दिल्ली-परिवहन के एक बस कंडक्टर के ये शब्द सुनकर कि 'नेहरूजी को गरीबों से बड़ी हमदर्दी थी, पर शास्त्री जी तो गरीबों के ही आदमी थे। सभी बस-यात्रियों की आँखें छलछला उठी थीं।

उस समय की बात है जब शास्त्री जी स्वराष्ट्र मंत्री थे। एक दिन उनके एक मित्र आए। शास्त्री जी ने उनका आदर-सत्कार किया। कुछ देर इधर-उधर की बातें होने के बाद उन्होंने शास्त्री जी से कहा—"शास्त्री जी, मेरा लड़का कई दिनों से बेकार है, उसको कहीं सिफारिश करके उसे लगवा दो न!"

शास्त्री जी एकदम क्रोधित हो उठे और बोले—"भविष्य में ऐसी बातें लेकर मेरे पास मत आना। यदि हम सिफारिशें करने लग जाएं तो गरीबों का क्या होगा?"

क्लब में बैठकर पांवों में मक्खन मलते-मलते भारत के लाखों निरीह गरीबों की चर्चा करने वाले राजनीतिज्ञ वे नहीं थे। स्कूल जाने के लिए कई मील पैदल चलकर जाना पड़ता था। गरीब होते हुए भी स्कूल-कालेज के वहिष्कार में सम्मिलित हुए। कितना साहस था और कितना था दृढ़ निश्चय!

शास्त्री जी को हाकी खेलने का शौक था, किन्तु हाकी और गेंद के लिए पैसे कहां से आयें? अश्वत्थामा को दूध की जगह चावलों का मांड पिलाकर सन्तोष दिया गया था। शास्त्री जी ने पेड़ की टहनी काटी और फटे-पुराने कपड़े तथा लीद से गेंद बनाई। इस तरह अपना हाकी खेलने का शौक पूरा किया।

शास्त्री जी को गरीबी ने ही विनम्र बनाया, पर 'भिक्षां' देहि

वृत्ति का नहीं। विनम्रता के साथ-साथ वे सदा स्वभिमानी भी रहे।

## नैतिक वसीयत

श्री लालबहादुर शास्त्री अपने पीछे जो नैतिक वसीयत छोड़ गये हैं, उसकी महानता सदा हिमालय के समान इस पृथ्वी पर अतुलनीय रहेगी। उन्होंने बड़े-से बड़े कार्य किये छोटे-से-छोटा बनकर। प्रायः वे परिहासवश अपने छोटे कद की चर्चा अपने सम्मुख उपस्थित बड़े कार्यों का मूल्यांकन करते हुए कर दिया करते थे। उनका सीधा-सादा वेश उनके साथ मुलाकात करने वालों एवं उनको देखने वालों को प्रायः उनकी बड़े कार्यों को सिद्ध करने की क्षमता के प्रति भुलावा दे दिया करता था। उनका वर्त्तमान एवं भूतकाल में जो सामाजिक प्रभुत्व रहा, उसको उन्हों ने अपनी निर्धनता से सदा दबाकर रखा। वे अपने जीवन में कभी धन के लिए व्याकुल नहीं हुए, वे कभी किसी पद को पाने के लिए लालायित नहीं रहे और वे कभी किसी कार्य को विकट नहीं समझते रहे। अपने सम्मुख उपस्थित प्रत्येक चुनौती को उन्होंने सदा ही ऐसा मनोयोग दिया कि वह चुनौती आपके सामने खण्ड-खण्ड हो गई और आप अपने जीवन की शृंखला में एक नयी ख्याती जोड़ते गये। एक निर्धन परिवार में, जो कि अपनी मामूली आवश्यकताओं को भी मुश्किल से पूरा कर सकता था, जन्म लेकर आप लगातार एक-एक विजय अपने जीवन में जोड़ते गये—वह विजय धन, पद व ख्याति की नहीं थी। वह विजय थी चुनौतियों पर सफलता की। वे चुनौतियां भी उनकी अपनी नहीं थीं। वे चुनौतियां थीं राष्ट्र की। आज श्री लालबहादुर हमारी आंखों के सामने फहराती हुई विजय-पताका के रूप में अवशिष्ट रह गये हैं, अपने शुद्ध रूप में।

## पदों का मोह नहीं

आज देश में और विदेशों में भी ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो किसी न किसी प्रतिष्ठित पद पर अधिष्ठित होना चाहते हैं और उसकी प्राप्ति के लिए भरपूर प्रयत्न में लगे रहते हैं। ऊंचे पदों पर

पहुंचे हुए भारत के प्रायः सभी सज्जन ऐसे लोगों में हैं, सम्भव है इनमें से कोई एक-आध इसका अपवाद हो। पर हमारे नेता श्री लालबहादुर शास्त्री जी ने कभी भी पदों का लोभ नहीं किया। वस्तुतः शास्त्री जी उन लोगों में थे जो कोरी देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर स्वाधीनता-संग्राम में कूद पड़े थे। आज भले ही उस कोटि के लोग राजनीति के क्षेत्र में यदा-कदा ही कहीं दिखाई पड़ जाते हों, पर उस युग में इस तरह के लोगों की संख्या कम नहीं थी। उस समय एक पीढ़ी की पीढ़ी ऐसे लोगों की तैयार हुई थी, और स्वाभिमान पर बड़ी चोट थी शास्त्री जी की विशेषता इसमें नहीं थी कि उन्होंने राजनीति की होड़ में पड़ना नहीं चाहा, बल्कि उनकी विशेषता यह थी कि वैसा किए बिना भी वे पग-पग पर आगे बढ़ते ही चले गये। इस प्रकार की होड़ में न पड़ने वाले आज राजनीति के क्षेत्र में अगर नहीं दिखाई देते तो इसका एकमात्र कारण यही है कि धीरे-धीरे उनकी पीढ़ी छंट-छंटाकर समाप्त हो चुकी है, और शास्त्री जी केवल इसलिए नहीं छंट पाये कि वे अपने अध्यवसाय, अपनी ईमानदारी, अपनी लगन और सभी साथियों तथा सहकर्मियों के प्रति अपने सौहार्द्र और सद्भाव द्वारा अपने को अपरिहार्य बनाते चले गये। इतने सारे गुणों का एक स्थान पर समावेश और समन्वय इतिहास में शायद अनूठा है।

शास्त्रीजी राजनीति के क्षेत्र में उत्तरोत्तर ऊपर ही उठते गये, पर ऐसे ही कई अवसर आये जब वे पीछे पड़ते दिखाई दिये। पर उनके दिल में इसके लिए कभी कोई मलाल नहीं आया।

कहा जाता है कि १९५७ के आम चुनावों के बाद मन्त्रिमण्डल के निर्माण के समय नेहरू जी पन्तजी को वित्त मन्त्री बनाना चाहते थे और शास्त्री जी को गृहमन्त्री। पर सुनने में आया कि पन्तजी

गृह-विभाग छोड़ने के लिए किसी भी प्रकार तैयार नहीं थे। मोरारजी देसाई भी बम्बई से केन्द्र में आ गये थे; उन्हें भी कोई विशेष विभाग ही देना अनिवार्य था। विवश होकर इच्छा न होते हुए भी नेहरू जी ने शास्त्री जी को डाक-तार का विभाग दिया, जो उनकी हैसियत के अनुकूल नहीं था। मन्त्रिमण्डल का गठन हो जाने पर जब प्रेमी और मित्रजन शास्त्री जी को बधाई देने आये तो उन सभी के दिलों में एक ही बात थी कि उनके साथ न्याय नहीं हुआ। पर लालबहादुर शास्त्री के चेहरे पर ऐसा कोई भाव नहीं था, जिससे लगता कि उनके साथ कोई अन्याय अथवा कुछ अवांछनीय हुआ है।

इससे पूर्व रेल-दुर्घटना चाहे किसी की उपेक्षा से हुई हो, परन्तु इन्होंने सर्वोपरि उत्तरदायी पद पर होने के कारण यह अनुभव किया कि रेल-व्यवस्था में अवश्य ही कोई त्रुटि रह गई है जिसके कारण यह इतनी बड़ी दुर्घटना हुई कि सैंकड़ों व्यक्तियों की जानें गईं और सैंकड़ों घायल हो गये। इस सब का दायित्व उन्होंने अपने ऊपर लिया और अपने को इस पद के अयोग्य समझ कर तत्काल त्यागपत्र दे दिया। जैसे मन्त्रिपद का सम्भालना और छोड़ना उनके लिए कोई बात ही नहीं थी। मर्यादा पुरुषोतम रामचन्द्र जी को राज्याभिषेक के समाचार से कोई प्रसन्नता नहीं हुई थी। और उसके तत्काल बाद ही १४ वर्षों के लिये बनवास की आज्ञा सुनकर भी कोई विषाद नहीं हुआ। उनके चेहरे पर किसी अवस्था में भी कोई विकार नहीं आया। यही अवस्था लालबहादुर शास्त्री जी की थी। वे तो देश की सेवा करना चाहते थे, चाहे किसी भी प्रकार हो, उन्हें पदों का कोई मोह नहीं था।

कामराज-योजना के अन्तर्गत अगस्त १९६३ में उन्होंने पुनः मन्त्रिपद से त्यागपत्र दे दिया और काँग्रेस के संगठन में कार्य करने लगे। किसी की प्रेरणा से अथवा दबाव से उन्होंने त्यागपत्र नहीं दिया

करते थे, वे तो अपनी अन्तःप्रेरणा से ही ऐसा करते थे। यही कारण था कि उन्हें त्यागपत्र देने पर कोई दुःख या विषाद नहीं हुआ।

भुवनेश्वर-कांग्रेस की अध्यक्षता के लिए भी उनका नाम आया-उनके 'हां' करने भर की देर थी कि वह पद उन्हें अवश्य मिल जाता। किन्तु इतने बड़े पद को भी उन्होंने इसलिए अस्वीकार कर दिया कि वह जानते थे कि कांग्रेस अध्यक्ष बन जाने पर भी कामराज-योजना को वह दिशा देने में असमर्थ ही रहेंगे, जो कांग्रेस की प्रतिष्ठा को उठाने के लिए उन्हें अनिवार्य रूप से आवश्यक दिखाई देती थी। कामराज-योजना के बाद जब उनके पास कोई पद नहीं था, कांग्रेस अध्यक्ष का अत्यन्त लुभावना पद भी उन्हें नहीं लुभा सका।

कामराज-योजना के अन्तर्गत मन्त्रिपद से त्यागपत्र देकर फिर अकेले वही मन्त्रिमण्डल में वापिस क्यों गए ? यह प्रश्न लोगों के मन में था। इसके लिए स्वयं शास्त्री जी के मन में भी अन्तर्द्वन्द्व चला कि वह मन्त्रिमण्डल में जायें या नहीं, परन्तु अन्त में उन्हें मन्त्रिमण्डल में जाने के लिए जिस भावना ने मजबूर किया वह वही थी कि नेहरू जी बीमार थे और उनकी रोग-शय्या से ही इनके लिए उनका यह आदेशात्मक अनुरोध था। यदि नेहरू जी बीमार न होते तो शास्त्री जी कदापि पुनः मन्त्रिमण्डल में न जाते। जब तक वे इस पद पर रहे, उनके मन में अन्तर्द्वन्द्व चलता ही रहा और अपने प्रति उनका असन्तोष और बेचैनी बढ़ती ही रही। उस समय उनका मन काम में नहीं था, यह पद उनके लिए एक बड़ा बोझ बन रहा था, जिसे उतार फेंकने के लिए बेचैन रहते थे। शास्त्री जी ने अपने नेता के जीवन के अन्तिम दिनों में उनके दिल को दुखाना नहीं चाहा, इसीलिए वे अपने मन के अन्तर्द्वन्द्व से निरन्तर संघर्ष करते हुए भी इस कड़वी घूंट को पीते ही रहे।

प्रधान मन्त्री बनने के बाद भी इन्हें ऊंचा उठाने का कोई भान

नहीं था, उनके अन्दर कुछ गर्व उत्पन्न नहीं हुआ। उनमें केवल बढ़े हुए उत्तरदायित्व का बोध ही था; और उसे निभाने के लिए वे सजग और तत्पर रहे।

जिस तरह १९२६ में इलाहाबाद म्युनिसिपिल बोर्ड के सदस्य की हैसियत से वे लोगों के साथ पेश आते थे, रेलमन्त्री बन जाने पर पर भी उसी तरह वे पेश आये, भारत के गृहमन्त्री बन जाने पर भी उनके व्यवहार और चाल-ढाल में कोई अन्तर नहीं आया, और जब १९६४ में वे भारत के प्रधान मन्त्री बने, तब भी वे वैसे-के-वैसे ही रहे।

उदेति सविता रक्तः रक्तश्चास्तमये तथा।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता॥

सूर्य उदय होते समय भी लाल ही होता है और अपने अस्त के समय भी लाल ही रहता है। महान् पुरुष जैसे सम्पत्ति प्राप्त होने पर होते हैं, विपत्ति आने पर भी वैसे ही रहा करते हैं। लालबहादुर शास्त्री जी भी कोई प्रतिष्ठ या पद की प्राप्ति से कभी प्रसन्न नहीं हुए और पद को छोड़कर कभी विषाद उन्होंने नहीं माना। पदों का मोह शास्त्री जी को छू तक नहीं गया था।

## बच्चों के मामा

सारा देश महात्मा गांधी को आदरभाव से बापू कहता था। गांधी जी बच्चों से प्यार किया करते थे। पं० नेहरू को भी बच्चे प्यारे थे, अपने स्वागत-समारोहों में प्रायः वे अपने गले से मालाएँ उतार कर बच्चों के गलों में डाल दिया करते थे। कई बार, जहाँ बच्चे खेल में सम्मिलित हो जाते। इसी प्रकार शास्त्री जी के हृदय में भी वात्सल्य भाव उग्ररूप से जागृत था। देश की परिस्थितियों से और राजनैतिक उलझनों से कुछ अवकाश पाकर जब कभी वे

घर में विश्राम करते, तो विश्राम के उन क्षणों में वे अपने पोती-पोते और नाती-नातिनों के साथ मनोरंजन करते, उन्हें गोदी में लेते, उनसे प्यार-दुलार करते और खिलवाड़ करते थे। घर से बाहिर भी, देश के बच्चे उनके साथ अपना आदर प्रकट करते और वे अपना वात्सल्यभाव प्रदर्शित करते थे। बच्चे उनके हस्ताक्षर लेते तो प्रसन्नता से उन्हें अपने हस्ताक्षर देते।

एक बार दिल्ली के बालकन-जी-बारी के कुछ प्रतिनिधि सदस्य शास्त्री जी के पास आये, और बोले हमारे चाचा नेहरू जी तो हमें छोड़कर चले गये हैं। आप हमारे मामा बन जाइये। शास्त्री जी ने हर्षपूर्वक बच्चों का मामा बनना स्वीकार लिया। तब से वे बच्चों की दुनिया में 'मामा शास्त्री' कहलाने लगे।

भारत-पाक के मध्य युद्ध-विराम हो गया। देश के कोने-कोने से घायल जवानों की सेवा और मनोरंजन के लिए बूढ़े-जवान, नर-नारी, युवक और बच्चे सभी अपनी सामर्थ्य के अनुसार भेंट ला-लाकर शास्त्रीजी को समर्पित करने लगे। बच्चों की भेंट को शास्त्री जी बड़े प्रेम और उत्साह से स्वीकार करते और बच्चों को थप-थपाकर 'शाबाश' कहते।

दिल्ली के दो छात्र अशोक कुमार और विजयेन्द्र कुमार जवानों के मनोरंजन के लिए कुछ सामान लेकर शास्त्री जी के पास गये। शास्त्रीजी बड़े प्रेम के साथ उनसे मिले। उनका दिया हुआ सामान स्वीकार करके उन्हें थपथपाया और कहा 'शाबश' बहुत अच्छा! फिर शास्त्री जी ने अपनी इच्छा से उन दोनों के साथ अपनी फोटो खिचवाई। बच्चे प्रसन्न हुए कि शास्त्री जी के साथ हमारी फोटो खिच गई और शास्त्री जी ने अपना मनोरंजन किया।

शास्त्रीजी बच्चों से अत्यन्त प्रेम रखते थे। एक बार उन्होंने कहा था कि वे बच्चों के साथ शुरु से शायद इसलिए खेलते आये हैं

कि उनका कद छोटा होने के कारण उन्हें कोई अपने साथ खिलाना पसन्द नहीं करता था और फिर स्वाभाविक रूप से वे बच्चों की ओर आकर्षित हुए।

## सच्चे खिलाड़ी

मानवीयता का कोई भी पहलू शास्त्री जी से अछूता नहीं था। विश्व की अर्न्तराष्ट्रिय राजनीति भी अब जानती है कि वे कितने कुशल खिलाड़ी थे।

बच्चों को चोरी से बाग में घुस कर फल तोड़कर खाने का शौक होता है, यह शौक शास्त्री जी को भी अपने बचपन में था। शास्त्री जी अपने दोस्तों के साथ एक बार एक बाग पर धावा बोलने से नहीं चुके। माली आया, उसकी आवाज सुनकर सब लड़के भाग गये। मास्टर का लड़का ही उसके हाथ में आया। उसने उस लड़के को उस समय तक पीटा, जब तक उसके हाथ थक नहीं गये। बालक ने माली के आगे हाथ जोड़ दिये और कहा—'मुझे क्यों मारते हो? मैं गरीब हूं, मेरे पिता नहीं हैं, मुझे आप क्यों नहीं छोड़ देते? पर वह माली निर्दयी था। यह सुनकर उसने और कई छड़ियां बालक पर फटकार दीं और साथ ही यह उपदेश दिया—'तेरे पिता नहीं हैं, इसलिए तुझे और भी अधिक अच्छी तरह से रहना चाहिए।' माली के ये शब्द छोटे बालक के अन्तःकरण में समा गये। माली की इस सीख को उस बालक ने फिर कभी नहीं भुलाया।

शास्त्री जी को बचपन में हाकी खेलने का भी शौक था। पर निर्धनता के कारण हाकी और गेंद खरीदने को इनके पास पैसे नहीं थे। अपना शौक पूरा करने के लिए इन्होंने एक वृक्ष की शाखा काट कर हाकी बनाई और लीद पर चीथड़े लपेट कर उस से गेंद का काम चलाया। बालक लालबहादुर का हाकी खेलने का शौक पूरा हुआ।

क्रिकेट, बैडमिण्टन और टेबल टैनिस भी शास्त्री जी के प्रिय खेल थे। फीरोजशाह कोटला साक्षी है। दिल्ली में कोई टैस्ट क्यों न हो, प्रधान मन्त्री अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी नित्य प्रति टैस्ट देखने न पधारें, यह सम्भव नहीं। १९६४ में इंगलैंड-भारत के बीच टैस्ट मैच को हर रोज देखने वालों में श्री शास्त्री जी भी थे। पिछले वर्ष न्यूजीलैण्ड की क्रिकेट टीम भारत आयी और प्रधान मंत्री नाजुक मौके पर अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी न केवल खिलाड़ियों से मिलने फीरोजशाह कोटला मैदान में पधारे, बल्कि टैस्ट देखने का चाव भी नहीं छोड़ सके।

क्रिकेट उनका प्रिय खेल था, पर इस का मतलब यह कदापि नहीं कि अन्य खेलों में उनकी रुचि नहीं थी। प्रधान मन्त्री जी फुटबाल और क्रिकेट की अनेक संस्थाओं के संरक्षक थे।

खेलों के प्रेमी शास्त्री जी बैडमिण्टन के भी खिलाड़ी थे। नई दिल्ली में आयोजित नेहरू बैडमिण्टन चैम्पियनशिप के अवसर पर शास्त्री जी ने कहा था कि जेल में पण्डित नेहरू के साथ वे बैडमिण्टन खेला करते थे। इनके "शाट" मुलायम अवश्य पड़ते थे, पर अचूक निशाने पर।

तैराकी शास्त्री जी का बचपन का शौक था। अपने गांव रामनगर से आठ मील दूर विद्याध्ययन को बनारस जाया करते थे। कभी-कभी देर हो जाने पर रास्ते को छोटा करने की खातिर गंगा को तैर कर पार कर लिया करते थे। किताबों के थैले को सिर पर रखकर तैरने का शास्त्री जी को अभ्यास था।

इतना ही नहीं, शास्त्री ज़ी प्रातःकाल ५ बजे उठकर नित्यप्रति व्यायाम के प्रबल पक्षपाती भी रहे हैं।

शास्त्री जी गरीबों के और किसानों के प्रतिनिधि थे। उनकी स्थिति को खूब जानते थे। उन्होंने देश में उपज बढ़ाने पर बल

दिया। जो कुछ वे कहते थे, उसे पहले स्वयं करके दिखाते थे। अपने दिल्ली के निवास-स्थान पर शास्त्री जी ने स्वयं अपने हाथों से हल चलाकर गेहूं बोये। उनके प्रांगण में गेहूं की खेती लहलहा रही थी। शास्त्री जी के निधन के पश्चात् उनकी धर्मपत्नी ने अपनी यह इच्छा व्यक्त की कि इस गेहूं की खेती में से जो शास्त्री जी ने स्वयं अपने हाथों से बोई है यदि एक मुट्ठी गेहूं, के दाने मेरे पास पहुंच जायें तो मैं अपने को धन्य समझूंगी और समझूंगी कि मैंने अपने पति के कठिन परिश्रम से उत्पन्न किये गेहूं के दाने खाये हैं।

चर्खा चलानें का काम तो गान्धी जी ने देश के बच्चे-बच्चे क सिखा दिया था। असहयोग-आन्दोलन के दिनों में एक बच्चा भी चर्खे पर अथवा तकली पर सूत के तार निकाल कर गर्व का अनुभव करता था। शनैः-शनैः चर्खा कातने का शौक जाता रहा और अब केवल कांग्रेस के उच्चकोटि के नेताओं में ही यह शौक रह गया है। शास्त्री जी को भी चर्खा चलाने का शौक था और उस पर उन्होंने देश का भविष्य काता था।

शास्त्री जी देश के नेता ही नहीं, बल्कि वास्तव में सच्चे कर्त्तव्य परायण व्यक्ति थे।

## पंचशील का निर्माता चला गया

देश का यह महान् दुर्भाग्य था कि भारत के सर्वप्रिय प्रधान-मन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू २७ मई १९६४ को इस संसार से चले गये। वह सच्चे अर्थों में शान्तिदूत थे। पण्डित जी १८ वर्ष तक निरन्तर भारत के प्रधान मन्त्री के रूप में कार्य करते रहे। आप की नीति शान्ति और तटस्थता की नीति थी। आपने घोषणा की कि हम महात्मा गांधी की शान्ति की नीति को ही अपनाए रखेंगे, और किसी देश से युद्ध नहीं करेंगे। भारत किसी पर आक्रमण नहीं

करेगा, केवल आत्मरक्षा ही करता रहेगा। आपने भारत को राष्ट्र-सुरक्षासंघ का सदस्य बनाया और कहा कि भारत सदा गुटबन्दी से अलग रहेगा। अपने प्रत्येक भाषण में पण्डित जी ने इसी बात को दोहराया। पं० नेहरू के प्रयत्नों से भारत का स्थान विश्व में ऊँचा उठा और सब देश इस का सम्मान करने लगे। भारत के शान्ति-प्रयत्नों की सबने सराहना की। संसार में जहाँ भी युद्ध होता पं० जवाहरलाल नेहरू उसे टालने का प्रयत्न करते, अनेक युद्ध इनके प्रयत्नों के परिणाम-स्वरूप टले भी। लोगों ने कहा कि भारत को भी अणुबम बनाना चाहिए, किन्तु पं० नेहरू सदा इसका विरोध ही करते रहे। संसार में युद्धबन्दी और शान्ति की स्थापना के लिये आपने चीन के प्रधान मन्त्री श्री चाऊ एन लाई के सहयोग से १९६४ में 'पंचशील' का निर्माण किया। विश्व के अधिकाँश बड़े राष्ट्र इस विषय से सहमत हैं कि पंचशील ही विश्व शान्ति का आधार हो सकता है। १९५५ के बाडुंग सम्मेलन में १९ राष्ट्रों ने पंचशील को विश्वशान्ति का मूलमन्त्र स्वीकार किया था। पंचशील का संक्षिप्त स्वरूप इस प्रकार है :—

१—एक दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता तथा प्रभुता का सम्मान,

२—परस्पर अनाक्रमण,

३—एक-दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना,

४—समता तथा परस्पर लाभ, और

५—शान्तिमय सह-अस्तित्व।

विश्वशान्ति के क्षेत्र में भारत ने केवल सिद्धान्त उपस्थित किया हो, ऐसी बात नहीं। क्रियात्मक कार्य भी भारत ने किया है। यदि देखा जाय तो क्रियात्मक कार्य सिद्धान्त से अधिक हुआ है। भारत ने पंचशील के सिद्धान्तों का न केवल पालन ही किया, अपितु दूसरे राष्ट्रों को भी इस ओर प्रेरित किया।

## प्रधानमंत्री के रूप में

पं० जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के बाद देश की किसी सुदृढ़, सुयोग्य, राजनीति में धुरिण और सूझबुझ वाले प्रधान मन्त्री की आवश्यकता थी। सब के मन में यही आशंका रह-रह कर उठती थी कि देश का अब क्या होगा ? कौन प्रधान मन्त्री बनेगा और कौन है जो देश को सम्भालेगा। जनता की और नेताओं की दृष्टि किसी एक पर जमती न थी। भारत के प्रधान मन्त्री का ताज, कांटों का ताज था। लोग सोचते थे कि इस कांटों के ताज को कौन माई का लाल पहनेगा ?

उस समय देश की स्थिति बड़ी नाजुक बनी हुई थी। चीन के आक्रमण के कारण देश पर संकट के बादल मंडराए हुए थे। पाकिस्तान छेड़-छाड़ करके कश्मीर को हड़पने की ताक में था। बार-बार चीन से पाकिस्तान को उत्साह प्राप्त हो रहा था। उधर श्री लंका में भारत-प्रवासियों की विषम समस्या भी हमारे सामने थी। और पूर्वी पाकिस्तान से आये हुए शरणार्थियों के पुनर्वास की समस्या भी हमारी चिन्ता का विषय था। इन उलझी हुई समस्याओं को सुलझाने के प्रश्न तो थे ही, किन्तु इन सब के साथ-साथ देश की हीन आर्थिक स्थिति को सुधारने का भी प्रबल प्रश्न था। खाद्य-समस्या को सुलझाकर देश को आत्मनिर्भर बनाने का भी प्रयत्न था।

इन विषम समस्याओं और विकट परिस्थितियों के रहते हुए प्रधान मन्त्री किसे चुना जाये ? जो देश को सम्भाल सके, यही सवाल नेताओं के मस्तिष्क में चक्कर काट रहा था।

संसद में कांग्रेस और विरोधी दल दोनों ही श्री शास्त्री जी का बेहद सम्मान करते थे। प्रधान मन्त्री का पद सम्भालने के लिये इन की ओर आंखें उठने लगीं और इनका नाम कई ओर से लिया जाने

लगा। जब शास्त्री जी को मालूम हुआ कि लोग प्रधान मन्त्री बनने के लिए मेरा नाम ले रहे हैं तो उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि वे प्रधान मन्त्री का पद तभी ग्रहण करेंगे जबकि कांग्रेस दल उन्हें सर्वसम्मति से अपना नेता चुनेगा। वे किसी के विरोध में कार्य करना पसन्द नहीं करते थे। शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि सभी राज्य और संसद् में कांग्रेस दल का बहुमत शास्त्री जी के नेतृत्व के पक्ष में है।

नेता के चुनाव का समय आया और शास्त्री जी के कांग्रेस संसदीय दल के नेता निर्वाचित कर लिए गए। नेता निर्वाचित होने पर आपने श्री नेहरू की घरेलू और विदेश नीति का अनुगमन करने की इच्छा व्यक्त की। ९ जून को आपने प्रधान मन्त्री के पद की शपथ ग्रहण की और साथ ही अणुशक्ति-विभाग के मन्त्री के पद का भार भी संभाला।

प्रधान मन्त्री का पद स्वीकार करने के पश्चात् शास्त्री जी शायद एक रात भी सुख की नींद न सो पाए। देश का सारा दायित्व उनके ऊपर आ पड़ा। वे सोचते थे कि देश बड़ी उलझन में फँसा हुआ है, किस प्रकार इन उलझनों से निकाला जाये। यही चिन्ता उन्हें रात-दिन लगी थी।

आलोचक विरोधी दलों के सदस्य जो केवल विरोध करने के लिए ही विरोध करते हैं, और साधारण जनता जिसे भले-बुरे का कुछ भी ज्ञान नहीं होता, जिनकी चाल भेड़ाचाल होती है, कहने लगे कि यह सीधा-सादा धोती-कुरता पहनने वाला छोटे से कद का पांच फुटा आदमी जिसका कुछ भी प्रभाव नहीं, राजनीति और कूटनीति नहीं जानता, विदेशों में जाने और विदेशी नेताओं से बातचीत करने की जिसमें योग्यता नहीं, जो अंग्रेजी नहीं बोल सकता, क्या देश का संचालन करेगा और इतने बड़े दायित्व को कैसे संभालेगा ? पर उन्हें यह नहीं मालूम था कि इनके अन्दर क्या-क्या गुण छिपे हुए हैं। वे यह

नहीं जानते थे कि ये जितने सरल और नम्र हैं उतने ही कठोर और प्रचण्ड भी हैं, जितने शान्त हैं उतने उग्र भी हैं, और जितनें समझौता-प्रिय हैं उतने ही चट्टान के समान दृढ़ भी हैं।

प्रधान मन्त्री पद पर पहुंचते ही संसद् में इनके विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। विरोधियों को मुँह की खानी पड़ी और यह छोटा-सा आदमी बहुमत से विजयी हो गया।

पाकिस्तान ने कच्छ के रन पर अपने अधिकार का दावा किया। और भारत से बलपूर्वक छीनने के लिए उस पर आक्रमण कर दिया। हमारे प्रधान मन्त्री ने उसका मुकाबला किया और विवश होकर अन्य कुछ चारा न देख पाकिस्तान के साथ समझौता कर लिया। शास्त्री जी ने समझौता इसलिए नहीं किया कि वे पाकिस्तान का मुकाबला नहीं कर सकते थे, पर इसलिए किया कि भयंकर नर-संहार और रक्तपात देख नहीं सकते थे और देश में शान्ति चाहते थे; उनकी शान्तिप्रियता का यह ज्वलन्त प्रमाण है।

शास्त्री जी दृढ़ निश्चय, आत्म सम्मान और वीरता में भी कम नहीं थे। ५अगस्त १९६५ को पाकिस्तान नें काश्मीर पर सशस्त्र आक्रमण किया। शास्त्री जी ने न केवल उसका डटकर मुकाबला किया, बल्कि १८ वर्ष से परतन्त्र कश्मीर के कुछ भाग को स्वतन्त्र भी कराया और लहौर तथा स्यालकोट की सीमा तक विजयी भी प्राप्त की। इस विजय का मुख्य कारण उनकी सूझ-बूझ, प्रत्युत्पन्नमति, आत्मसंयम, विरोधियों का पूर्णतः सहयोग और सम्पूर्ण देशवासियों की भावनाओं का आदर करते हुए उनका सहयोग प्राप्त करना है। शास्त्री ज़ी ने देश के चरित्र को उज्ज्वल किया और मनोबल को ऊँचा उठाया। राष्ट्रसंघ के प्रधानमन्त्री श्री ऊ थाँत के आदेश पर इस युद्ध का विराम हुआ।

ब्रिटेन और अमरीका पाकिस्तान की बुरी दशा कैसे सहन कर

सकते थे। पाकिस्तान को जो सफलता युद्ध में नहीं मिली, उसे ये राजनीति के दांव-पेच से दिलाने का प्रयास करने लगे। संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा-परिषद् ने प्रस्ताव पास कर दिया कि दोनों ओर की सेनाएं ५ अगस्त १९६५ की स्थिति में चली जायें। इस प्रस्ताव के समर्थन में न केवल ब्रिटेन और अमरीका ही थे, अपितु राष्ट्रसंघ के भारत का प्रबल समर्थक रूस भी शामिल था। इसके उत्तर में भारत ने स्पष्ट कर दिया कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, अतः यह भारत का घरेलू मामला है। इसलिए पाकिस्तान द्वारा खाली कराया गया कश्मीरी क्षेत्र पाकिस्तान को लौटाया नहीं जाएगा।

२ जून १९६४ का दिन था। भारतीय राष्ट्र के नवजागरण का नेतृत्व एवं पथ-निर्देशन करने वाले राष्ट्रनेता श्री नेहरू जी के आकस्मिक निधन से व्यथित और स्तम्भित देशवासियों की शोकार्त्त दृष्टि नई दिल्ली के संसद् भवन की ओर केन्द्रित थीं। उधर नई दिल्ली में प्रातः ९ बजे के निर्धारित समय से काफी पहले ही, संसद् भवन के विशाल केन्द्रीय कक्ष का वातावरण लगभग छः सौ कांग्रेसी नेताओं की कानाफूसियों एवं सरगर्मियों से उत्तेजित था। राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी के आदमकद चित्र के ठीक सामने अर्ध-चन्द्राकार बनाकर बैठे थे देश के नेता श्री नेहरू जी उत्तराधिकार के चुनाव पर अपनी अन्तिम और औपचारिक मुहर लगाने के हेतु एकत्र हुए थे। जब कांग्रेस कार्यसमिति के १८ सदस्यों ने सभा भवन में प्रवेश किया, तो सभी उपस्थित लोगों की दृष्टि धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता-पूर्वक कदम उठाने वाले, डील-डौल में सबसे छोटे, दुबले-पतले और सबसे अधिक शान्त दिखाई पड़ने वाले व्यक्ति पर केन्द्रित हो गई—ये थे श्री लालबहादुर शास्त्री।

## ताशकन्द-वार्ता

पाकिस्तान की सहायता के लिए एक नयें ही व्यूह की रचना की गयी। रूस के प्रधान मन्त्री श्री कोसीगन ने भारत के प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री मुहम्मद अयूबखां को परस्पर सुलह-समझौते की बातचीत करने के लिए ताशकन्द में निमन्त्रित किया। वहां जाकर वार्त्ता करने से पूर्व हमारे प्रधान मन्त्री जी ने यह स्पष्ट कर दिया कि ताशकन्द-वार्त्ता में कश्मीर की राजनैतिक स्थिति पर बातचीत करने में भारत कदापि तैयार नहीं है। पाकिस्तान के विदेश-मन्त्री श्री भुट्टो एक मास पूर्व जब रूस गये थे, तो उन्होंने रूस के प्रधान को यह विश्वास दिलाया था कि वे कश्मीर की राजनैतिक स्थिति का प्रश्न नहीं उठाएंगे। कहते हैं कि एक बार आजमाए हुए को दोबारा नहीं आजमाना चाहिए। पाकिस्तान के वचन और आश्वासन अनेक बार झूठ सिद्ध हो चुके हैं। फिर भी हमारे सरल स्वभाव प्रधान मन्त्री शास्त्री जी ने भुट्टो की बात पर विश्वास कर लिया, और उसके इस आश्वासन के आधार पर ताशकन्द-वार्त्ता में सम्मिलित होने की स्वीकृति दे दी।

२ जनवरी १९६६ को दिल्ली के रामलीला मैदान में एक विशाल सभा हुई। जिसमें इस सम्बन्ध में भारत के सभी कूटनीतिज्ञ महापुरुषों, मन्त्रिमण्डल के साथियों एवं देश में विरोधी दलों के प्रमुख प्रतिनिधियों ने अपने विचार व्यक्त किए। शास्त्री जी ने भी कुछ आशाएं प्रकट कीं और जनता को कुछ आश्वासन भी दिए। ३ जनवरी को परराष्ट्र मन्त्री सरदार स्वर्णसिंह तथा प्रतिरक्षा मन्त्री श्री यशवन्त राव बलवन्त राव चव्हाण को अपने साथ लेकर अपनी मातृभूमि भारत को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में असाधारण उंचाइयों तक उठाने के लिए ताशकन्द रवाना हो गए। भारत के

बच्चे-बच्चे ने बड़े विश्वास और आशाओं के साथ अपने प्रधानन्त्री को विदाई दी।

संघर्षों में चट्टान की तरह स्थिर, निर्णयों में विवेक की पराकाष्ठा पर पहुंचे हुए, मानवीयता में कुसुमवत कोमल, श्री शास्त्री जी की वह विदाई की मुद्रा उन करोड़ों देशवासियों के हृदयों में अंकित होकर रह गयी है, जिन्होंने उनके नेतृत्व में देश की प्रतिष्ठा को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में ऊपर तक उठते हुए देखा है। ओठों पर सहज मुस्कान, आंखों में निश्चय की चमक, विदाई के लिए ऊपर उठ कर जुड़े हुए हाथों में दृढ़ता के साथ-साथ समूची मानवता के प्रति सहज आत्मीयता शास्त्री जी की विशेषता थी।

शास्त्री जी की वार्त्ता के लिए ताशकन्द पहुंच गए, उधर राष्ट्रपति अयूबखाँ भी आ गए। ४ जनवरी ६६ को वार्त्ता का प्रारम्भ हुआ। अपने प्रारम्भिक भाषण में श्री शास्त्री जी ने इस बात पर बल दिया कि पहले भारत और पाकिस्तान इस बात के लिए सहमत हों कि वे अपनी समस्याओं को हल करने के लिए सेना का उपयोग नहीं करेंगे। पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने कहा कि जब तक भारत-पाक के मध्य मौलिक समस्या का सन्तोषजनक हल न निकले, इस आश्वासन का कोई लाभ न होगा। अपने भाषण में दोनों ही नेताओं ने कश्मीर का उल्लेख नहीं किया। किन्तु राष्ट्रपति अय्यूब ने 'मौलिक समस्या' कह कर अप्रत्यक्ष रूप से कश्मीर की चर्चा कर दी। वे कश्मीर को ही मौलिक झगड़ा मानते हैं। शास्त्री जी कश्मीर प्रश्न को छेड़ना नहीं चाहते थे और अय्यूब इनके बिना आगे बढ़ना नहीं चाहते थे, इस कारण ५, ६ और ७ जनवरी को इन दोनों नेताओं की बातचीत असफलता की अन्तिम सीढ़ी तक पहुंच गई। अकस्मात् ७ जनवरी के सांयकाल श्री अय्यूब खाँ 'युद्ध-वर्जन' घोषणा मान गये, किन्तु इस बातचीत को प्रस्ताव रूप में लाने के लिए ८ जनवरी को

पुनः मिले तो अय्यूब खां अपनी बात से मुकर गये और बातचीत भंग हो गई। बातचीत कैसे भंग हुई, एक राष्ट्र के राष्ट्रपति वचन देकर भी वचन-भंग कैसे कर बैठे? इसके मूल में हम नहीं जाना चाहते।

८ जनवरी को रूस के प्रधान मन्त्री श्री कोसीगन ने दोनों नेताओं ने पृथक्-पृथक् वार्त्ताएं कीं। इस दिन शास्त्री जी बहुत चिन्तित दिखाई पड़ते थे, क्योंकि अय्यूब अपने वचन से मुकर गए और फिर भी श्री कोसीगन ने पाकिस्तान को माफ कर दिया। शास्त्री जी ने उस दिन ऐसा अनुभव किया कि प्रत्येक देश और प्रत्येक व्यक्ति पाकिस्तान को उसकी भयंकर गलतियों के लिए भी माफ कर देता है।

९ जनवरी को श्री कोसीगन ने अपने व्यक्तिगत तथा राष्ट्रगत प्रभाव से अय्यूब से 'युद्ध-वर्जन' की बात मनवा ली और ५ अगस्त की स्थिति में आने की बात को स्वीकार करने के लिए शास्त्री जी पर अपना प्रभाव डाला।

रूस राष्ट्रसंघ में भारत का एकमात्र मित्र रहा है, जिसने कश्मीर-प्रश्न पर 'वीटो' करके अनेक बार भारत की मान-मर्यादा रखी है। दूसरी ओर, ब्रिटेन और अमरीका आंख मींच कर पाकिस्तान का न केवल पक्ष ही लेते हैं अपितु उसे शस्त्रास्त्र भी देते हैं। तीसरी ओर, संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रस्ताव की उस स्थिति में अवहेलना करना जब कि विश्व के सभी प्रमुख राष्ट्र उस की स्वीकृति के लिए बाध्य करेंगे, भारत के लिए असम्भव हो सकता है। चौथे, श्री कोसीगन की बात न मनना रूस से भारत को प्राप्त आर्थिक, सैनिक एवं राजनैतिक सहायता बन्द करना होगा और ऐसी स्थिति में विश्व की राजनैतिक प्रांगण में भारत अकेला और स्वयं अकेला ही खड़ा रहेगा, इन सब कारणों एवं आत्मदमनकारी प्रभावों के

बावजूद हमारे प्रधान मन्त्री को १० जनवरी १९६६ को ताशकन्द-समझौते पर हस्ताक्षर करने पड़े।

## ताशकन्द का घोषणा-पत्र

### हृदय-परिवर्तन की पुकार

बर्फ की श्वेत चादर ओढ़े सोवियत संघ के उजबेकिस्तान में ताशकन्द शान्ति का प्रतीक बन विश्व के इतिहास में अमर हो गया है।

१९६५ में भारत-पाक के भीषण-युद्ध में मानवता का संहार होते देख सोवियत प्रधान मन्त्री श्री कोसीगन ने १७ सितम्बर, ६५ को भारत और पाकिस्तान से ताशकन्द में आकर मित्रतापूर्ण वातावरण में अपने विवादों को बातचीत द्वारा तय करने का निमन्त्रण दिया।

शान्तिदूत, भारतलाल, लालबहादुरशास्त्री ने श्री कोसीगिन के प्रयत्नों और निमन्त्रण को स्वीकार करते हुए कहा था, "हम पाकिस्तान के साथ पारस्परिक संबन्धों को सुधारने की बातचीत करने को हर समय प्रस्तुत हैं, यदि पाकिस्तान यह स्वीकार कर ले कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है।" अपने इस कथन में शास्त्री जी ने भारत के लोकमत को व्यक्त कर सारे भारत का हृदय जीत लिया। भारत पर पाकिस्तानी आक्रमण लादा गया। और भारत ने इस शान्तिप्रिय नीति को चुनौती समझ कर स्वीकार किया। भारत ने युद्ध का उत्तर युद्ध से दिया। और जिस पाकिस्तान ने रूस के उक्त निमन्त्रण को सितम्बर में स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था, भारत की फ़ौजों से मात खाकर उसी पाकिस्तान ने नवम्बर से यह निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

शास्त्री जी विश्व में युद्धों को समाप्त कर स्थायी शान्ति स्थापना के प्रयत्नों में लगे थे। उन्होंने महात्मा गांधी और नेहरू के

अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का भार अपने कन्धों पर लिया था। बलप्रदर्शन के स्थान पर हृदय परिवर्तन, घृणा के स्थान पर सद्भाव और प्रतिद्वन्द्विता के स्थान पर सहयोग इत्यादि नीतियों पर ही भारत सदा चला है। इसी भावना से प्रेरित होकर शास्त्री जी ने ताशकन्द यात्रा स्वीकार की।

श्री लाल बहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अय्यूबखां परस्पर मिलने और भारत तथा पाकिस्तान के वर्तमान सम्बन्धों पर विचार-विनिमय करने के लिए ताशकन्द गये।

संघर्षों में चट्टान की तरह स्थिर, निर्णयों में विवेक की पराकाष्ठा पर पहुंचे हुए, मानवीयता कुसुमवत् कोमल श्री शास्त्री जी की वह विदाई की मुद्रा उन करोड़ों देशवासियों के हृदयों में अंकित होकर रह गई है, जिन्होंने उनके नेतृत्व में देश की प्रतिष्ठा को अन्तर्राष्टिय क्षेत्र में ऊपर तक उठते हुए देखा है। ओठों पर सहज मुस्कान, आंखों में निश्चय की चमक, विदाई के लिए ऊपर उठ कर जुड़े हुए हाथों में दृढ़ता के साथ-साथ समूची मानवता के प्रति सहज आत्मीयता शास्त्री जी की विशेषता थी।"

विचार-विमर्श करने के पश्चात् १० जनवरी को अपराह्न काल में एक संयुक्त घोषणा पर हस्ताक्षर किये गये। इस घोषणा पत्र में दोनों देशों का भविष्य में शक्ति प्रयोग न करने का निर्णय है। वह घोषणा-पत्र निम्न प्रकार है:—

(१) भारत के प्रधानमन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ताशकन्द में मिलने और भारत तथा पाकिस्तान के वर्तमान सम्बन्धों पर विचार-विमर्श करने के बाद अपने दृढ़-संकल्प की घोषणा करते हैं कि ये दोनों अपने देशों के बीच सामान्य और शान्तिपूर्ण सम्बन्ध पुनः स्थापित करने और दोनों देशों की जनता के बीच आपसी सद्भाव और मैत्री के सम्बन्ध बढ़ाने में सक्रिय रहेंगे। भारत और पाकिस्तान के ६० करोड़ निवासियों के कल्याण के लिए वे इन

उद्देश्यों को प्राप्ति को अत्यधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं। भारत के प्रधान-मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति एकमत हैं कि दोनों पक्ष, संयुक्तराष्ट्र घोषणापत्र के अनुसार भारत और पाकिस्तान के बीच अच्छे पड़ोसियों-जैसे सम्बन्ध स्थापित करने का प्रत्येक सम्भव उपाय करेंगे। घोषणा पत्र के अन्तर्गत वे अपने दायित्व के प्रति अपनी निष्ठा पुनः प्रकट करते हैं कि वे शक्ति प्रयोग न करेंगे और अपने आपसी झगड़ों का निपटारा शान्तिपूर्ण प्रयासों से ही करेंगे। वे दोनों मानते हैं कि दोनों देशों के बीच तनाव बढ़े रहने से उनके भूभाग और विशेष रूप से भारत-पाकिस्तान उपमहाद्वीप में शान्ति की, एवं भारत तथा पाकिस्तान के निवासियों के हितों की रक्षा नहीं हो सकती। इसी पीठिका में जम्मू और कश्मीर पर विचार-विमर्श किया गया और प्रत्येक पक्ष ने अपनी स्थिति को स्पष्ट किया।

(२) भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने स्वीकार कर लिया है कि दोनों देशों के सशस्त्र सैनिक अधिक से अधिक २५ फरवरी १९६६ तक उन ठिकानों तक वापिस पहुंचा दिये जायेंगे जहां पर वे ५ अगस्त १९६५ से पहले थे, और दोनों पक्ष युद्ध-विराम रेखा पर युद्ध-विराम की शर्तों का पालन करेंगे।

(३) भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति—दोनों ने स्वीकार कर लिया है कि भारत और पाकिस्तान के पारस्परिक सम्बन्ध इस सिद्धान्त पर आधारित होंगे कि वे एक-दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

(४) भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने मान लिया है कि दोनों पक्ष एक-दूसरे के विरुद्ध प्रचार को रोकेंगे और ऐसे प्रचार को बढ़ावा देंगे जिससे दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की वृद्धि हो।

(५) भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने स्वीकार किया है कि पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त, और भारत

में पाकिस्तान के उच्चायुक्त अपने-अपने पदों पर लौटेंगे और दोनों देशों के दूतावास पुनः सामान्य ढंग से काम करने लगेंगे। दोनों सरकारें अपने दौत्य-सम्बन्धों के सम्बन्ध में १९३१ के बीएना-समझौते का पालन करेंगी।

(६) भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने, भारत और पाकिस्तान के बीच आर्थिक और व्यापारिक सम्बन्धों, संचार-व्यवस्था तथा संस्कृति विनिमय की पुनः स्थापना करना तथा भारत और पाकिस्तान के बीच वर्तमान समझौतों को कार्य-रूप देने के उपाय करना स्वीकार कर लिया है।

(७) भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने अपने-अपने सम्बन्धित अधिकारियों को युद्धबन्दियों की अदला-बदली के निर्देश देना स्वीकार कर लिया है।

(८) भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने मान लिया है कि दोनों पक्ष शरणार्थियों की समस्याओं तथा गैर-कानूनी प्रवासियों के निष्कासन से सम्बद्ध प्रश्नों पर विचार-विमर्श करते रहेंगे। उन्होंने माना कि दोनों पक्ष वे परिस्थितियां उत्पन्न करेंगे कि जिनमें नागरिक अपने-अपने देश न छोड़ें। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि संघर्ष के दौरान एक पक्ष ने दूसरे पक्ष की जो सम्पत्ति जब्त कर ली थी, उसकी वापसी के बारे में भी वे वार्ता चालू रखेंगे।

(९) भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति सहमत हैं कि दोनों देश पारस्परिक समस्याओं के बारे में उच्चतम अथवा अन्य स्तरों पर विचार-विमर्श करते रहेंगे। दोनों पक्षों ने संयुक्त भारतीय-पाकिस्तानी समितियों की अनिवार्यता को मान लिया है, जो अपनी-अपनी सरकारों को अपनी रिपोर्ट देंगी ताकि आगे की कार्यवाहियां निर्धारित की जा सकें।

भारत के प्रधान मन्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति, सोवियत संघ के नेताओं के तथा व्यक्तिगत रूप से सोवियत संघ के प्रधानमन्त्री के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं कि उन्होंने इस बैठक का आयोजन किया, जिसकी दोनों पक्षों के लिए सन्तोषजनक परिणति हुई। वे उजबेकिस्तान की सरकार और जनता के प्रति भी कृतज्ञ हैं कि उन्होंने उनका स्वागत और अन्य आतिथ्य किया।

वे सोवियत संघ के प्रधान मन्त्री को इस घोषणा पत्र के साक्षी रहने का आमन्त्रण देते हैं।

ह०—भारत के प्रधान मन्त्री
लाल बहादुर शास्त्री
ह०—पाकिस्तान के राष्ट्रपति
मुहम्मद अय्यूब खां
(साप्ताहिक 'दिनमान' से साभार)

## ताशकंद की ज्योति

नई दिल्ली, १७ फरवरी (यु. न्यू)। श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित ने आज लोकसभा में ताशकन्द-घोषणा पर बहस के दौरान कहा—संसार में दो तरह के लोग होते हैं—कुछ हमेशा अन्धकार को कोसते रहते हैं और कुछ अन्धकार दूर करने के लिए ज्योति जगाते हैं। उन्होंने कहा श्री लालबहादुर शास्त्री ने ताशकन्द में ज्योति जलाई है। हमें आशा करनी चाहिए कि यह ज्योति सदा हमारा मार्ग प्रकाशित करती रहेगी (हर्ष ध्वनि)।

## श्री शास्त्री का राष्ट्रपति जानसन को पत्र

राष्ट्रपति जानसन अन्य प्रमुख वस्तुओं के साथ स्व. श्री लालबहादुर शास्त्री के पत्र को भी आगन्तुकों को दिखाते हैं। यह पत्र श्री शास्त्री द्वारा मृत्यु से कुछ दिन पूर्व ताशकन्द से उनको लिखा गया था।

यह पत्र उस मिशन के सम्बन्ध में है, जो अमरीका के राष्ट्रपति के विशेष दूत के रूप में भारत आने पर श्री हेरीमन ने उनको दिया था कि वे सोवियत नेताओं को बतायें कि राष्ट्रपति जानसन वियतनाम में शान्ति के नाम के इच्छुक हैं।

बताया जाता है कि श्री शास्त्री ने यह कार्य किया और सोवियत प्रधानमन्त्री श्री कोसीगिन से कहा कि यद्यपि कोई व्यक्ति चाहे अमरीका की नीति से सहमत न भी हो तो अमरीका ईमानदार है।

राष्ट्रपति जानसन उस पत्र से इतने प्रभावित हुए हैं कि वह उसको अपनी जेब में रखते हैं। उक्त पत्र को वह आगन्तुकों को दिखाते हैं एवं श्री शास्त्री और भारत की शान्ति के स्वीकारोक्ति की प्रशंसा करते हैं।

## काल की गति

मेरे मन कछु और है, कर्त्ता के कछु और।

भारत देश आशा लगाये बैठा था, और प्रतीक्षा कर रहा था कि कब हमारा प्यारा नेता ताशकन्द से वापिस आये, और हम उसका स्वागत करें। उसके आगमन की प्रतीक्षा में देशवासियों ने अपनी आंखें बिछा रखी थीं। किन्तु विधाता को यह पसन्द नहीं था, वह तो कुछ और ही चाहता था। उसने जो चाहा वही हुआ। उसके सामने किसकी चल सकती है।

रत्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे
हा हन्त हन्त नलिनी गज उज्जहार॥

कमल के अन्दर बन्द भौंरा सोच रहा था कि कब रात्रि बीतेगी,

कब सबेरा होगा, कब सूर्य उगेगा, कब यह कमल खिलेगा और कब मैं बाहर निकलूंगा। बेचारा सोच ही रहा था कि एक हाथी आया और उसने कमल को तोड़ डाला। बेचारा भौंरा अन्दर का अन्दर ही रह गया।

१० जनवरी को सायंकाल, ताशकन्द समझौते के उपरान्त वे कोसीगिन द्वारा दिए गए स्वागत समारोह में सम्मिलित हुए। रात्रि को लगभग साढ़े ९ बजे वे अपने निवास स्थान पर वापिस पहुंचे और उन्होंने दिल्ली को टेलीफोन करके अपने पुत्र, दामाद एवं पत्नी से बातचीत की। अपनी पत्नी को उन्होंने कहा कि मैं रास्ते में काबुल होता हुआ कल दिल्ली पहुंच रहा हूं। रात्रि को ११ बजे शास्त्री जी ने टेलिफोन पर स्वराष्ट्र मन्त्री श्री गुलजारी लाल नन्दा को ताशकन्द-घोषणा के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश सुनाये और उनसे हास्यपूर्वक काबुल में एक दिन अधिक रुकने की अनुमति चाही। तत्पश्चात् शास्त्री जी अपने कमरे में बैठे कुछ लिख रहे थे कि कई भारतीय फोटोग्राफर वहां पहुंच गये और उनसे अनुमति लेकर उन्होंने कमरे में ही शास्त्री जी के कुछ फोटो खींचे, और उन्हें नमस्कार कर चले गये। बेचारे उन पत्रकारों को क्या पता था कि वे अपने प्रधानमन्त्री के जीवित रूप में अन्तिम चित्र ले रहे हैं और विदाई के रूप में उन्हें अन्तिम नमस्कार कर रहे हैं।

अपनी दिनचर्या पर विचार करने के लिए रात का एकान्त सर्वश्रेष्ठ समय होता है। पत्रकारों के चले जाने के उपरान्त शास्त्री जी को एकान्त मिला। शास्त्री जी ने दिन में ही ताशकन्द-समझौते पर हस्ताक्षर किये थे। वे भारत को यह विश्वास देकर रूस आये थे कि हाजीपीर दर्रा और कारगिल-जैसे सामरिक और भारत के अभिन्न अंग कश्मीर से विजयी भारत की सेनाओं को पीछे नहीं हटाएंगे। उनकी आत्मा भारतीय जनता के प्रति दिये गए विश्वास भंग को सहन न कर सकी और फलस्वरूप सोने के लगभग घण्टा-सवा घण्टा

पश्चात् ही एक बजकर बीस मिनट पर वे खांसते और लड़खड़ाते हुए अपने कमरे से "डाक्टर-डाक्टर" चिल्लाते निकले और पास के कमरे में, जहाँ उनके निजी डाक्टर सो रहे थे, जाने का प्रयत्न किया उनकी आवाज सुनकर, पास के कमरे से उनके निजी कर्मचारी, जो काबुल जाने के लिए सामान बांध रहे थे, शास्त्री जी को उनके कमरे में ले गये और बिस्तर पर लिटा दिया। उनके निजी चिकित्सक को बुला लाए। चिकित्सक तत्काल प्रधानमन्त्री के पास पहुंचे। उस समय शास्त्री जी अपने बिस्तर पर बैठे खांस रहे थे और वायु की कमी की शिकायत कर रहे थे। उन्होंने अपने हाथों से अपनी छाती को दबा रखा था। उनका रंग पीला पड़ गया था। उनकी नब्ज की गति बड़ी तेज थी, धमनी का दबाव ज्ञात नहीं हो सका और दिल की धड़कन भी कठिनता से अनुभव की जा सकी। डाक्टर ने उन्हें एक इंजेक्शन दिया।

तीन मिनट बाद प्रधानमन्त्री बेहोश हो गये। नब्ज बन्द हो गयी, श्वास भी रुक गया और दिल की धड़कन जरा भी सुनाई न दी। दैव का ऐसा दुर्विपाक कि देश के संकटपूर्ण क्षणों में, नाटकीयता से सर्वथा अछूता यह व्यक्ति अत्यन्त नाटकीय ढंग से, वह भी ऐसे समय, जब भारत और पाकिस्तान के कटु सम्बन्धों में सुधार की आशा जाग रही थी और देश को उनके नेतृत्व की पहले से भी अधिक आवश्यकता थी। उनसे हमारा लोकप्रिय, दृढ़निश्चयी, नेता ११ जनवरी सन् १९६६ की रात को प्रभात से पूर्व १ बज कर ३२ मिनट पर हमसे सहसा छीन लिया।

समाचार पाते ही रूस के प्रधान मन्त्री श्री कोसीगिन वहां पहुंच गये और एक दर्जन से अधिक उच्च रूसी डाक्टर भी आ गये। डाक्टरों ने एक घण्टे तक शास्त्री जी में कृत्रिम श्वास द्वारा जान लाने का अनथक प्रयत्न किया, लेकिन सब व्यर्थ ही हुआ।

विश्व के महानतम लोकतन्त्र का सबसे महान् नेता, विचारधारा

में गंगा से पवित्र और हिमालय से ऊंचा, दुबले-पतले और छोटे-से शरीर में महान् राष्ट्र की असीम शक्ति को संजोये, भारतीय संस्कृति का तपस्वी, विचारक, अपने देश से हजारों कोस दूर जहां उसका अपना सगा-सम्बन्धी कोई नहीं था, अपने प्रिय राष्ट्र को—जिसके सुख के लिए उसने अपने जीवन के प्रारम्भकाल से ही प्रयत्न किये—शोक-सन्तप्त और रोता-बिलखता छोड़कर महान् निर्वाण-पद को प्राप्त हो गया। जब तक सूर्य और चन्द्रमा विद्यमान रहेंगे, उस दिव्यमूर्ति की अक्षय कीर्ति भी स्थायी रहेगी।

उस महान् आत्मा के प्रति कोटिशः प्रणाम!

---

## अन्तिम कामना

निधन से कुछ समय पूर्व प्रधानमन्त्री श्री शास्त्री जी ने रक्षामन्त्री श्री चह्वाण से वार्ता करते हुए जो सन्देश जनता को दिया वह महत्त्व पूर्ण है।

प्रधानमन्त्री ने कहा था कि हमने जिस बहादुरी के साथ लड़ाई लड़ी, अब उसी बहादुरी के साथ शान्ति के लिए भी लड़ेंगे।

## महा प्रयाण

शास्त्री जी के इस शोक-समाचार से हम ही नहीं रोए, सम्पूर्ण विश्व के शान्तिप्रिय नागरिक रो पड़े। रूस के प्रधान मन्त्री श्री कोसीगीन तो शव के सम्मुख खड़े अविरल अश्रुधारा बहा रहे थे। उनके राष्ट्र में किसी अन्य राष्ट्र के प्रधान मन्त्री की मृत्यु हो जाये, यह बात उनके लिए बिजली गिरने से भी बढ़कर कष्टदायी थी। विश्व के इतिहास में यह प्रथम ही उदाहरण है।

शवयात्रा का सम्पूर्ण प्रबन्ध श्री कोसीगिन ने स्वयं अपने निरीक्षण में किया। ताशकन्द-रेडियो ने प्रातः ही यह समाचार प्रसारित

कर दिया और तत्पश्चात् भारतीय शोकधुन भी बजानो आरम्भ कर दी।

शास्त्री जी का शव रूसी सेना की तोपगाड़ी पर रख कर ताश-कन्द हवाई अड्डे पर लाया गया। जैसे-जैसे तोपगाड़ी गुजरती थी, कड़कड़ाती सर्दी में भी शवयात्रा के निर्दिष्ट मार्ग पर भारत के प्रधान मन्त्री को अपनी अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित करने और उनके अन्तिम दर्शन करने के लिए उपस्थित दस लाख रूसी नर-नारियों की आंखों से आंसू और आह की आवाज निकलती थीं। वे फूट-फूट कर रो रहे थे।

सबसे अधिक मर्मस्पर्शी दृश्य ताशकन्द के हवाई अड्डे पर था, जहां पाकिस्तान के राष्ट्रपति अय्यूब ने दिवंगत भारतीय नेता को, अपनी अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित की। रूसी प्रधान मन्त्री श्री कोसीगिन ने तथा इनके इशारे पर पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री अय्यूब ने कन्धा देने वालों का नेतृत्व किया। भारत के रक्षामन्त्री श्री चह्वाण, विदेशमन्त्री सरदार स्वर्णसिंह तथा रूस-स्थित भारतीय राजपूत श्री कौल भी कन्धा देने वालों में थे।

शव को विमान पर रखते ही उसे तोप से सलामी दी गयी। ११ जनवरी को दिन के ११ बजे रूसी विमान भारत के प्रिय नेता के शव को लेकर उसकी पुण्यभूमि भारत की ओर प्रस्थान कर गया।

दिल्ली में, ११ जनवरी के दोपहर से ही, बच्चा-बच्चा अपने प्रिय नेता के अन्तिम दर्शन करने को मचल उठा। शास्त्री जी के निवास-स्थान १० जनपथ से पालम हवाई अड्डे तक सड़कों के दोनों ओर लाखों लोग खड़े थे। हवाई अड्डे पर तो तिल रखने की भी जगह नहीं थी। सब चुप और शान्त थे। रूसी विमान दोपहर बाद २॥ बजे शास्त्री जी के शव को लेकर पालम हवाई अड्डे पर पहुंचा। शव का सत्कार करने और अन्तिम दर्शन करने के लिए

देश के सभी प्रतिष्ठित अधिकारी और विदेशी राजदूत पहले से ही विद्यमान थे। लाखों की भीड़ में सन्नाटा छाया हुआ था और इस सन्नाटे में सुनाई पड़ रही थी शास्त्री जी के परिवार की करुण-क्रंदन की ध्वनि। इसे सुनकर लोगों की आंखों से भी बरबस अश्रुधारा बह रही थी।

विमान के उतरते ही, उसमें से जब शव के साथ आये हुए सज्जन बाहर निकल चुके तब रक्षा मन्त्री श्री चव्हाण शास्त्री जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री हरिकृष्ण को विमान के अन्दर दर्शनार्थ ले गए। पिता के दर्शन कर हरिकृष्ण बिलख पड़े और श्री चव्हाण से लिपट कर फूट-फूट कर रोने लगे। तत्पश्चात् शव को बाहर निकाला गया। शव के बाहर आते ही जन-जन रो पड़ा। सबकी अश्रुधारा फूट पड़ी।

सैनिक सम्मान के साथ शव को तोपगाड़ी पर रखा गया। शव पर सब प्रमुख नेताओं ने अपनी श्रद्धा के रूप में पुष्पमालाएं चढ़ाईं। सैनिक कार्यवाही के उपरान्त तोपगाड़ी शव को लेकर इनके निवास-स्थान की ओर चल पड़ी।

जन-जन के प्यारे शास्त्री जी के चेहरे पर अब भी शान्ति थी और उनका शव गुलाब और गेंदे के फूलों से सज्जित था।

सम्पूर्ण राष्ट्र के भार को अपने कन्धों पर उठाने वाले कर्मयोगी आज स्वयं दूसरों द्वारा कन्धों पर उठाया जा रहा है।

शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती ललितादेवी उस छोटे कमरे में शोक में डूबी हुई थीं जो शास्त्री जी के सोने का कमरा था। शास्त्री जी के निवास स्थान पर लगभग ३० पण्डित गीता का अखण्ड पाठ कर रहे थे। चार बजकर १० मिनट पर शास्त्री जी के शव को अन्दर दाखिल करने के लिए उनकी कोठी का दरवाजा खुला। ज्योंही तोपगाड़ी शास्त्री जी की वृद्धा मां को दिखाई दी, वह जोरों

से चिल्ला पड़ी—हा ! क्या यह वास्तव में सच है ! शव को देखकर उनकी पत्नी और परिवार के सब जन शोक से विह्वल हो गये और बच्चे सिसकियाँ भर कर कहने लगे—'बाबू जी, आप कहाँ गए ?' शव के सब धार्मिक संस्कार कराए गए और तत्पश्चात् पौने पाँच बजे वह शव विशेष रूप से बनाए गए ९ फुट ऊंचे मंच पर रख दिया गया ताकि जनता अपने प्रिय नेता के दर्शन कर सके और अन्तिम श्रद्धांजलि दे सके।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

यह आत्मा न तो कभी जन्मता है और न मरता ही है। एक बार होकर फिर भी होता है। यह अज, नित्य, शाश्वत और पुरातन है। शरीर का वध हो जाय तो भी आत्मा नहीं मारी जाती।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, आग नहीं जला सकती, पानी गला नहीं सकता और वायु सुखा नहीं सकता।

देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिः धीरस्तत्र न मुह्यति॥

जिस प्रकार देहधारी को इस देह में बालपन, यौवन और बुढ़ापा प्राप्त होता है, उसी प्रकार एक देह से दूसरी देह प्राप्त हुआ करती है। इसलिए इस विषय में ज्ञानी-पुरुष को मोह नहीं करना चाहिए।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यानि संयाति नवानि देही॥

जिस प्रकार कोई मनुष्य अपने पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार शरीरधारी अपने पुराने शरीर को त्यागकर नया शरीर धारण करता है।

शास्त्री जी के निवास-स्थान से शान्तिवन तक शव-यात्रा १२ जनवरी को प्रातः ६॥ बजे प्रारम्भ हुई। इस यात्रा का वर्णन करते लेखनी थर-थर कांपती है और हृदय विदीर्ण होता है। इसलिए इस दारुण कथा को यहीं विराम दिया जा रहा है। तब सर्वत्र शोक का ही साम्राज्य था। सारे मार्ग में शास्त्री जी का जय-जयकार लाखों लोगों ने किया और सड़कों के दोनों ओर से, बरामदों से, छज्जों से तथा छतों से शव पर पुष्पवर्षा होती रही।

शव शान्तिवन पहुंचा। अन्त्येष्टि-क्रिया के लिए ६ फुट ऊंचा १५ वर्गफट का एक चबूतरा बनाया गया। सैनिक सम्मान के साथ शव को चन्दन की चिता पर रखा गया। दाह संस्कार पण्डितों ने वैदिक विधि से सम्पन्न कराया। शव १२ बजकर १७ मिनट पर चिता पर रखा गया और उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री हरिकृष्ण ने १२ बजकर ३२ मिनट पर चिता को प्रज्वलित किया और उसकी परिक्रमा की थोड़ी ही देर में चिता धू-धू कर जल उठी।

भारत के सपूत और ४४ करोड़ लोगों के प्यारे लालबहादुर का पंचभौतिक शरीर पंच तत्वों में मिल गया। मिट्टी का पुतला मिट्टी बन गया। लालबहादुर का पार्थिव शरीर तो जलकर खाक हो गया, किन्तु उनकी आत्मा अमर हो गई और उनकी धवल-कीर्त्ति दिग्दिगन्त में व्याप्त हो गई जो अनन्त काल तक स्थायी रहेगी।

लालबहादुर शास्त्री की जय हो ! लालबहादुर अमर रहें।
लालबहादुर शास्त्री तुझे हमारा अन्तिम नमस्कार !

---

## जय जवान—जय किसान

देश में जब स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष छिड़ा हुआ था, और महात्मा

जी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन पूरे यौवन पर था, उस समय देशवासियों का नारा 'वन्दे मातरम्' था। देश के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् हमारे प्रधानमन्त्री नेहरू जी ने देश को 'जय हिन्द' का नारा दिया। नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने अपनी हिन्द फौज में यही नारा लगाया था, इसे ही नेहरू जी ने भी स्वीकार किया। जब शास्त्री जी प्रधान मन्त्री बने, देश की अनेक समस्यायें उनके सामने थीं। इतने में पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया और उससे युद्ध छिड़ गया। शास्त्री जी के मस्तिष्क में दो समस्याएं मुख्य रूप से विद्यमान थीं। एक देश की सुरक्षा और दूसरी देश में गरीबी तथा खाद्य-समस्या का अन्त। देश की सुरक्षा के लिए उन्होंने सैनिकों का हौंसला बढ़ाने के लिए 'जय जवान' कहा और उपज बढ़ाने के लिए कृषकों को प्रोत्साहन देने के लिए उन्होंने 'जय-किसान' कहा।

१० अक्तूबर १९६५ को आकाशवाणी से देश के नाम सन्देश प्रसारित करते हुए आपने कहा—'वक्त बहुत नाजुक है, खतरा अभी टला नहीं है। संकट के समय में बहादुर जवानों ने जो रास्ता दिखाया है, क्या हमारे किसान उससे पीछे रह सकते हैं ? जवान अपना खून बहा रहा है, देश के लिए अपनी जान की बाजी लगाए बैठा है। किसान को अपनी मेहनत और अपना पसीना देना है। किसान हमारे देश के प्राण हैं। उन्हें आज लाखों की तादाद में उत्साह और मेहनत से खेती में जुट जाना है। उनके सामने एक ही मन्त्र है। अनाज की पैदावार बढ़ाओ। हम दूसरे देशों पर निर्भर न रहें। हम अपनी आजादी को संन्जोये रखें। हम पर जो कुछ बीते, पर देश का सम्मान बना रहे। हमें आत्मनिर्भर, शक्तिशाली देश बनाना है, और बनाकर रहेंगे। इन शब्दों के साथ शास्त्री जी ने देश को 'जय जवान—जय किसान' का नारा दिया, जो शास्त्री जी के हृदय और देश की वास्तविक स्थिति को व्यक्त करता है।

# श्रीमती ललिता देवी जी

हमारे श्रद्धेय प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी की साध्वो धर्मपत्नी श्रीमती ललितादेवी शास्त्री भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की प्रतिमूर्ति हैं। प्राचीन भारतीय परम्परा और धर्म में वे एकनिष्ठा से विश्वास रखती हैं। निम्न पंक्तियों से उनके जीवन का सम्पूर्ण चित्र स्पष्ट रूप से झलक रहा है :—

श्री शास्त्री जी के देहावसान के बाद उत्तर प्रदेश के कुछ कांग्रेसी नेताओं ने श्रीमती ललिता जी से एक भेंट का आग्रह किया कि वे सरकार द्वारा निर्धारित पेंशन लेना स्वीकार कर लें, तो उन्होंने उत्तर दिया कि अपने बच्चों के लिए पेन्शन व छात्रवृत्ति स्वीकार करना सम्भवतः मेरे पति की प्रतिष्ठा, आदर्शों एवं इच्छाओं के अनुपयुक्त होगा। आगे उन्होंने कहा कि यदि राज्य-सरकार भी शास्त्री जी के निर्वाचन-क्षेत्र (मेना) में कहीं भूमि का एक टुकड़ा उपहार में दे तो उसे स्वीकार कर सकती हैं। क्योंकि उन की इच्छा है कि वे ग्रामीणों के बीच में रहकर एक गांधी-केन्द्र स्थापित करें। इस केन्द्र में वे महिलाओं को सीना-पिरोना व अन्य वस्तुएं बनाना सिखाना चाहती हैं।

श्रीमती शास्त्री का विचार है कि जनता की सेवा करते हुए अपने गांव के मकान में रहना ही उनकी अपने पति के प्रति सर्वोत्तम श्रद्धांजलि होगी।

श्रीमती ललिता जी के इन विचारों में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की परम्परा की पावन धारा अजस्र रूप में प्रवाहित हो रही है। भारतीय जीवन सदैव त्याग और बलिदान का समर्थक रहा है, उसमें राष्ट्र हितों और समाज-कल्याण की भावनाओं को उच्च स्थान प्राप्त होता है, और स्वार्थ को तुच्छ मान कर उस का सर्वथा त्याग रहता है। भारतीय जनमानस नित्य भव्यभावों से ओत-प्रोत रहा है। भारत

का भाल उन्नत करने में धर्मपरायणा भारतीय ललनाओं का महत्व-पूर्ण योगदान रहा है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति की यही विशेषता है।

श्रीमती ललिता जी के इन विचारों से उनके पतिव्रत धर्म, त्याग, सरलता, विनय और साधुता तथा भारतीय संस्कृति में एक निष्ठा आदि गुणों का परिचय मिलता है।

श्री लालबहादुर शास्त्री में जो गुण थे, वही गुण उनकी धर्म-पत्नी में भी हैं। वह शास्त्री जी की छाया के समान सदा उनकी अनुचरी, सहधर्मिणी, पतिव्रता भारतीय नारी हैं। इसी प्रकार की महिलाओं के कारण—

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमां हमारा॥

## सौराष्ट्र के राजाओं द्वारा शास्त्री जी के परिवार को सहायता

राजकोट, १७ फरवरी (यु० न्यू) सौराष्ट्र के भूतपूर्व राजाओं ने स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के परिवार के लिए १०,००० रुपये दिए हैं।

यह निश्चय आज भूतपूर्व राजाओं की एक विशेष बैठक में किया गया। बैठक की अध्यक्षता पोरबन्दर के महाराणा नटवर सिंह जी ने की।

## श्री शास्त्री जी के जीवन-सम्बन्धी मुख्य घटना-क्रम

१९०४ : २ अक्तूबर :—बनारस जिले के मुगलसराय में जन्म।
१९०६ : पिता की मृत्यु।
१९०९ : प्रारम्भिक शिक्षा, स्थानीय हरिश्चन्द्र स्कूल में।
१९२१ : स्कूल छोड़कर असहयोग आन्दोलन में भाग लिया और जेल की सजा पाई।

१९२१ : पुनः शिक्षा, काशी विद्यापीठ में।
१९२५ : शास्त्री की उपाधि प्राप्त की।
१९२६ : लोक सेवक मण्डल के आजीवन सदस्य।
१९२८ : श्रीमती ललिता देवी से विवाह।
१९२९ : ३१ दिसम्बर : कांग्रेस के लाहौर-अधिवेशन में पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव सुना।
१९३० : नमक-सत्याग्रह में २॥ वर्ष की जेल।
१९३५ : यू. पी. कांग्रेस कमेटी के महासचिव।
१९३७ : यू. पी. की विधान सभा के सदस्य।
१९४२ : भारत छोड़ो-आन्दोलन में ३ वर्ष का कारावास।
१९४५ : यू. पी. के पार्लियामेण्टरी सेक्रेटरी।
१९४६ : यू. पी. के पुलिस व परिवहन के मन्त्री।
१९४७ : यू. पी. के पुलिस व परिवहन के मन्त्री।
१९५१ : यू. पी, के मन्त्रिपद से त्यागपत्र, अ. भा. कांग्रेस के महासचिव।
१९५१ : आम चुनावों का संगठन किया।
१९५२ : नवम्बर :—राज्य सभा के लिए निर्वाचित, केन्द्र में रेलवे तथा परिवहन मन्त्री।
१९५६ : दुर्घटना के रेलवे मन्त्री-पद से त्यागपत्र।
१९५७ : इलाहाबाद से लोकसभा के लिए निर्वाचित।
१९५७ : मई :—केन्द्र में परिवहन व संचार मन्त्री।
१९५८ : केन्द्र में उद्योग व वाणिज्य मन्त्री।
१९६१ : ४ अप्रैल :—पं० पन्त की मृत्यु के बाद गृहमन्त्री।
१९६२ : लोकसभा के लिए पुनः निर्वाचित होकर गृहमन्त्री बने।
१९६३ : अगस्त:—कामराज-योजना में मन्त्रिपद से त्यागपत्र।
१९६४ : २४ जनवरी :—निर्विभागीय मन्त्री।

१९६४ : हजरतबल में पवित्र बाल की चोरी से उत्पन्न विषम स्थिति को संभाला।

१९६४ : लोक सेवक मण्डल के अध्यक्ष।

१९६५ : २ जून : कांग्रेस संसदीय दल के नेता निर्वाचित, श्री नेहरू की घरेलू और विदेश नीति का अनुगमन करने की इच्छा व्यक्त की।

९ जून : प्रधान मन्त्री और अणुशक्ति-विभाग के मन्त्रीपद की शपथ ली।

जून :—योजनाकमीशन के चैयरमैन।

जुलाई : विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलपति।

१५ अगस्त : लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया। अपने भाषण में देश में अनाज की उपज बढ़ाने का आन्दोलन चलाने पर जोर दिया।

२ अक्तूबर : जन्म दिन पर हजारों देशवासियों द्वारा शुभ कामनाएं।

४ अक्तूबर : शास्त्री-टीटो वार्ता।

६ अक्टूबर : शास्त्री-नासिर संयुक्त विज्ञप्ति।

८ अक्टूबर : तटस्थ सम्मेलन में भाषण। शांति के लिए पाँच सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत।

१२ अक्टूबर : कराची में श्री अय्यूब से बातचीत।

२६ अक्टूबर : मुख्य मंत्रियों के सम्मेलन में भाषण मुनाफाखोरों के लिए कठोर व्यवस्था पर जोर।

२७ अक्टूबर : राष्ट्रीय विकास परिषद की २१वीं बैठक का उद्घाटन।

३ दिसम्बर : लन्दन में ब्रिटिश प्रधान मन्त्री से बात-चीत

१९६५ : २२ जनवरी : ट्राम्बे में प्लूटोनियम संयंत्र का उद्घाटन।

२४ जनवरी : शरावती योजना की पहली बिजली इकाई का उद्घाटन।

११ फरवरी : शास्त्री-नेबिन संयुक्त विज्ञप्ति ।
१८ फरवरी : अफगानिस्तान के प्रधानमन्त्री से दिल्ली में वार्ता ।
२३ अप्रैल : नेपाल की सद्भावना-यात्रा पर रवाना ।
१२ मई : रूस की ८ दिवसीय यात्रा पर मास्को पहुंचे ।
१० जून : कनाडा की यात्रा पर ओटावा पहुंचे ।
१७ जून : राष्ट्र मंडल सम्मेलन में भाग लेने लन्दन पहुंचे ।
२७ जून : श्री नासिर से काहिरा में बातचीत ।
८ जुलाई : पाकिस्तान से युद्ध-वर्जन का प्रस्ताव दोहराया ।
३० जुलाई : ब्रियानी में श्री टीटो से भेंट ।
३ अगस्त : श्री शास्त्री तथा श्री मिल्टन ओबोते की बातचीत ।
१४ अगस्त : राष्ट्र के नाम सन्देश में कहा कि ताकत का जवाब ताकत से दिया जायेगा ।
१२ सितम्बर : ऊ थांट से बातचीत की ।
१८ सितम्बर : चीन के अल्टीमेटम को अस्वीकृत किया ।
२४ सितम्बर : रूस के इस आमन्त्रण को स्वीकार किया कि श्री शास्त्री और अय्यूब की शिखर वार्ता हो ।
२ अक्टूबर : सादगी से जन्मदिन मनाया ।
११ अटूक्बर : आकाशवाणी से सन्देश में किसानों से उपज बढ़ाने की अपील की ।
१३ अक्टूबर : अग्रिम मोर्चों तथा हवाई अड्डों पर गए ।
१५ अक्टूबर : स्यालकोट क्षेत्र तथा कुछ हवाई अड्डों का निरीक्षण किया ।
१९ अक्टूबर : औरंगाबाद में श्री शास्त्री ने कहा कि भारत की नीति परमाणु बम बनाने की नहीं है ।
२४ अक्टूबर : जोधपुर में जेल अस्पताल देखा ।
२३ नवम्बर : राज्य सभा में बताया कि ताशकन्द में श्री अय्यूब से बातचीत करने को तैयार हैं ।

२७ नवम्बर : नेपाल के महाराजा से बातचीत का आरम्भ।

१० दिसम्बर : लोकसभा में आगामी विदेश यात्रा के कार्यक्रम की घोषणा। २० दिसम्बर से २३ दिसम्बर तक बर्मा में रहेंगे। ४ जनवरी १९६६ को ताशकन्द वार्ता में भाग लेंगे और १ फरवरी १९६६ को अमेरिका में श्री जानसन से बात करेंगे।

२० दिसम्बर : रंगून में श्री शास्त्री तथा श्रीमती शास्त्री का भारी स्वागत।

२१ दिसम्बर : रंगून में शास्त्री-नेविन बातचीत।

१९६६ : ३ जनवरी : श्री अय्यूब खां से बातचीत के लिए ताशकन्द रवाना।

१० जनवरी : ऐतिहासिक ताशकन्द-समझौते पर हस्ताक्षर किए।

११ जनवरी : निधन।

---

# श्रद्धांजलियाँ

श्री शास्त्री जी की मृत्यु पर विश्व के कौने-कौने से संवेदना-सन्देशों का तांता लग गया। कुछ शोक-सन्देश इस प्रकार हैं :—

**शान्ति के लिए बलिदान—**

श्री लालबहादुर शास्त्री के अचानक देहान्त का समाचार पाकर जैसा आम लोगों को धक्का लगा है, वैसा ही मुझे भी लगा।

उन्होंने बड़े कठिन समय में अठारह महीने तक प्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा की। पण्डित जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु से जो स्थान रिक्त हुआ, उसे भरना कठिन था। कांग्रेस संसदीय दल ने शास्त्री जी को अपना नेता चुना और उन्होंने प्रधानमंत्री का पद ग्रहण किया।

स्वतन्त्रता-संग्राम में, और उत्तर प्रदेश के मंत्री के रूप में तथा बाद में भारत-सरकार के मंत्रीमण्डल के सदस्य के रूप में, उन्होंने जो काम किए, वे सर्वविदित हैं। स्वतन्त्रता के बाद के दिनों में श्री लालबहादुर शास्त्री ने कांग्रेस दल के संगठन का काम किया। वह शांत, सौम्य, पर दृढ़ संकल्प देशभक्त थे।

हमारे सामने खाद्य और वित्त आदि की कठिनाइयां तो थीं हीं, इसके अतिरिक्त कच्छ के रण में और जम्मू-काश्मीर में पाकिस्तान से युद्ध का भी संकट हमें झेलना पड़ा। इस आक्रमण का सामना करने में श्री शास्त्री जी ने देश का नेतृत्व किया। पाकिस्तान से समझौते की बातचीत करने के लिए वे ताशकन्द गए। वहां उन्होंने जो कठिन परिश्रम किया, और उन पर जो तनाव पड़ा, उससे उनके जीवन का अन्त हो गया। वे शान्ति के लिए प्रयत्न करते हुए, पिछली कटुता को भूलकर दोनों देशों में मित्रता और शान्ति का समझौता करते हुए मरे। मुझे आशा है कि इस बातचीत से दोनों देशों के रुख में नरमी आएगी। हमारी समस्याएं सेना के द्वारा हल नहीं हो सकतीं। दोनों देशों को यह समझना चाहिए कि यदि हम अपने विरोधी को फौजी शक्ति से हराने का प्रयत्न करते हैं तो हम से शत्रुता और द्वेष और बढ़ता है, और यदि हम अपने शत्रु को सद्भाव से जीतने का प्रयत्न करते हैं तो इससे मित्रता और शान्ति स्थापित होती है। बल और भय के ऊपर जो शांति स्थापित होती है, वह स्थायी नहीं हो सकती, वह स्थायी तभी हो सकती है जब वह न्याय और सत्य पर आधारित हो।

हमारा राष्ट्र अपने प्रिय नेता शास्त्रीजी के प्रति आभारी है, और आज उनके लिए गहरा शोक मना रहा है। हम यही कर सकते हैं कि अपने पड़ोसियों के साथ मित्रता और मेल से मिल जुलकर रहने का अपनी पूरी शक्ति से भरसक प्रयत्न करें।

मैंने दो-एक बार लालबहादुर शास्त्री जी से कहा था कि हम जो सबसे बड़ा सम्मान दे सकते हैं, वह 'भारतरत्न' का अलंकार है, और मैंने निश्चय किया था कि गणराज्य-दिवस पर उनको यह अलंकार देने की घोषणा करूं। अब मैं शोक के साथ उनकी मृत्यु के बाद उनको 'भारतरत्न' का सम्मान प्रदान करने की घोषणा करता हूं।

देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिः धीरस्तत्र न मुह्यति॥

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरो ऽपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

—डा० राधाकृष्णन
भारत के राष्ट्रपति

●

## वे सरलता और नम्रता की मूर्ति थे।

हमारे प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर जी शास्त्री गुजर गये। इस समाचार से सारे देश के लोगों को, बल्कि सारी दुनिया को धक्का लगेगा। आज राष्ट्र पर यह अचानक वज्रपात हुआ है। अभी केवल डेढ़ वर्ष पहले हमने अपने प्रिय नेता जवाहरलाल जी को खोया, और हमारे दिल अभी भी उनके शोक से भरे हुए हैं। अब हमको इस दूसरी गहरी और कभी पूरी न होने वाली क्षति को उठाना पड़ा है।

पिछला डेढ़ वर्ष देश के लिए बड़ी चिन्ता और कष्ट का रहा है। इन घड़ियों में शास्त्री जी ने बड़ी दृढ़ता से देश की बागडोर संभाली। वे सरलता और नम्रता की मूर्ति थे। साथ ही वे अत्यन्त दूरदर्शी, बड़े बुद्धिमान और परिपक्व मस्तिष्क के व्यक्ति थे। देश की सेवा में वे एक क्षण भी विश्राम नहीं लेते थे। उनकी मृत्यु भी महान् और अथक प्रयत्न के बाद सम्मानपूर्वक शांति स्थापित करने के क्षणों में हुई।

उन्होंने जो समझौता किया है, उसे हम सच्चे दिल से पूरा करेंगे। यह समझौता हमारे देश की परम्परा के अनुकूल है और गांधी जी के जवाहरलाल जी ने जो परिपाटी डाली है, और जिस का लालबहादुर जी ने बड़ी योग्यता और सचाई के साथ पालन किया है, उसके अनुकूल है।

आज सारा राष्ट्र उनके शोक में विह्वल है। मैं तो इस धक्के से स्तब्ध रह गया हूं। परन्तु उनके लिए आंसू गिराने के साथ-साथ हमें उस काम को भी उठाना है, जिसके लिए वे जिए और मरे। वह काम है—देश को साधारण जनता की भलाई और राष्ट्र की एकता और शक्ति। इससे अच्छी श्रद्धांजलि हम उनको नहीं दे सकते।

उनकी साध्वी पत्नी श्रीमती ललिता देवी और उनके कुटुम्ब के लोगों के साथ मैं हृदय से सम्मानपूर्वक गहरी सम्वेदना और शोक प्रकट करता हूं। इस दारुण दुःख में सारा देश उनके साथ है।

—गुलजारी लाल नन्दा
भारत के गृह मन्त्री

●

## गहरा धक्का

भारत के प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री को अचानक मौत से मुझे गहरा धक्का लगा। पिछले कुछ दिनों में जब मैं उनसे मिला तब मैं विवादों को न्यायोचित और शांतिपूर्ण ढ़ंग से हल करने के तरीकों में उनकी लगन से बड़ा प्रभावित हुआ था। हमने ताशकन्द

में बातचीत का अच्छा सिलसिला शुरू किया था। मैं इस दुःख की घड़ी में भारत की जनता के प्रति अपनी हार्दिक सम्वेदना प्रकट करता हूं।

—फील्ड मार्शल मोहम्मद अयूब खां
पाकिस्तान के प्रेसिडेण्ट

---

## उनके बिना विश्व सूना

हमारे राष्ट्र को भारत के प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के निधन का अत्यन्त शोक है। विश्व के विशालतम लोकतन्त्र के नेता के रूप में, उन्होंने अमरीका-वासियों के हृदय में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया था। ताशकन्द में सफल वार्त्तालाप के उपरान्त, उनके इस निधन से शान्ति और प्रगति-सम्बंधी मानव जाति की आशाओं को भारी आघात पहुंचा है। प्रधान मंत्री शास्त्री ने, अपने कार्यालय के १८ महीनों में ही, भारतीय लोकतंत्र के महान् आदर्शों को बुलन्द कर अपने आप को पण्डित नेहरु का योग्य उत्तराधिकारी सिद्ध कर दिया। इस उच्च पद पर विनम्रता के साथ आसीन रहते हुए उन्होंने देश के सर्वमान्य नेता के रूप में अपनी दृढ़ता और बुद्धिमत्ता का पूर्ण परिचय दिया। आज विश्व उनके बिना सूना लग रहा है और हमें उनके परिवार और भारत की जनता के साथ हार्दिक सहानुभूति है।

—लिण्डन बी० जानसन
संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति

---

## अन्तर्राष्ट्रिय सौहार्द को सुदृढ़ बनाने वाले

सोवियत जनता को इस विशिष्ट भारतीय राजनीतिज्ञ के असामयिक देहावसान पर भारी आघात पहुंचा है। अपने यौवन

काल से ही शास्त्री जी ने महात्मा गांधी और जवाहरलालनेहरू के नेतृत्व में अपने देश की राष्ट्रिय मुक्ति के लिए संघर्ष किया। उन्होंने शान्ति और अन्तर्राष्ट्रिय सौहार्द को सुदृढ़ बनाने के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया।

—श्री पोद गौरनी
रूस के राष्ट्रपति।

---

## घटना की ऐतिहासिक गम्भीरता

भारत के प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री का अचानक देहान्त बड़ा दुखद है। यह निधन ऐसी परिस्थितियों में हुआ है जो इस घटना की ऐतिहासिक गम्भीरता को मुखर करती है।

जनरल दी गाल
फ्रांस के राष्ट्रपति।

---

## सच्चा इन्सान

भारत के प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री की आकस्मिक मृत्यु से मुझे ही नहीं, यूगोस्लाविया के तमाम लोगों को गहरा दुःख हुआ है। उनकी मृत्यु से भारत और प्रगतिशील देशों के लोगों ने शाँति का ईमानदार पुजारी और यूगोस्लाविया ने एक महान मित्र खो दिया है। मेरे दिल में उनके प्रति बड़ा सम्मान था और मैं उन्हें महान् राजनेता और सच्चा इन्सान मानता था।

—मार्शल टीटो
यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति

---

## मानव जाति की भलाई का कार्य करने वाले

ताशकन्द में प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु का समाचार सुनकर हमें अत्यन्त दुःख हुआ। अपने देश से हजारों मील

दूर शांति की खोज में उनकी मृत्यु हुई और इससे पता चलता है कि वह मानव जाति की भलाई के कार्यों में किस लगन से काम कर रहे थे। दुःख के अवसर पर फिलीपीन्स की जनता की और मेरी ओर से आप और भारत की जनता को हार्दिक संवेदना और सहानुभूति !

—फर्डिनेण्ड मार्कोस
फिलीपीन्स के राष्ट्रपति

———

### दुःख की घड़ी

श्री शास्त्री की आकस्मिक मृत्यु का समाचार सुन कर हमें बड़ा दुःख हुआ। कुवैत की जनता और सरकार की ओर से भारत की जनता को इस दुःख की घड़ी में हमारी हार्दिक सहानुभूति।

—शेख साबा अल सलीम असलाया
कुवैत के अमीर।

———

### राष्ट्र की सेवा में गला दिया

महात्मा गांधी और नेहरू की महान् विरासत को संभालने के बाद भारतीय प्रधानमन्त्री शास्त्री जी ने अपने आप को राष्ट्र की सेवा में गला दिया और अपने स्वास्थ्य की भी परवाह नहीं की।

—डा० हाइनरिख ल्युबके
प० जर्मनी के राष्ट्रपति।

———

### हार्दिक संवेदना

प्रधान मन्त्री लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु से मुझे बड़ा दुःख हुआ। मेरी ओर से तथा नाईजीरिया की जनता और सरकार की ओर से हार्दिक संवेदना।

—श्री ओरीब
नाईजीरिया के कार्यकारी प्रेसीडेण्ट

———

## युग के महान् व्यक्ति थे ।

श्री शास्त्री इस युग के महान् व्यक्ति थे । उनकी अकाल मृत्यु ने उन्हें हमसे तथा शान्ति के धरातल से छीन लिया है । भारतीय जनता और शान्ति के हितों की रक्षा के लिए उन्होंने आखिरी दम तक कार्य किया ।

—श्री कोसीगन
रूस के प्रधान मन्त्री

---

## उन्होंने मानवजाति की भलाई के लिए प्रयत्न किया

प्रधान मन्त्री शास्त्री जी के देहान्त से सारा विश्व शोक सन्तप्त है । केवल भारत या एशिया ही नहीं, बल्कि सारा विश्व शोकग्रस्त है । संयुक्त राष्ट्र संघ इस दुःख में सम्मिलित है । एक राजनयिक तथा एक सहृदय और अच्छे मित्र के बिछुड़ने से मैं बहुत दुःखित हूं । शास्त्री जी ने अपने देश का सम्मान बनाए रखा और उसमें वृद्धि की । शास्त्री जी ने केवल भारत के आर्थिक विकास के लिए ही कदम नहीं उठाए, बल्कि अन्तर्राष्ट्रिय पैमाने पर मानव जाति की भलाई के लिए निष्ठा पूर्वक व दृढ़ता के साथ प्रयत्न किया ।

—श्री ऊ थांट
संयुक्त राष्ट्र संघ के महामन्त्री

---

## सारे राष्ट्रमण्डल में अभाव का अनुभव

प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री का अभाव न केवल भारत में बल्कि, सारे राष्ट्रमण्डल में अनुभव किया जायेगा ।

—लार्ड केसी
आस्ट्रेलिया के गवर्नर जनरल ।

---

## सम्मान और प्रशंसा के भाजन

श्री शास्त्री की आकस्मिक मृत्यु का समाचार सुनकर बड़ा दुःख हुआ। पिछले प्रधान मन्त्री सम्मेलन में, जब मैं उनसे मिला, तब से मेरे दिल में उनके प्रति बड़ा सम्मान और प्रशंसा है। जमैका की सरकार और जनता की ओर से कृपया हार्दिक सहानुभूति स्वीकार करें।

—श्री सैंगस्टर
जमैका के कार्यकारी प्रधान मन्त्री।

---

## महान् राजनीतिज्ञ

श्री लालबहादुर शास्त्री प्रधान मन्त्री के पद पर अपेक्षाकृत थोड़े समय तक रहे, किन्तु यह अवधि सफलताओं और उद्देश्यों से परिपूर्ण रही। आज ही प्रातःकाल ताशकन्द में समझौता करने में उनकी महान् राजनीतिज्ञता का समाचार मिला। और सिर्फ तीन सप्ताह से हम स्वयं उनका स्वागत-अभिवादन करने की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा में थे। विश्व भर के करोड़ों व्यक्तियों के साथ मैं इस महान् भारतीय नेता के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करता हूं।

—श्री डीन रस्क
अमरीकी विदेश मन्त्री

---

## शान्ति के प्रति सच्ची निष्ठा

श्री लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु न केवल भारत के लोगों को बल्कि विश्वभर के लोगों को भारी क्षति हुई है। प्रधान मन्त्री की शांति के प्रति सच्ची निष्ठा, उसका महान् साहस और निःस्वार्थ मानवीयता हम सभी के हृदयों में, जिन्हें उनको जानने का सौभाग्य प्राप्त था, चिरसंचित रहेगी।

श्री लालबहादुर शास्त्री में सरल वाणी और शिष्ट व्यवहार के पीछे उनका दृढ़ संकल्प, उनकी तीव्र बुद्धिमत्ता और एक ऐसे महा-पुरुष की गहन कर्त्तव्य-निष्ठा छिपी हुई थी, जो विश्व के सब से बड़े लोकतन्त्र का, उसकी स्वतन्त्रता के बाद की कठिनतम परी-क्षाओं के दौरान मार्ग-प्रदर्शन करने के लिए अद्भुतरूप से उपयुक्त था। भारतीय लोगों के तीव्र उत्थान के प्रति, अपनें सच्चे उद्देश्यों के लिए अमरीकी लोगों के हृदयों में चिरस्थायी स्थान प्राप्त कर लिया है।

—श्री चेस्टर बोल्स
भारत में अमरीकी राजदूत

---

## दृढ़ संकल्प के आदमी

ताशकंद में अपने प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के देहान्त होने की खबर से मैं स्तब्ध रह गई। वे बड़े दृढ़ संकल्प के आदमी थे, और उन्होंने अपना सारा जीवन देश सेवा में निछावर कर दिया था।

—श्रीमती इन्दिरा गांधी
भारत की वर्तमान प्रधान मन्त्री

---

## परमात्मा की मर्जी कुछ और थी।

इस खबर ने हम सब को स्तब्ध कर दिया। ताशकंद में उनकी सफलता के बाद हम तो उनके स्वागत की तैयारी कर रहे थे, परन्तु परमात्मा की मर्जी कुछ और थी। भगवान् राष्ट्र को यह धक्का सहने की शक्ति दे।

—श्री सत्यनारायण सिंह
केन्द्रीय संचार और संसत्कार्य मन्त्री

---

## भगवान् की लीला अपरम्पार है।

मैं यह दुःखद समाचार सुन कर बिलकुल स्तब्ध रह गया। कल रात ही मैं शास्त्री जी की महान् सफलता पर खुश हो रहा था। लेकिन इतनी जल्दी उनका अन्त होगा, यह किसी ने नहीं सोचा था। एक महान् व्यक्ति के चले जाने से आज दुनिया भर में शोक छाया हुआ है। भगवान् की लीला अपरम्पार है।

प्रो० हुमायूं कबीर
भू० पू केन्द्रीय पैट्रोल और
रसायन मन्त्री

---

## महान् सपूत खो दिया

लाल बहादुर जी अपने जीवन की महान् विजय के अवसर पर मरे। १८ महीनों में शास्त्री जी ने जो कुछ पाया, उसे राजा, सम्राट और बड़े-बड़े राजनेता दसियों साल में भी नहीं कर पाते। वह बुद्धिमान्, शांतिप्रिय, साहसी और हर काम में लग्न से काम करने वाले व्यक्ति थे।

आज भारत ने एक महान् सपूत खो दिया। हम लालबहादुर जी के स्वप्न को पूरा करने की प्रतिज्ञा करते हैं।

—श्री मनुभाई शाह
केन्द्रीय वाणिज्य मन्त्री

---

## उनकी याद सदा जीवित रहेगी

शास्त्री जी की मृत्यु से मेरे देश को बड़ा धक्का पहुंचा है और निराशा हुई है, क्योंकि ताशकन्द से लौटते हुए वे काबुल आने वाले थे। यद्यपि शास्त्री जी अब दुनिया में नहीं है, फिर भी उनकी याद

सदा जीवित रहेगी और उनके उत्तराधिकारी भारत और अफगानिस्तान के बीच सम्बन्ध और मजबूत करने के लिए कार्य करेंगे।

—श्री एम. एच. भाई वंदवाल
अफगानिस्तान के प्रधान मन्त्री

---

## उनकी सेवाओं की अत्यधिक आवश्यकता थी

श्री शास्त्री एक ऐसे समय में गए है, जबकि राष्ट्र को उनकी सेवाओं की अत्यधिक आवश्यकता थी। उनके स्थान की पूर्ति होना कोई सरल नहीं है।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री
संसत्सदस्य, आर्यसमाजी नेता

---

## अपूरणीय क्षति

भारत के लिए महान् दुःख की बात है कि प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री देश का सही निर्देशन कर रहे थे और जनता का विश्वास बढ़ता जा रहा था। भारत और पाकिस्तान के बीच हाल की लड़ाई में उन्होंने भारत की मर्यादा ऊंची की और हमारे देश की इज्जत बढ़ी। यह और भी महान् शोक की बात है कि वह ताशकन्द-शान्ति-मिशन सफल होने के तुरन्त बाद ही नहीं रहे। इस बेला में उनका विदा होना अपूरणीय क्षति है।

—श्री कामराज
प्रधान, अखिल भारतीय कांग्रेस

---

## योग्य, संतुलित और दृढ़ नेता को खो बैठे

ताशकन्द में हुए श्री शास्त्री के निधन के समाचार से मैं स्तम्भित रह गया। यह हमारा दुर्भाग्य है कि शास्त्री-सरीखे एक

योग्य और सन्तुलित और दृढ़ नेता को हम खो बैठे। परमेश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—(श्री गुरु जी) माधवराव सदाशिवराव गोलवलंकर
सर संघ चालक, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ

---

## सच्चा राष्ट्रवादी गुजर गया

एक सच्चा राष्ट्रवादी तथा महान् देशभक्त गुजर गया है। भारत ने ताशकन्द में शान्ति पाने के लिए एक बहुमूल्य जीवन का बलिदान दिया है। भारत के इतिहास में उनके प्रधान मन्त्रीत्व की अल्पावधि याद रखी जाएगी।

—श्री बच्छराज व्यास
प्रधान, भारतीय जनसंघ

---

## नियति का कठोर प्रहार

स्वर्गीय श्री शास्त्री का जीवन देश-समर्पित राष्ट्र भक्त का जीवन रहा है।.........ताशकन्द-वार्ता के पश्चात् वे हमारे बीच नहीं आ सके, किन्तु उनका जीवन-कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ था। श्री शास्त्री को संसार से उठाकर नियति ने कठोर प्रहार किया है। .........ताशकन्द वार्ता से जो सदमा उन्हें पहुंचा—वह सारे देश को है।

—श्री दीनदयाल उपाध्याय
महामन्त्री, अखिल भारतीय जनसंघ

---

## अपने बूते से कहीं अधिक काम किया

श्री लालबहादुर शास्त्री ने अत्यधिक संकट की स्थिति में देश की पतवार बखूबी सम्भाली। शास्त्री जी के नश्वर शरीर ने देश

वर्ष के अल्पकाल में अपने बूते से कहीं अधिक काम किया। शास्त्री जी को अपने देश और देशवासियों से बेहद प्यार था।

—आचार्य विनोवा भावे
भूदान-आन्दोलन के प्रणेता

---

## भारतीय संस्कृति के प्रतीक

प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री सुन्दर अरमान लेकर ताशकन्द गये थे। अपने विचार और चिन्तन से उन्होंने उसे ठीक किया। इससे उन्हें स्वयं व राष्ट्र को प्रसन्नता हुई, किन्तु वे यह सब कुछ अपने शब्दों से देश को नहीं सुना सके। एक दिन इसी प्रकार सबको यहां से चले जाना होगा। शास्त्री जी राष्ट्र के ही नहीं, भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे। उनके चले जाने से धार्मिक जगत को एक प्रकार की रिक्तता अनुभव होगी। वे राष्ट्र नेता होंने के साथ-साथ सही माने में धार्मिक भी थे। वे सादगी, सरलता और नम्रता के प्रतिरूप थे। उनका जींवम संयमित था।

—आचार्य तुलसी
अणुव्रत आन्दोलन के संचालक

---

## कई पीढ़ियों तक उसकी पूर्ति नहीं हो सकेगी

ऐसे नाजुक वक्त में इससे बड़ी विपत्ति हम पर और क्या पड़ सकती थी। जिस साहस, विवेक और विनम्रता से युक्त उनका नेतृत्व था, कई पीढ़ियों तक उसकी पुर्ति नहीं हो सकेगी।

—श्री जय प्रकाश नारायण
सर्वोदय नेता

---
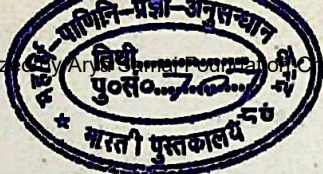
## महान् नेता खो दिया

हमने एक ऐसा नेता खो दिया है, जिसने अपना सब कुछ देश को दे दिया था। यह समूचे राष्ट्र के लिए शोक की बात है। भारत और पाकिस्तान के बीच समझौता कर उन्होंने एक महान सफलता प्राप्त की है। वे भारतीय जनता के प्राण थे।

—स्वामी कृष्ण बोधाश्रम जी महाराज
जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर

---

नाटकीयता से सर्वथा अछूता यह व्यक्ति अत्यन्त नाटकीय ढंग से दुनिया से उठ गया—वह भी ऐसे समय, जब भारत और पाकिस्तान के कटु सम्बन्धों में सुधार की आशा जाग रही थी।

—टाइम्स, लन्दन

---

## रामलीला मैदान, नई दिल्ली में शोक-सभा

### विश्व दे रहा, करबद्ध तुम्हें श्रद्धांजलि !

डॉ० राधाकृष्णन

हम लोग आज यहां अपने स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के आकस्मिक और असामयिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करने के लिए इकट्ठा हुए हैं। इस दुःख की घड़ी में विदेशों के प्रतिनिधि हमें सान्त्वना देने के लिए यहां आए हैं, हम उनके आभारी हैं।

श्री लालबहादुर शास्त्री भारतीय लोकतन्त्र की दृढ़ता के ज्वलन्त उदाहरण थे। उनका जन्म किसी प्रभावशाली या धनी परिवार में नहीं हुआ था। उन्हें अन्य, प्रभावशाली स्थिति या धन के लाभ प्राप्त नहीं थे, फिर भी उन्होंने अपनी मामूली स्थिति से उन्नति कर देश की सरकार के सर्वोच्च पद पर काम किया। यह उनकी चारित्रिक शक्ति और ईमानदारी से ही सम्भव हुआ। इन्हीं के बल पर वे उन्नति कर प्रधान मन्त्री के उच्च पद पर पहुंचे। यदि लोकतन्त्रीय परम्परा हमारी चेतना, हमारे मन और हमारे हृदय में इतनी गहराई में न पैठी होती तो यह बात सम्भव नहीं थी। इसके अलावा श्री लालबहादुर शास्त्री किसी नाजाइज या अन्यायपूर्ण बात को सहन नहीं करते थे और न ही वे लोकतन्त्र को इस प्रकार चलने देने को तैयार थे, जिससे लोगों को गरीबी का जीवन बिताना पड़े।

हमने अपने देशवासियों के रहन-सहन को ऊँचा करने के लिए हर सम्भव कोशिश की, इसका अभिप्राय यह है कि हमने अपने लोकतन्त्र को समाजवादी लोकतन्त्र बनाया। यदि आर्थिक और सामाजिक असमानता, के रहते राजनीतिक समानता को महत्वपूर्ण या उपयोगी बनाना है, तो हमें आर्थिक समानता भी लानी होगी। अवसर की समानता और सामाजिक समानता भी आवश्यक है।

श्री लालबहादुर ताशकन्द गए। भौगोलिक दृष्टि से भारत एक विशिष्ट स्थान पर स्थित है और उसको केवल प्राचीन धर्मग्रन्थों की ही विरासत नहीं मिली, बल्कि हमारे आधुनिक नेताओं—महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू से भी स्वस्थ परम्पराएँ मिलीं। यही कारण है कि श्री लालबहादुर शास्त्री शाँति को सर्वोपरि महत्त्व देते थे और जब लड़ाई शुरू हो गई तो उन्हें बहुत कष्ट और आघात पहुंचा। ताशकन्द में इस लड़ाई के घावों पर मरहम लगा। ताशकन्द

घोषणा क्या है ? मेरे मित्र श्री कोसीगिन ने इस घोषणा का मसौदा तैयार करने में प्रमुख और प्रशंसनीय हिस्सा लिया । यह घोषणा कोई कानूनो दस्तावेज, कोई राजनीतिक समझौता या नैतिक उद्देश्य नहीं है । यह तो हृदय-परिवर्तन की पुकार है । हमने सदा कहा है कि राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय कैसे भी विवादों के निपटारे में शक्ति का प्रयोग नहीं होना चाहिए । हर स्थिति में हम इस आदर्श का पालन करना चाहते हैं । हमें बाध्य हो बल प्रयोग करना पड़ा । हमें इस बात का खेद रहा कि हमें बाध्य हो यह कार्य करना पड़ा । हमको इस दुविधा में डाल दिया गया था । अतः श्री लालबहादुर शास्त्री ने ताशकन्द वार्ता में सबसे अधिक जोर इस बात पर दिया कि झगड़े के निपटारे में बल-प्रयोग किसी भी स्थिति में नहीं होना चाहिए । शुरू से अन्त तक वे इसी बात पर जोर देते रहे और अंततः उन्होंने इस बात को मनवा लिया । यदि आप इस घोषणा पर गहराई से विचार करेंगे, तो पाएंगे कि यह सबसे अधिक हृदय-परिवर्तन पर जोर देती है ।

यदि आज के संसार में अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों कोसुलझाने में बल प्रयोग को ही हम एकमात्र रास्ता मान लें, तो हमारे सामने सम्पूर्ण विनाश वा परिवर्तन दो ही विकल्प रह जाते हैं । ताशकंद की घोषणा में यही बात ध्वनित हुई है । यह केवल हमारे लिए ही एक सलाह नहीं है, बल्कि संसार के उन सब देशों के लिए सलाह है, जो यह जानते हुए कि हथियारबन्दी का अन्तिम परिणाम मानव-सभ्यता का विनाश होगा, यह कार्य कर रहे हैं ।

ताशकन्द घोषणा ने हमारा आह्वान किया है कि हम सब मामलों पर एक नई भावना से विचार करें । यदि हम बदलते नहीं तो अनेक अन्य जातियों की तरह हमारा भी नाश हो जाएगा । अतः ताशकन्द घोषणा हमें बताती है कि जहां तक सम्भव हो बलप्रयोग से बचो और

इसे पूरी तरह समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहो और यदि हम ऐसा करेंगे, तो संसार में स्थायी शांति कायम होगी।

हमें श्री लालबहादुर शास्त्री के जीवन से यही सबक मिला है कि हम चाहे जो भी काम करें, उसे निस्वार्थ भाव से करें और संसार के सब लोगों की एकता, सद्भाव और मित्रता के लिए प्रयत्नशील रहें।

———

## श्री गुलजारीलाल नन्दा

राष्ट्रपति जी, दूर देशों से हमारे दोस्त, मुअज्जिज मेहमान जो आए हुए हैं और बहनो और भाइयो !

आज हमारा देश गम में डुबा हुआ है। हमारी जनता के दिलों में दुःख भरा हुआ हैं जिस वक्त वह तोपगाड़ी ले जा रही थी लालबहादुर शास्त्री जी की मृतक देह को, उस वक्त दोनों तरफ रास्ते में बेशुमार हुजूम था और हमारे देश की स्त्रियाँ और बच्चे आँसू बहाकर प्रेम की श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे थे, लालबहादुर शास्त्री जी की याद में। वह क्या समझते थे, क्या था उनके दिल में ? वह जानते थे इस बात को कि इस देश ने एक अनमोल रत्न खो दिया। देश को काफी भारी क्षति हुई है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

हमारे देश के लोगों को पहचान है, कौन है सच्चा सेवक उनका, कौन उनका सच्चा मार्ग बताने वाला है, कौन उनके लिए हर किस्म की कुर्बानी करने के लिए तैयार है और ये बातें थीं जिनकी वजह से लालबहादुर शास्त्री जी ने बहुत बड़ा स्थान प्राप्त किया इस देश के लोगों के दिल में। उनका बल उनकी शक्ति थी। यह प्रेम और श्रद्धा जो थी हमारे लोगों की उनमें और इसी बल पर उन्होंने बड़े-बड़े काम किए, बड़ी-बड़ी सफलताएं प्राप्त कीं।

इस वक्त मेरे मन में एक और याद ताजा हो जाती है। वे हमारे बड़े महान् नेता थे, जिन्होंने बड़े महान् कार्य किए इस देश में और जो सिद्धि उन्होंने प्राप्त की उसकी तह में यह बात थी कि देश की विशाल प्रजा का प्रेम और श्रद्धा और भी यही कहा करते थे। यही बात और उससे पहले महात्मा गाँधी जी ने जो चमत्कार दिखाया, हौंसला दिखाया, देश में उसका राज भी यही था। महात्मा गांधी का मैंने जिकर किया इस मौके पर, उनका लम्बा रास्ता था और उस रास्ते के अन्त में उन्होंने हमारे देश की गुलामी की जंजीरों को तोड़ा और हमें स्वतन्त्रता प्राप्त कराई। मगर जो चित्र था उनके सामने इस देश के लिए उसको रूप नहीं दे सके, दरवाजे पर हमें लेकर आए और फिर वह चल दिए और फिर उनका बोझा, इस देश के कामों का बोझा, पड़ा जवाहरलाल जी के सिर पर और इन वर्षों में उन्होंने एक लोकतन्त्र की बुनियाद को पक्का किया।

उन्होंने हमें रास्ता बताया आगे चलने का, उन्होंने हमें फिलासफी दी आर्थिक प्रगति की, सामाजिक प्रगति की और उन्होंने यह बताया कि गुट-बन्दियों से बचते हुए आगे जाना है। उन्होंने इस देश की नाव को तूफानों से बचाते हुए आगे ले जाने की कोशिश की और उन्होंने यह भी कहा कि आज ताकत चाहिए। देश की किसी भी स्थिति का मुकाबला करने के लिए, किसी भय का सामना करने के लिए वह ताकत पैदा करने के सारे सामान मुहैया किए इस देश के अन्दर। वह अपना काम अधूरा छोड़कर समाजवादी समाज बनाना चाहते थे। वह चले गये हमको छोड़कर और फिर उनका काम, जिम्मेदारियों, का वह बोझा फिर आया लालबहादुर शास्त्री के कन्धों पर। कुछ लोग शंका करते थे कि क्या ये निभा लेंगे, क्या होगा? इस देश की बड़ी-बड़ी कठिनाईयाँ हैं और बड़ी-बड़ी समस्याएं हैं, मगर जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गये, उन कठिनाइयों को हल करते गए और देश के प्रश्नों को हल करते गये और कठिनाइयां भी बढ़ती गई, मगर वे भी बढ़ते, वे

भी ऊंचे होते गए, उनकी शक्ति भी बढ़ती गई, यह उन्होंने काम करके बतलाया। उनके पास एक परम्परा थी, विरासत थी गांधी जी की, जवाहरलाल जी की, वह गरीबी का अनुभव करते थे और इसलिए वे गरीबों का दुःख अनुभव करते थे। मैं जानता हूं इस बात को, जब सवाल आते थे, लोगों को खुराक की समस्या है, तकलीफें हैं, तो वे रो पड़ते थे। क्योंकि वे उन तकलीफों को जानते थे। उनके लिए समाजवाद यह था कि देश के लोगों की और कुछ नहीं तो कम से कम ये साधारण जरूरत जो है, उनके बगैर कोई एक परिवार भी न रह जाए। यह नक्शा था, जिसको वे जल्दी पूरा करना चाहते थे देश के लिए।

वे शांति चाहते थे इस देश के लिए और अन्तर्राष्ट्रीय शांति भी चाहते थे। विश्व के देशों में झगड़ा न हो, झगड़ा पसन्द नहीं करते थे, झगड़ा मिटाना चाहते थे। झगड़े सुलझाना तथा शांति की बात तो थी ही, मगर बहुत कुछ सामना करना पड़ा और उसके बाद उन्होंने शांति का रास्ता लिया। यात्रा पर वे गये ताशकन्द और जाकर बड़ी महान सफलता प्राप्त की वहां जाकर। मैं आपसे यह नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं, जो उन्होंने समझोता किया, वह इस देश का एक ट्रस्ट है और यह हमारी जिम्मेदारी है, हम इसको सम्पूर्ण तौर पर अदा करेंगे। हम उसे देश के लिए न्याय और इज्जत के लिए इस काम को, इस जिम्मेदारी को, जो हमारे सिर पर आई है, शांति का मार्ग जिस पर हम चलने लगे हैं, उसको हम पूरा करेंगे। यह हम देश की तरफ से, आप सब की तरफ से, वादा करते हैं विश्व को।

एक बात और कह देना चाहता हूं, वे चले गये और यह सब कुछ हुआ। मगर आज भी इस देश के सामने बहुत बड़ा कठिन काम पड़ा है। बड़ी समस्याएं हैं, खतरे भी हैं, इसके लिए हमें प्रयत्न जारी रखने हैं। इसके लिए हमें तयारी जारी रखनी है। देश के अन्दर

गरीबी का सवाल है, देश में ताकत पैदा करने का सवाल है, यह सब कुछ हमारे सामने हैं और वही जो वादा हमने दिया है जवाहरलाल नेहरू को, एक सोशलिस्ट सोसाइटी बनाने का, वह काम हमें पूरा करना है इस देश के अन्दर। इसके लिए, इन सब चीजों को करने के लिए एक बात मैं नम्रतापूर्वक अर्ज करना चाहता हूं, कहता हूं, इस देश में जो एकता अभी हमने पैदा की, जिससे आज बहुत कुछ सफलता हमें मिली उसके पीछे वे कारण हैं। उस एकता को कायम रखना है। मुझे विश्वास है कि इसमें हमारे देश के लोग कितना कुछ कर सकते हैं, कितना त्याग कर सकते हैं, उन्होंने इस बात का सबूत दिया है और मुझे विश्वास है कि आगे जाकर हर मौके पर वे सबूत देंगे इस बात का और इस देश के लिए एक महान भविष्य है। यह देश अब कभी किसी के आगे सिर नीचा नहीं करेगा। यह देश अब आजादी लेकर और जो कुछ गांधीजी ने बताया सर्वोदय की बात, जो समाजवाद की बात और अखण्डता की बात, उस स्वतन्त्रता को हमेशा बचा कर रखने की यह बात हम भूलेंगे नहीं और लालबहादुर शास्त्री की आत्मा के सामने, उसका विचार करते हुए कहता हूं। मैं उनके साथ साथ पिछले महीनों में बहुत नजदीक था। मैं जानता था कि उनके दिल में कितना प्रेम और कितना उनके अन्दर दर्द था मैं यह कहता हूं आप सबकी तरफ से कि इस देश की आजादी को हमेशा कायम रखने के लिए, इस देश को खुशहाल बनाने के लिए और दुनिया के अन्दर आगे से आगे बढ़ने के लिए हम सब कुछ कर छोड़ेंगे, हर तरह का बलिदान देने के लिए हम तैयार हैं।

---

**श्री कोसीगिन**

करोड़ों भारतीयों के इस अपार दुःख में रूस की जनता भी सम्मिलित है।

ताशकन्द वार्ता के दौरान शांति के प्रति उनकी तीव्र इच्छा, आत्मसंयम और कुशाग्रता का हम पर बहुत ही प्रभाव हुआ। मैंने उनमें अपनी जनता के कल्याण की हार्दिक कामना को स्पष्ट देखा था। उनकी शांति की प्रबल इच्छा का ही यह फल है कि ताशकन्द का ऐतिहासिक समझौता सम्पन्न हो सका।

उनकी मृत्यु से कुछ घण्टे पहले ही उनसे मेरी जो बातचीत हुई, वह नई आशाओं के द्वार खोलने वाली है। वे ताशकन्द-घोषणा से पूर्ण संतुष्ट थे। देर तक वे मजेदार बातें करते रहे।

भारी तनाव की स्थिति में जिस स्पष्टता के साथ उन्होंने ताशकन्द वार्ता का निमन्त्रण स्वीकार किया, वह उनके साहस और हौंसले का एक सबूत है।

मुझे भूलते नहीं हैं वे शब्द जो उन्होंने ताशकन्द वार्ता के उद्घाटन दिवस पर कहे थे। उन्होंने कहा था—

"भारत और पाकिस्तान पर, जो मानव-जनसंख्या का पांचवां भाग हैं, बहुत बड़ी जिम्मेदारियां हैं। आपस में लड़ने के बजाय हमें मिलकर गरीबी, बीमारी और जहालत से युद्ध करना चाहिए। हमारे दोनों देशों की जनता की समस्यायें और आकांक्षायें समान हैं। वे शांति और समृद्धि चाहते हैं, उन्हें हथियार और बारूद नहीं; भोजन, कपड़ा और आवास की जरूरत है। इस मूल उद्देश्य के लिए हमें इस वार्ता को सफल बनाना होगा।"

प्यारे मित्रो, मैं विश्वास करता हूं कि श्री शास्त्री जिस शांति के लिए अन्तिम सांस तक लड़े, वह स्थापित होगी, बारूद ठन्डी ही रहेगी और भारत तथा पाकिस्तान फिर मित्रों की तरह अपनी जनता के के कल्याण में लगेंगे।

स्व० जवाहरलाल नेहरू ने जिस तटस्थता की नीति से शाँति का नया अध्याय आरम्भ किया था, उसी को श्री शास्त्री ने आगे लिखा।

हम अनुभव करते हैं कि सह-अस्तित्व का यह सिद्धान्त जीवन के प्रति गहरी आस्था है। भारत और सोवियत संघ शांति के लिए संघर्ष करते आ रहे हैं और आज इस शोक की घड़ी में आपको विश्वास दिलाता हूं कि रूस भारत से अपनी मित्रता को और भी मजबूत बनाता हुआ विश्व-शांति के लिए संघर्ष करता रहेगा। भारतीय तथा रूसी आपस में मित्र और भाई-भाई हैं।

---

## अमरीका के उपराष्ट्रपति श्री हम्फ्री

दो वर्षों की संक्षिप्त अवधि में भारतीय जनता को तथा सारी दुनिया को दो बार शांति के एक महान् पोषक से वंचित होने का दुर्भाग्य सहन करना पड़ा है।

वाशिंगटन से रवाना होने ने पूर्व प्रैसिडेण्ट जॉनसन ने मुझे आप लोगों को—भारत की जनता की—हमारी जनता की हार्दिक सहानुभूति और संवेदनाएं देने के लिए कहा था। हम उस पीड़ा और दुःख की गहराई भली प्रकार समझते हैं; हम उस पीड़ा और दुःख से भली प्रकार परिचित हैं, जो उस समय लोगों के दिलों को पहुंचाता है जबकि उस पुरुष को, जिसको उन्होंने नेतृत्व के लिए चुना होता है, दुःखद और असामयिक मृत्यु द्वारा उनसे छीन लिया जाता है। हम अमरीकावासी इस विशेष प्रकार के दुःख को भली प्रकार समझते हैं, क्योंकि हम स्वयं इससे पीड़ित हो चुके हैं।

हम आपके नेता का एक ऐसे व्यक्ति के रूप में स्मरण करते हैं। जिसने हमें नई प्रेरणा दी! हममें एक नया विश्वास जगाया है। उन्होंने आपके लिए और अन्य लोगों के लिए शांतिपूर्ण भविष्य के तथा एक अधिक श्रेष्ठ और सुखी जीवन के द्वार

उनमुक्त कर दिए हैं। अज्ञानता, गरीबी, निराशा और अभाव उनके एक मात्र शत्रु थे। शिक्षा, सद्भावना, सहिष्णुता और प्रेम उनके शस्त्र थे। ससार के ऐसे व्यक्ति, जो विनाश के बजाय निर्माण को अधिक श्रेष्ठ मानते हैं, उनके अत्यधिक ऋणी और अत्यधिक आभारी रहेंगे।

उनकी महान् सफलताओं से—जिनमें सबसे ताजा ताशकंद की सफलता रही है—हमें यहां नई शक्ति और नया संकल्प ग्रहण करना चाहिए। वहां ताशकंद में, पाकिस्तान के राष्ट्रपति के साथ मिलकर तथा सोवितत संघ के नेताओं के कुशल सहयोग से, उन्होंने शांति की खोज में महान् प्रगति की। वह जाते थे कि शांति प्राप्त करने के लिये साहस और धैर्य की आवश्यकता है। बेशक, आपके स्वर्गीय और प्यारे प्रधानमंत्री जानते थे कि शांति सभ्य मानव का उच्चतम लक्ष्य है।

तो आइए, हम एक ऐसा विश्व बनाएं, जिस पर श्री लालबहादुर शास्त्री को गर्व हुआ होता। आइए, हम इस विश्व को ही उनका सजीव स्मारक बनाएं।

---

### श्री अटलबिहारी वाजपेयी

श्री शास्त्री के निधन की घटना इस प्रकार की है मानों जैसे कि दोपहर में अंधियारी छा गई; बिना बादलों के बिजली टूट पड़ी। १८ मासों में क्रूर काल ने यह दूसरा आघात पहुंचाया है। मौत बार-बार हमारा इम्तहान लेने पर तुली है।

१८ मास के कार्यकाल में श्री शास्त्री ने वह कुछ कर दिखाया जो हम स्वाधीनता के १८ वर्षों में करने को लालायित थे। श्री शास्त्री जी ने देश के स्वाभिमान को जगाया। सेना को खोई प्रतिष्ठा प्राप्त कराई। उन्होंने दिखा दिया कि जहां भारत शांति का एकान्त पुजारी है, वहीं वह शांति की रक्षा के लिए आवश्यकता

पड़ने पर हथियार भी उठा सकता हैं। वे युद्ध में विजयी हुए और शांति की खोज में उन्होंने अपने प्राण गवाएं। भारत चिरंतन काल से शांति की उपासना करता रहा है। शास्त्री जी ताशकंद में शाँति की खोज में ही गए थे। उनके कार्यकाल में हमें यही शिक्षा मिली है कि शांति की साधना करें और शांति की रक्षा के लिए लड़ने को तैयार रहें। देश उनकी इस शिक्षा को भूलेगा नहीं। श्री शास्त्री सनातन-संस्कृति के प्रतीक थे।

वे झोंपड़ी में जन्मे थे। गरीबी के पालने में झूले थे। गरीबी में २॥) रु० में खर्च चलाते थे। पैसे पास न होने पर पुस्तकों का गट्ठर सिर पर बांधकर तैरते हुए गंगा नदी पार करते थे। जब एसा व्यक्ति हमारा प्रधानमंत्री होगा तभी हमारा लोकतन्त्र सफल होगा उसके गुण सामने आएंगे। श्री शास्त्री गरीबी को जानते थे। हमें उन पर भरोसा था कि उनके नेतृत्व में देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। "वे सच्चे लोकतन्त्रवादी थे। सबको साथ लेकर वे चलते थे। आज इसी बात की आवश्यकता है।" विरोधी दल का होने से कारण कभी-कभी हम उनकी आलोचना भी करते थे। लोकतन्त्र में मतभेद हुआ करते हैं। पर ऐसा कदापि न था कि उनकी ईमानदारी व देशभक्ति में कोई कमी थी। वे संघर्ष की आग में तपकर कुन्दन बने। राष्ट्र का मस्तक विश्व में ऊँचा उठाया। परीक्षा में सफल हुए, पर अभी देश की परीक्षा बाकी है। नेहरू जी के निधन पर लोगों ने आशंका व्यक्त की थी कि देश टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा, पर शास्त्री ने उसे झुठलाते हुए भारत के मानचित्र को दुनिया में चमका दिया। आज फिर कुछ लोग देश में विघटन उत्पन्न होने की आशंका व्यक्त करने में सक्रिय हो रहे हैं। आज हम अपने हृदय में श्री शास्त्री की स्मृति संजोकर देश में एकता प्रस्थापित करके यह दिखा दें कि "भारत माता की गोद सूनी हो गई है, पर कोख सूनी नहीं हुई है।"

# श्री शास्त्री जी के चार ऐतिहासिक भाषण

## (३ सितम्बर, १९६५ को दिया गया प्रथम भाषण)

### शत्रु की चुनौती का साहस, विवेक और दृढ़ता से मुकाबला करने का सन्देश

दोस्तो,

मैं आज आपको पाकिस्तान के हमले और उससे जो हालत पैदा हो गई है, उसके सम्बन्ध में बताना चाहता हूं और इन नाजुक घड़ी में हमारे ऊपर जो जिम्मेदारियां और चिन्ताएं आ पड़ी हैं उनमें आपके साथ हिस्सा बटाना चाहता हूं। जैसा आप जानते हैं, पहली सितम्बर को पाकिस्तान ने जम्मू छम्ब वाले इलाके में एक ब्रिगेड फौज लेकर हमारे ऊपर भारी हमला किया। इस हमले में भारी तोपें और भारी टैंक भी शामिल थे। हमारी फौजों ने बहादुरी से उसका सामना किया और अनेक पाकिस्तनी टैंकों और बहुत-सी फौज-गाड़ियों को नष्ट कर दिया। पाकिस्तान का पहला धक्का रोक दिया गया है। पाकिस्तान उस इलाके में क्या कर रहा है, इसका पता इस बात से चलता है कि उसकी हवाई फौजें बेगुनाह शहरी लोगों पर बम बरसाकर औरतों, बच्चों और मरदों की जान ले रही हैं और उन्होंने ने एक मस्जिद को भी बरबाद कर दिया है। जम्मू और काश्मीर के लोग इस हमले का सामना बड़ी हिम्मत से कर रहे हैं।

मैं अपनी रक्षा-सेनाओं को दिल से बधाई देना चाहता हूं। सारे मुल्क को उनके ऊपर गौरव है और उन पर पूरा विश्वास है कि वे मुल्क की हिफाजत अच्छी तरह करेंगी। सारा देश उनके साथ है।

इस हमले के पहले जो हथियारबन्द हमलावर काश्मीर में पुलों और सरकारी व फौजी ठिकानों को बरबाद करने के लिए और तोड़-फोड़ के और काम करने के लिए घुसे थे, उनकी कोशिशें ना-

कामयाब कर दी गई हैं। हमलावरों को वहां के लोगों से कोई हमदर्दी या मदद नहीं मिली। बल्कि उन्होंने खाने-पीने का सामान लेने के लिए वहां के लोगों को लूटा और उनके घरों में आग लगाई। शुरू में कुछ दिन तक अन्धेरे में छुपकर ये हमलावर कुछ गांवों में घुसने में कामयाब हो गये थे, लेकिन उनकी साजिश लगभग नाकामयाब कर दी गई है और बहुत से हमलावरों को भागकर घने जंगल में छुपना पड़ा है। फिर भी हमको लगातार खबरदार रहना है, क्योंकि ये हमलावर अभी भी काश्मीर के अन्दर छुपे हैं और तोड़फोड़ की कोशिश करते हैं।

ये हमलावर नए किस्म के हथियारों से लैस थे, उनकी पूरी कारवाई का नक्शा पाकिस्तान ने ही बनाया और उनको काश्मीर में भेजा। हमारा यकीन है कि संयुक्त राष्ट्र संघ (यू० एन० ओ०) के सेक्रेट्री जनरल को चीफ मिलिटरी आब्जरवर ने जो रिपोर्ट दी है, उससे यह बात पूरी तरह साबित हो जाती है। हमारे बार-बार कहने पर भी यह रिपोर्ट छापी नहीं गई है। हमारे लिए कोई चारा नहीं था, सिवाय इसके कि हमारी फौजें लड़ाईबन्दी लाइन के उस पार जाकर हमलावरों के आने के रास्तों पर कब्जा करें। अपने बचाव के लिए यह जरूरी था। लेकिन अभी भी पाकिस्तानी फौज की पूरी मदद से, वे काश्मीर के अन्दर आने की कोशिश कर रहे हैं। पाकिस्तान ने इस बात से इन्कार किया है कि उनके आने में उसका कोई हाथ है। पाकिस्तान सरकार ने यह कहानी गढ़ने की कोशिश की है और प्रेजीडेंट अयूब खां ने अपने पहली सितम्बर के ब्राडकास्ट में इसे दोहराया भी है कि ये आजादी के सिपाही हैं और काश्मीर में अन्दरूनी बगावत हो गई है। सारी दुनिया जानती है कि काश्मीर में कोई बगावत नहीं हुई है। कश्मीर के रहने वाले बिल्कुल शान्त रहे हैं और हमलावारों को पकड़ने में उन्होंने सरकार को मदद की है। पाकिस्तान के भेजे हुए इन हथियारबन्द लोगों ने लूटमार की है, और

लगाई है और लोगों को जान से मारा है। हमारी पूरी हमदर्दी उनके साथ है। वहां के रहने वालों की बहादुरी और बरदाश्त के लिए मैं उन्हें दिली बधाई देता हूं।

सन् १९४७-४८ में भी, काश्मीर में, अपनी फौजों के भेजने के कई महीने बाद तक पाकिस्तान इस बात से इन्कार करता रहा कि उसकी फौजें वहाँ लड़ रही हैं। सन् १९४८ में जब इस बात को छिपाना नामुमकिन हो गया, तभी पाकिस्तान ने भारत और पाकिस्तान के लिए यू० एन० कमीशन के सामने यह कबूल किया गया कि पाकिस्तानी फौजें कई महीनों से वहां लड़ रही हैं।

इस साल ३० जून को गुजरात "पश्चिम पाकिस्तान" सरहद के बारे में, भारत और पाकिस्तान में जो समझौता हुआ, उसमें पाकिस्तान ने बड़ी संजीदगी से यह आशा जाहिर की कि इस समझौते से भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध सुधरेंगे और तनाव घटेगा। मगर दुनिया को यह जानकर धक्का लगेगा कि जिस वक्त इस समझौते पर दस्तखत हो रहे थे, उस वक्त पाकिस्तान कश्मीर में हथियारबन्द लोगों को भेजने का प्लान बना चुका था। और 'मरी' में इन लोगों को ट्रेण्ड कर रहा था। इनका हमला ठीक एक महीने बाद शुरू हुआ, जबकि ३० जून के कच्छ समझौते की स्याही भी नहीं सूख पाई थी। पाकिस्तान की मंशा और इच्छा क्या है, यह इस बात से बिल्कुल ही साफ हो जाता है।

पाकिस्तान के सरकारी हल्कों ने हिन्दुस्तान पर यह जुल्म लगाया है कि वह काश्मीर में इम्पीरियलिज्म से काम ले रहा है। अय्यूब साहब इस बात को भूल गए हैं कि जम्मू-काश्मीर राज्य, कानूनी तौर से और असलियत में भी भारत का एक हिस्सा है। काश्मीर के रहने वाले, भारत के नागरिक हैं और उनको वे सब अधिकार और हक मिले हुये हैं, जिनकी हमारे कांस्टीट्यूशन में गारण्टी है। उधर

दूसरी तरफ आजाद काश्मीर में क्या हाल है ? वहां के रहने वा
भाई इन हकों के लिए तरसते हैं।

मैं यह कहना चाहता हूं कि पाकिस्तान के लोगों और वहां 
जनता से हमारी कोई लड़ाई नहीं है। हम उनकी भलाई और तरक्
चाहते हैं। और हम उनके साथ दोस्ती और अमन से रहना चाहते है

लेकिन हमारा मुकाबला एक ऐसी हकूमत से है, जो हमारी त
आजादी, अमन, लोकतन्त्र में —जमहूरियत में—विश्वास नहीं रखती
वह कश्मीर में रायशुमारी लेने की बात करती है, मगर खुद अप
मुल्क में वह आजादी से चुनाव कराने को तैयार नहीं। जम्मू-कश्मी
राज्य में सन् १९४९ से लेकर अब तक तीन बार आम चुनाव 
चुके हैं। पहले जो एक राजा की मौरूसी रियासत थी, अब 
हमारी यूनियन का एक राज्य है, जिसको कॉंस्टीट्यूशन के रूप
पूरे नागरिक अधिकार, अपने मजहब पर चलने की पूरी आजा
और चुनाव की आजादी मिली हुई है। क्या पाकिस्तान प
इलाके में इस बात पर रायशुमारी—जनमत—कराने के लि
तैयार होगा कि वे पाकिस्तान में रहना चाहते हैं या नहीं
क्या पाकिस्तान पूर्व-बंगाल में लोगों से इस बात पर राय ले
चाहेगा कि वे रावलपिंडी की हुकूमत के मातहत रहना चाहते
कि नहीं।

यह लड़ाई एक उसूल की लड़ाई है। सवाल यह है कि 
किसी मुल्क को यह हक है कि वह दूसरे मुल्क में जनता की 
हुई सरकार को उलटने के लिए अपने हथियारबन्द आदमियों
भेजें ?

मुझे यू० एन० ओ० के सेक्रेटरी-जनरल से एक खत मिला
जिसमें दोनों मुल्कों से यह अपील की गई है कि वे लड़ाई-बन्दी ल
को न तोड़ें हम सेक्रेटरी-जनरल की इस बात पर संजीदगी से 
करके उनको जवाब देंगे।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के सेक्रेटरी-जनरल ने पाकिस्तान और भारत दोनों से शांति की अपील की है। हम शांति में, अमन में विश्वास रखते हैं। हमने दुनिया में शांति के लिए—अमन के लिए काम किया है और बराबर करते रहेंगे।

जो लोग अमन चाहते हैं, उनको हमेशा हमारा समर्थन और हमारी मदद मिलेगी। लेकिन जो असली हालत और स्थिति है, उससे आंख बन्द नहीं की जा सकती। सिर्फ लड़ाई-बन्दी या सुलह, शान्ति नहीं ले आता। हम तो एक के बाद एक सुलह करते जाएं और फिर इस बात का रास्ता देखें कि पाकिस्तान फिर कब अगली फौजी कार्रवाई शुरू करता है। यह कभी नहीं हो सकता।

अय्यूब साहब ने अपने हाल के ब्राडकास्ट में अक्टूबर, सन् १९६४ में उनसे जो मेरी बातचीत हुई थी, उसका जिक्र किया है। यह बिल्कुल सही है कि मैं उनसे मिलने को इसी इरादे से गया था कि भारत और पाकिस्तान के बीच जो अन्तर या गलतफहमियां हैं, दूर हो सकें। उन्होंने कश्मीर का सवाल भी उठाया था और कहा था कि पाकिस्तान में इसके बारे में बड़ी जबर्दस्त भावना है। इस पर मैंने भी उनसे बिल्कुल साफ लफ्जों में कहा था कि अगर पाकिस्तान के लोगों के मन में इस पर बहुत ज्यादा जोश है, तो हिन्दुस्तान में भी लोगों के जजबात—उनकी भावनाएं—यदि उससे ज्यादा नहीं तो उतनी ही जोर की हैं। इसलिए इस मसले का कोई आसान हल नहीं हो सकता। मैंने उनसे कहा था कि वे और कोई दूसरे सवाल जो आज ज्यादा जरूरी हैं, उन पर ध्यान दें, जैसे लड़ाईबन्दी लाइन के पार से गोलाबारी के सवाल पर। अय्यूब साहब ने कहा था कि उनको खुद इस बात पर बहुत फिक्र है और वे इस मसले को फौरन लेना चाहते हैं। असल में उन्होंने खुद यह सुझाव दिया कि मसले को सुलझाने के लिए दोनों ओर से

कमांडरों में बातचीत हो मगर जब इसके बाद यह तजवीज पेश की गई तो पाकिस्तान नें इसे मन्जूर नहीं किया। अय्यूब साहब नें भारत से जाने वाले मुसलमानों का भी सवाल उठाया और मैंने भी उनसे कहा कि भारत में भारी तादाद में पाकिस्तान से निकाले हुए लोग चले आ रहे हैं। हम लोगों में यह तय हुआ कि दोनों ओर के घरेलू मामलों के मन्त्री इस मसले पर विचार करने के लिए मिलें। मेरे हिन्दुस्तान लौटने के बाद घरेलू मामलों के मन्त्रियों की मुलाकात के लिए कार्रवाई शुरू की गई। कई बार इसके लिए तारीखें सुझाई गईं। मगर किसी न किसी बहाने पर काफी दिनों तक पाकिस्तान इस बात को टालता रहा। आखिर में २६ नवम्बर, १९६४ की तारीख तय हुई और भारत के नुमाइन्दों के नामों का ऐलान भी कर दिया गया। मगर पाकिस्तान ने इस बहाने पर इस मुलाकात को टाल दिया कि वह अपने आम चुनावों में फंसा हुआ है। मैं इन बातों को इसलिए कर रहा हूं, क्योंकि ऐसा मालूम होता है कि प्रेसीडेंट अय्यूब इनको बिल्कुल भूल गए हैं। क्योंकि इसके अलावा, उन्होंने अपनी तकरीर में जो कुछ कहा, उसकी ओर कोई वजह नहीं हो सकती।

इस नाजुक घड़ी में देशवासियों, हमारे मुल्क के रहने वालों की क्या जिम्मेदारियां हैं, क्या फर्ज और कर्त्तव्य है? इस वक्त आपका सबसे बड़ा फर्ज यह है कि आप इस बात की पूरी कोशिश करें कि देश में सब मजहब के लोग मेल-जोल से आपस में इसी तरह रहें और शान्ति न टूटने पाए।

पंजाब और दिल्ली में फौरन सिविल डिफेंस—नागरिक सुरक्षा की योजना लागू की जा रही है। बाद में इसे और हल्कों में भी लागू किया जाएगा। आप लोग इस योजना में अपना भाग लेने के लिए उन्हीं जजबात—भावना से आगे बढें, जिससे हमारे सिपाही मोर्चे पर लड़ रहे हैं। कारखाने में कामगारों से मैं निजी तौर पर अपील करना चाहता हूं। मैं उनकी देशभक्ति से वाकिफ हूं और मुझे

यह पूरा यकीन है कि उनके मन में सबसे ऊंची जगह अपने देश के लिए ही है। हमें अपने कारखानों में ज्यादा से ज्यादा सामान बनाना है, अपने डाक-तार, सड़क, रेल, हवाई और पानी के रास्तों को चालू रखना है। अपने बन्दरगाहों में दिन-रात काम करना है और अपनी सप्लाई लाइन को चौबीसों घंटे चालू रखना है। हरेक कामगार भाई को इस काम को पूरा करने के लिए अपनी जान लड़ा देनी चाहिए।

मुल्क को आगे आने वाले कठिन समय के लिए तैयार होना है। हर आदमी को अपना फर्ज पूरी तरह, दिल से अदा करना चाहिये। हो सकता है कि हवाई हमलों से हमें नुकसान उठाना पड़े। राष्ट्र को, कौम को, हंसते-हंसते कष्ट और मुसीबत उठाने और कुर्बानी देने के लिए तैयार होना होगा। आजादी की रक्षा के लिए, उसकी हिफाजत के लिए, यह कीमत हम सब को देनी होगी। आज सारे राष्ट्र के लिए—सारी कौम के लिए—यही पुकार है कि वह इस चुनौती का डटकर सामना करने के लिये तैयार हो जाए।

(२६ सितम्बर १९६५ को नई दिल्ली के रामलीला मैदान में दिया गया दूसरा भाषण)

# बहादुरो बढ़ते जाओ !

मीर मुश्ताक साहब, बहनो और भाइयो,

पाँच अगस्त एक ऐसी तारीख है जो हमारे इतिहास में, एक खास जगह पाएगी और इस तारीख को भूलना कुछ समय के लिए, बहुत मुश्किल होगा। अभी वह ५ तारीख का सिल-सिला अभी खत्म नहीं हुआ। आप जानते हैं कि ५ अगस्त को काश्मीर के अन्दर पाकिस्तान के हजारों आदमी हथियारों के साथ और काफी तेजी से बढ़े और जोरदार हथियारों के साथ

काश्मीर में आये और उन्होंने एक खास हालत न सिर्फ काश्मीर में, बल्कि हम सब के लिए एक खतरे की हालत पैदा की। एक सूबे के अन्दर अगर ५-६-७ हजार आदमी बाहर से पहुंच जाएं और हथियारों के साथ, तो आप अन्दाजा कर सकते हैं कि यह कितनी खतरनाक सूरत पैदा हो सकती है। अभी भुट्टो साहब ने कहा था कुछ महीने पहले कि काश्मीर के लिए उनका एक 'मास्टर-प्लान' है। यह कहा था कि हमारी कोई बड़ी स्कीम है और उस स्कीम के मातहत हम काश्मीर के अन्दर काम करेंगे। एक कदम के बाद दूसरा कदम उठाएंगे। वह बात हमने सुनी थी, कुछ उसके थोड़े बहुत खतरे का हमें अन्दाजा भी हुआ था। लेकिन दरअसल यह ख्याल नहीं था कि कच्छ के झगड़े के बाद और कच्छ पर एक समझौता होने के बाद इतनी जल्दी काश्मीर पर वह अपना 'मास्टर-प्लान' चलाने की कोशिश करेंगे। आप जानते हैं कि कच्छ में हमने बहुत बचाया, हमने कोशिश की कच्छ में झगड़े पर कि अगर हम सुलह और शान्ति से उस मसले को तय कर सकते हैं तो करने की कोशिश करें और हमने की और हमने एक दस्तखत किया कि जिससे हम कच्छ के बारे में आपस में बातचीत करेंगे। लेकिन सबसे रंज की बात हमारे लिए यह है कि, और जिससे कि मुझे धक्का लगा वह यह कि, जब वह और हम कच्छ के समझौते पर दस्तखत कर रहे थे, उस वक्त पाकिस्तान में काश्मीर पर हमला करने की तैयारी पूरी तरह से हो रही थी। इससे ज्यादा नामुनासिब बात, गलत बात और क्या हो सकती है? हम तो अपनी तरफ से यह कोशिश करें कि जो हमारी सरहदों के मामले हैं वे सुलह और समझौते से तय हों, लेकिन दूसरी तरफ वह भी उस पर दस्तखत करें, मगर दस्तखत करते हुए इस बात की तैयारी करें कि वह कच्छ से भी कहीं ज्यादा बड़ा हमला हमारे मुल्क पर करेंगे और यह जो एक कच्छ की बात उन्होंने

अपनी तरफ से की, वह सिर्फ एक दिखावटी बात थी, बनावटी बात थी। ऐसी सूरत में जब यह काश्मीर पर उनका हमला हुआ तब हमें उसका मुकाबला पूरी शक्ति और पूरी ताकत के साथ करना था। उनका ख्याल था कि काश्मीर में एक बगावत होगी, वह समझते थे कि क्रांति होगी काश्मीर में और सारा काश्मीर इसके लिए तैयार बैठा है कि वह पाकिस्तान के साथ जाये और उन्होंने उस क्रांति या उस इनकलाब को पैदा करने के लिए यह हथियारबन्द आदमी काश्मीर में भेजे और जब उन्होंने उन्हें भेजा तब हमें भी सिक्योरिटि फोर्सेस के जरिए उनका मुकाबला करना पड़ा ताकत के साथ। आसान बात नहीं थी, छिपे हुए, चुपके-चुपके सैंकड़ों पहाड़ी रास्तों से उनका आना और कहीं आग लगा देना, कहीं पुलिस की चौकियों पर हमला कर देना, कोशिश करना कि वह हवाई अड्डे पर पहुंचें, बस्ती में आग लगायें, इन तमाम चीजों को जब वह कर रहे थे तो जैसा मैंने कहा कि एक तरफ हमारी सिक्योरिटी फोर्सेस उनका मुकाबला कर रही थीं, दूसरी तरफ काश्मीर में रहने वाले उनको न कोई जगह देते थे, न पनाह देते थे न खाने के लिए सामान देते थे और उन्होंने यह साबित किया कि काश्मीर एक आजाद हिन्दुस्तान का हिस्सा है और उसका पाकिस्तान से कोई मतलब नहीं, कोई सरोकार नहीं।

यह बात है मेरे ख्याल में, पाकिस्तान को इससे एक बड़ा धक्का लगा कि उन्होंने जो तस्वीर बनाई थी, यह समझा था कि काश्मीर तो दो-तीन दिनों के अन्दर पाकिस्तान में आकर मिल जायगा और जब उन्होंने देखा कि वे इस बात में कामयाब और सफल नहीं हुए तब उन्होंने एक दूसरा रास्ता हमले का अख्तियार किया। हमने अपनी तरफ से, आप देखेंगे, कि हमने कोई आक्रमण-कारी, कोई हमला अपनी तरफ से एक भी इंच पर पाकिस्तान के

शुरू में नहीं किया और जब कि वह हमलावर भेज रहा था, काश्मीर में, तब भी हमने उनको रोकने का ही काम किया था। लेकिन जब कि पाकिस्तान को उसमें नाकामयाबी हुई, काश्मीर मजबूती से डटा रहा, काश्मीर की गवर्नमेण्ट और काश्मीर के रहने वालों ने इनका मुकाबला किया तब फिर पाकिस्तान ने सोचा कि अब फौजों के साथ काश्मीर पर हमला करना चाहिए। अभी तक तो वह छिपा हुआ था, अभी तक उसने छिपकर हमला किया था, कहता था कि यह जो लोग आए हैं ये तो काश्मीर के अन्दर के लोग हैं, काश्मीर के रहने वाले हैं और यहां काश्मीर में रहने वाले ही हिन्दुस्तान की गवर्नमेण्ट के खिलाफ काम कर रहे हैं। लेकिन यह बात कब तक छिपी रहती। जब उनको उसमें सफलता और कामयाबी नहीं मिली तब उन्होंने छम्ब के इलाके में अपनी पूरी फौज के साथ, सजधज के साथ, पूरे सम्मान के साथ १०० टैंकों के साथ हमला किया। मामूली बात नहीं थी कि ८०-८५-९० टैंक लिए हुए वे एक इलाके पर हमला करें। वह एक पूरी तैयारी के साथ आए थे और हमें अपनी तैयारी, उसका मुकाबला करने की चटपट में तैयारी करनी थी कि हम उनका उसमें मुकाबला करें। लेकिन न सिर्फ उन्होंने सीज-फायर लाइन को पार किया छम्ब में, बल्कि जो इन्टरनेशनल बार्डर था उसको भी उन्होंने पार किया। इंटरनेशनल सरहद पार करके वे छम्ब और जम्बू के अन्दर आए और जैसा मैंने कहा एक जबर्दस्त फौज लेकर आए जिसका कि हमने चटपट एक तेजी के साथ मुकाबला किया। लेकिन साथ ही साथ छम्ब पर उनका हमला हुआ, उनकी नजर हमारे और इलाकों पर भी थी। वे पंजाब, हमारे पूर्वी पंजाब पर, हमारे पंजाब के प्रदेश पर उनकी नजर थी और वहां वह हमला करना चाहते थे। आप जानते हैं कि अमृतसर पर बाघा के पास जो

हमारा हवाई अड्डा है वहां उन्होंने अपना हवाई-जहाज भेजा, राकेट गिराया और हवाई अड्डे को बरबाद करने की कोशिश की।

यह भी अय्यूब साहब कहते रहे, हमें क्या हम तो अपने टैंकों को लेकर आगे बढ़ेंगे और सैंकड़ों टैंकों के साथ और टहलते हुए दिल्ली पहुंच जाएंगे। तो इस तरह से टहलते-घूमते हुए दिल्ली आने का उनका इरादा था और जब यह इरादा हो तो कुछ अगर हम भी थोड़ा लाहौर की तरफ टहल कर चले गए तो मैं समझता हूं कि मैंने या हम लोगों ने कोई गलत बात तो ऐसी नहीं की। हमारे लिए चारा ही क्या था ? अब हमारे पास कोईचारा न था ? हमारे यूनाइटेड किंगडम को सरकार तथा ब्रिटिश सरकार ने बड़ा हमला हमारे ऊपर किया कि जब हम लाहौर की तरफ बढ़े तब उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान ने पाकिस्तान पर हमला किया है और जब हजारों हमलावर काश्मीर के अन्दर घुसे तब ब्रिटिश गवर्नमेंट की जुबान बिल्कुल बन्द थी। जब छम्ब पर हमला किया पाकिस्तान ने और इंटरनेशनल सरहद को पार किया जैसा मैंने कहा, इतने बड़े टैंकों और फोर्सेस के साथ उन्होंने हमला किया तब फिर ब्रिटिश गवर्नमेंट या यूनाइटेड किंगडम के प्राइम-मिनिस्टर ने यह नहीं कहा कि पाकिस्तान ने हिन्दुस्तान पर हमला किया है।

जब हमने देखा कि पाकिस्तान इस तेजी से बढ़ रहा है कि अगर सिर्फ हम अपनी रक्षा और हिफाजत की बात करते हैं, तब फिर हमारी वह हालत नहीं रहेगी जिसमें हम पाकिस्तान को बढ़ते हुए रोक सकें। और आज अपने मुल्क की आजादी को खतरे में डालना, न हम इसे कर सकते हैं। और न कोई गवर्नमेंट दुनिया की इसे कर सकती है। हमारा इरादा यह था, हमारा पक्का इरादा है कि हम शांति को मानते हैं। लेकिन शांति के साथ अगर हम दुश्मन का मुकाबला शांति के साथ कर सकते हैं तो करेंगे। लेकिन कायरता

और बुजदिली के लिए जगह नहीं हो सकती। हथियारों का जवाब हथियार ही हैं और उनका मुकाबला होगा और इसलिए आज इस बात की जरूरत थी, जो हमारी फौजों ने किया और जब उन्होंने, अब आखिर राज की बात तो नहीं बतानी चाहिए, लेकिन जब हमारे जरनल्स हमारे पास आये और उन्होंने इसके बारे में पूछा तो मैं क्या जवाब दे सकता था ? मैंने कहा 'बहादुरो बढ़ते जाओ और कोई बात सोचने की नहीं।'

यह एक हिस्सा लड़ाई का एक मायने में कुछ अभी थोड़े दिन के लिए रुका है। मैं इतना ही कहूंगा कि हम बढ़ते गये हैं, चाहे सियालकोट हो, चाहें कसूर हो, चाहे लाहौर हो और चाहे इधर राजस्थान में जो गदरा शहर हो हमने लिया, उधर हमने अनेक जगहों पर अपनी फौजें पहुंचाई हैं और वही फौजें वहां हैं। अगर आज दुनिया ने और सिक्योरिटी काउंसिल ने एक शान्ति की आवाज उठाई, सुलह की बात कही, लड़ाई रोकने की बात कही, हमें इसमें एतराज नहीं, हम जहां तक हो सके, नहीं चाहते कि जंग या लड़ाई, बड़ी लड़ाई हो और सारी दुनिया उस लड़ाई के अन्दर आ जाए। हम दुनिया की लड़ाइयों को बचाते रहे हैं। हम कोशिश करते हैं कि और जगह भी दुनिया में लड़ाई न हो, चाहे हम उसमें सफल हुए या नहीं। हमारे नेता जवाहरलाल जी ने अपने जीवनकाल में दुनिया में शान्ति बनाये रखने की पूरी कोशिश की और कई ऐसे काम किये कमाल के कि जिससे दुनिया में आग लगते-लगते बची। तो आज हम उन सिद्धांतों को, उन बातों को नहीं भूल सकते हैं और हमारा देश और हम तो अपने देश में शान्ति और धीरज से रहना चाहते हैं। अपने मुल्क की हालत को बदलना चाहते हैं, यहां की गरीबी को मिटाना चाहते हैं, एक नया समाज बनाना चाहते हैं। हमें न किसी की जमीन चाहिए, न हमें किसी का इलाका

चाहिए, हम अपने देश में खुश हैं और हम जरा भी नहीं चाहते कि हमारी वजह से दुनिया में कोई महासमर हो या कोई बड़ी लड़ाई ही। तो जब यह सुलह की बात कही गई और लड़ाई को बन्द करने की बात कही गई तो हमने उसे माना, फौरन माना। जब यहां पर सैक्रेटरी जनरल आये यूनाइटेड नेशंस के, तो उनसे बातचीत की और उन से बातचीत के बाद हमने उन्हें जवाब दिया कि अगर आप लड़ाईबन्दी की बात चाहते हैं तो हम उसे मानने के लिए तैयार हैं और आप जानते हैं कि जब सिक्योरिटी काउंसिल ने वह प्रस्ताव पास किया तो हमने फौरन अपनी मंजूरी लड़ाईबन्दी की दी।

वह लड़ाईबन्दी तो हुई लेकिन पाकिस्तान की तरफ से आखरी दिन भी और एक दिन बाद भी जब कि यह लड़ाई बन्दी का ऐलान हुआ, तब भी कुछ न कुछ हमला, कुछ न कुछ शैलिंग कुछ अपने हथियारों के साथ जिन इलाकों में हम थे लाहौर के पास या कसूर के पास, उन्होंने आने की कोशिश की। कुछ हमले किये। अब यह कहाँ तक मुनासिब है इसका फैसला यूनाइटेड नेशन्स या सिक्योरिटी काउं-सिल करे।

कहा गया है कि हमने हमला किया। एक भी उनके इलाके में, किसी नई जगह कहीं भी हमारी फौजों ने इस लड़ाई के बन्द होने के बाद कहीं कोई हमला किया हो यह बात बिल्कुल गलत है और हमने नहीं किया। मगर खैर वह करते हैं और हमें उसका जबाब तो देना ही है। यानी उनको रोकना है। लेकिन अपनी तरफ से नेकनीयती के साथ लड़ाईबन्दी को कायम रखना चाहते हैं। मगर यह है कि पाकिस्तान तो धमकी देता चला जाए, भुट्टो साहब रोज धमकी की तकरीरें करते जाएँ और सिक्योरिटी काउंसिल या बड़े-बड़े मुल्क उनसे दबते चले जाएँ तो फिर हम इस दबने को कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं और कब तक बर्दाश्त करेंगे। अगर भुट्टो साहब यह चाहते

हैं कि कश्मीर का फैसला हो जाए तब वह अपनी फौजों को हटायेंगे तो मैं उनसे यह दरख्वास्त करना चाहता हूं कि कश्मीर का इस तरह फैसला नहीं हो सकता है और अगर वह फौजें अपनी हटाने को तैयार नहीं तो हम भी वहीं बैठेंगे और बैठे रहेंगे जहां आज हैं। हम उनसे बहुत आगे हैं और बहुत जगहों पर हैं पाकिस्तान में। इसलिए हमें कोई बहुत चिन्ता नहीं है। अगर वह बैठा रहना चाहते हैं तो हम भी बैठे रहेंगे।

यह कश्मीर का मसला, उस पर आज कुछ कहने की जरूरत नहीं। वह चाहते हैं कि हम हाजीपुर से हट जाएं, टिथवाल से हट जाएं, कारगिल से हट जाएं, अरे साहब आप तो सारे हमारे आजाद काश्मीर पर कब्जा किये हुए बैठे हैं, वह सारा काश्मीर जो आजाद क़ाश्मीर कहलाता है कोई पाकिस्तान का हिस्सा है ? गैरकानूनी तरीके से आपने उसको दबाकर रखा हुआ है। सिक्योरिटी कांउसिल की पुरानी तजबीजें, उसके पुराने प्रस्ताव, उसके पुराने रेजोल्यूशंस को देखिये तो जम्मू-काश्मीर का, जिसमें आजाद काश्मीर शामिल है उसका सारा इंतजाम, उसका सारा एडमिनिस्ट्रेशन सब जम्मू-काश्मीर गवर्नमेंट के अन्डर होना चाहिए, उन्हीं को चलाना चाहिए। यह सिक्योरिटी काउंसिल का पुराना रिजोल्यूशन है। अब पहले तो आप खाली कीजिए तब हमसे कहिए—ये टिथवाल और कारगिल के बारे में। हम तो चन्द कदम आगे गए हैं, कोई बहुत ज्यादा तो नहीं, खैर कदम नहीं, मीलों में आगे गये हैं। मगर इस तरह से काश्मीर की बात को डर और धमकी से कराने की या चलाने की कोशिश करना हमारी जगह पक्की है काश्मीर के बारे में। काश्मीर हिन्दुस्तान का अटूट हिस्सा है और वह टूट नहीं सकता है और यह बात आज समझ लेनी है। हमें रंज है, हमें अफसोस है कि आज पाकिस्तान ने काश्मीर को लेने के लिए एक फौजी हमला किया है। कौन-सा इंटर

नैशनल लॉ है, कौन सा यह कानून है कि जहां कहीं इस तरह का कोई एक मामला सिक्योरिटी काउंसिल में पड़ा हुआ हो, वहां एक मुल्क दूसरे मुल्क पर हमला करे फौजों के जरिये, अपनी ताकत और हथियारों के द्वारा उस पर कब्जा करना चाहे, यह कहां तक एक कानूनी बात है और यह कहां तक मुनासिब बात है ? इसलिए मैं चाहता हूं कि आज दुनियां के हमारे सब देश और सिक्योरिटी काउंसिल इस बात को महसूस करें कि आज हमारी हिन्दुस्तान की सही लीगल पोजीशन क्या है ? हमारी कानूनी हैसियत, कानूनी बातें हमारी क्या हैं और हमारा क्या हक, क्या अधिकार और क्या अख्तियार काश्मीर पर है और तब वह दूसरी बातों को सोचें कि जैसे काश्मीर के मामले को हल किया जाये। ठीक है हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का सम्बन्ध अच्छा हो, उसके लिए कोई कोशिश करता है तो जरूर करे उसमें हमें एतराज नहीं है, आखिर हमें पड़ौसी मुल्क बनकर रहना है और यह आपस में एक खिचाव, एक मनमुटाव, एक दुश्मनी के जज्बे और भावना से रहना यह पड़ोसी मुल्कों के अन्दर बहुत बड़ी मुसीबतें और दिक्कतें पैदा करता है, तो वह बात एक अलग बात, लेकिन अगर काश्मीर को बुनियाद बनाकर यह सारे समझौते की शक्ल बनाने की कोशिश करें तो हमारे लिये उसको मानना नामुमकिन है और हम अपनी जगह से नहीं हट सकते हैं।

यह सिक्योरिटी काउंसिल की मीटिंग कहते हैं सात दिन के अन्दर में बुलाई जाये और पाकिस्तान कहता है कि एक हफ्ते में सिक्योरिटी काउंसिल की मीटिंग बुलाइये। किस बात के लिए बुलाइये ? क्या करना है सिक्योरिटी काउंसिल में और सिक्योरिटी काउंसिल में अभी तो पहला हिस्सा जो प्रस्ताव का है सही मायने में सीज-फायर भी नहीं हुआ एक तरह से। वह भी बात पक्की नहीं हुई। तो यह दूसरी और बातों का सवाल अभी कैसे पैदा होता है ? पहले पहला

हिस्सा तो पूरा हो, फिर काश्मीर का सवाल उठता या और चीजें उठती हैं। लेकिन सिक्योरिटी काउंसिल में भुट्टो साहब अपनी आवाज सुनने के बड़े ख्वाशहिमन्द हैं। कभी-कभी लोगों को अपनी आवाज सुनना बहुत अच्छा लगता है। तो या तो वे इसलिए सिक्योरिटी काउंसिल की मीटिंग चाहते हैं। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं और सिक्योरिटी काउंसिल के लिडरान की अगर गैर-जरूरी तारीख पर बगैर सही कदम उठाए हुए और बातों के पूरा होते हुए अगर सिक्योरिटी काउंसिल की मीटिंग हुई तो हम क्या करेंगे जाकर ? शायद हमें सोचना पड़े कि हम जाएँ भी या न जाएँ। लेकिन हम उम्मीद करते हैं कि सिक्योरिटी काउंसिल अपनी मीटिंग को सोच-समझकर बुलायेगी और एक सही बात, सही रास्ता जो यह सारा प्रोसेस होने वाला है , जो कुछ यह प्रस्ताव है, जो तजवीज उनकी है, वह सही ढंग से जब अमल में लाई जाए तब उसके बाद ठीक है, वह सिक्योरिटी काउंसिल को बुलाना जरूरी समझें तो बुलाएँ और हम उसमें हिस्सा लेंगे। हम बहस में हिस्सा लेंगे, हम अपनी बातें कहेंगे।

मैं आपसे यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि यह जो लड़ाईबन्दी है उस को कोई ऐसी चीज, एक पक्की बात मान लेना और हम किसी मायने में ढीले हो जाएँ तो यह एक मुनासिब बात नहीं होगी। हमें बहुत सोच-समझकर बात करना है और जरा यह भी समझना कि आज हम लड़ाई के अन्दर नहीं हैं तो हम बड़ी भूल में पड़ जाएँगे और मेरा आपसे खासतौर पर निवेदन है कि दो-तीन चीजें जरूरी हैं। हम नहीं जानते कि यह लड़ाई कब-क्या शक्ल अख्तियार कर ले और फिर चीन का भी हमला, चीन की भी धमकी लगी हुई है। एक भयानक स्थिति का मुकाबला हमें करना है। उससे कोई घबराने की बात नहीं, मगर आप इससे अन्दाजा करें कि आज मुल्क में कितने डिसिप्लीन की जरूरत होगी, कितने अनुशासन की जरूरत

होगी, कितनी तकलीफ उठाने के लिए तैयार रहना पड़ेगा, कितना त्याग करने के लिए हमें तत्पर रहना होगा। यह बात आज अपने मनों में हमको रखनी है, अपने दिलों में रखनी है और उसके मुताबिक काम करना है। हमें अपने और काम रोकने पड़ सकते हैं लेकिन अपनी फौजी ताकत को बढ़ाना, उसकी शक्ति को बराबर तरक्की देना, अपने हथियारों को ठीक रखना, उनको और भी ज्यादा बढ़ाना, यह सारी चीजे ऐसी हैं जिनको पहली जगह देनी पड़ेगी, चाहे हमको खाना न मिले लेकिन हमें उस चीज को पूरी तरह से करना हैं। मैं आज तो नहीं कहता लेकिन मौका आ सकता है जब हमें खाने की भी मुसिबत और दिक्कत आ पड़े। हमारे दोस्त कुछ मुल्क हैं, वे मदद करना चाहें हम उनका स्वागत करेंगे। लेकिन न मदद करना चाहें, ऐसा मौका भी आ सकता है जब वह मदद न करना चाहें, फिर हमें यहाँ अपने अन्दर कम से कम खाने की बात जो है उसको किसी न किसी तरह से पूरा कराना होगा और मैं समझता हूं कि हर दिनों और हर अगले दो-तीन महीनों के अन्दर हमें तमाम गांवों-गाँवों में इस बात की खबर पहुंचानी है कि इस समय अपने देश में हमें अनाज पैदा करना है। कैश-क्राप्स की जो खेती है उनको कैश क्राप्स को रोकना है, कम करना है, लेकिन गेहूं, चावल, जौं, बाजरा इन चीजों को ज्यादा से ज्यादा पैदा करना है और मैं चाहता हूं कि आज हर एक गांव के अन्दर ऐसा संगठन हो कि जिसमें हम ज्यादा से ज़्यादा अपनी उपज, अपनी पैदावार, अपनी खेती को तरक्की दे सकें और फिर जो भी हम पैदा करें उसको सारे देश के लिए अब हमें एक तरफ तो पैदावार को बढ़ाना है और दूसरी तरफ खर्च कम करना है, कम इस्तेमाल करना है। अब यहाँ तो मेरे लिए, मैं जैसे मांस या गोश्त नहीं खाता, तो खैर अपने लिए तो नहीं लेकिन जो खाते हैं उनको मेरी राय में चावल या गेहूं कम खाना चाहिए।

उसको बचाना है, उसको कम करना चाहिए। होटलों में ज्यादा खर्च होता है, बड़े शान-बान के साथ एक के बाद दूसरी प्लेट चली आती हैं, यह सब रोकना चाहिए जो जरूरी हैं, जितना खाने के लिए आवश्यक है, उतना ही खाना चाहिये। मैं आपसे इन बातों को बड़ी गम्भीरता से कह रहा हूं। हमें सोचना है कि हम किस तरह से अपने खर्च को बचा सकते हैं। शादी-ब्याह में भी आज थोड़ी दावत हो, लम्बी-चौड़ी दावतें करना यह मुनासिब नहीं है। तो इस तरह से जो-जो तरीके हैं, जो हो सकता है उसे हमें अपनाना चाहिए और हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम बचाकर अपने पास रखने की कोशिश न करें।

यह भी मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि आज इस लड़ाई के समय लोग समझें कि चलो भाई एक-दो महीने के लिए रख लो यह गलत बात है। जितनी आज जरूरत है, हफ्ता भर, दस दिन, जितने दिन के लिए आप लाते हैं एक भी दाना अपने घर में उससे ज्यादा रखना यह देश के साथ अन्याय करना है। क्या डरना है, बचाकर क्या करेंगे, दो-चार-दस आदमी अपनी हिफाजत कर लें लेकिन लाखों की हिफाजत न रहे तो अपने जीने से क्या फायदा? इस जीने से मरना अच्छा है। हम जानते हैं कि हम अपनी हिफाजत कर सकेंगे। लेकिन मैंने आपसे शायद कहा था कि मैं जब एशिया गया था तो लेनिनग्राड में एक शहर के अन्दर पांच लाख आदमी मरे अपने शहर की हिफाजत में अपने हथियारों के द्वारा, पांच लाख एक शहर में, लेकिन छह आदमी मरे जिनको खाना नहीं मिल सका। तो जब लड़ाई का समय आता है, मैं यह नहीं कहता कि यह भयानक चित्र अपने देश में होने वाला है, मरने की तो बात और है। लेकिन हम उम्मीद करते हैं कि आज हम अपने देश में अपनी जरूरत

भर के लिए पैदा करेंगे और हर आदमी अपने भाई को, अपने पड़ोसी को उसके साथ आधी रोटी बांटकर खायेगा, लेकिन देश के अन्दर भुखमरी नहीं होने देगा। आज इस बात का हमें निश्चय करना है।

हमें कीमतों के बारे में, दामों के बारे में भी, मैं तमाम सब व्यापारियों से कहना चाहता हूं, कि ठीक है गवर्नमेंट अपनी जिम्मेवारी को निभाये, कानूनी कार्रवाई करे। लेकिन मैं तो आज यह अपील करना चाहता हूं सबसे कि कानूनी और नजरबन्दी की आज यह बातें करना अच्छी नहीं लगती। आज इस समय जरूरत इस बात की है कि हर एक कीमतों को ठीक हालत में बनाकर रखने की कोशिश करे! न वह बहुत घटें और न वह बहुत बढ़ें। उनमें स्थायीपन रहे कि जिसकी वजह से लोगों का काम सहूलियत के साथ चल सके। तो उधर भी हमें बराबर ध्यान देने की जरूरत है।

मैं जानता हूं कि जब समय आता है तब फिर आपस में अपने आप हम संगठन करते हैं, हम सिविल डिफेन्स का इन्तजाम कर लेते हैं। देखते-देखते दिल्ली शहर में दो-चार दिनों के अन्दर जो यहाँ रहने वाले लोगों ने जिस तरह से सिविल डिफेंस का इन्तजाम किया मैं उसके लिए आपको बधाई देना चाहता हूं। तमाम शहर का शहर अन्धेरे में था, लेकिन कोई घटना, कोई वाकयात नहीं। बच्चे भी, लोग भी, जहां भी कहीं रोशनी हो उसको बुझाने की कोशिश में लगे हुए थे। बहुत शान के साथ, बगैर पहले से तैयारी किये हुए हमने ब्लैक आउट और दूसरे कामों को पूरा किया। मैं चाहता हूं कि अफसरान जो करें या जो न करें, आपको जो नसीहतें और जो हिदायतें मिलें, यह जमाना ऐसा है कि इसमें यह नहीं देखा जाता कि सरकारी अफसरान आकर काम कर रहे हैं या नहीं बल्कि हमको,

आपको हर एक को अपने डिफेंस के लिए, अपनी हिफाजत के लिए, अपनी चौकीदारी के लिए कोई बम गिरे तो उससे घबराकर भागने की नहीं बल्कि डटकर वहां सतत करने का काम है। यह सारा काम हमें अपने आप संगठित करना है, हर शहर में करना है, सारे देश में करना है और मुझे विश्वास है कि हमारे देश में रहने वाले नौजवान इन कामों में पीछे हटने वाले नहीं हैं।

एक चीज और कहना चाहता हूं। बी० बी० सी० ने यह कहा है, वह एक अंग्रेजी एजेन्सी है, कि लालबहादुर तो हिन्दू है, यह प्राइम मिनिस्टर हिन्दू है और इसलिए आज कुछ लड़ाई लड़ने को तैयार.हो गया है। हिन्दूपन कुछ उसके दिमाग में है या क्या है? बड़े सुन्दर-सुन्दर लफ्ज उन्होंने कहे थे। खैर, यह हमारे देश में मैं हिन्दू जरूर हूं और ये मीर मुश्ताक साहब मुसलमान हैं और एंथोनी साहब एंग्लो-इंडियन हैं और दूसरे सिक्ख हैं, पारसी भी हैं। हमारी तो यही खूबी है कि हमारे देश में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख पारसी सभी धर्म और मजहब हैं। हमारे यहाँ मन्दिर हैं, मस्जिद हैं, गुरुद्वारे हैं, गिरिजाघर हैं, सभी हैं। लेकिन हमारी खूबी यह है कि उसको हम पालिटिक्स में, सियासत में नहीं लाते। हम कोई हिन्दू राष्ट्र नहीं बनाते या मुस्लिम राज्य नहीं बनाने की कोशिश करते मुसलमान। यह देश हमारा एक ऐसा देश है जो कि पाकिस्तान की तरह एक इस्लाम मजहब और इस्लामी धर्म को मानने वाला एक इस्लामी मुल्क नहीं है। हमारा तो एक आज उनसे अन्तर और फर्क यह है कि जहां एक तरफ वह मजहब को सियासत और पालिटिक्स का एक हिस्सा बनाकर रखते हैं, वहाँ हमारे धर्म को, मजहब को हर एक को आजादी है कि वह अपने धर्म और मजहब को माने अपनी पूजा अपनी परिश्तश करे। लेकिन इस बात को याद रखिए कि जहां तक देश की राजनीति की बात है तो हर एक हिन्दुस्तानी है

हिन्दुस्तान का रहने वाला है, चाहे वह सिक्ख हो, चाहे पारसी हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे हिन्दू हो और इस तरह की बातों का चलाना एक गलत प्रचार करना, दुनिया को यह बताना कि हम तो सिर्फ छोटी दृष्टि से, एक छोटी निगाह से देखकर इस बात को कर रहे हैं, तो आखिर चीन तो कोई मुसलमानी देश नहीं है। आज हमने जिस तरह से पाकिस्तान से बात की, हमने उन्हीं लफ्जों में चीन के बारे में भी कहा। अगर वह हमारे ऊपर हमला करता है तथा चाहे उस की ताकत जो भी हो हम उसका भी अपनी पूरी शक्ति और ताकत के साथ मुकाबला करेंगे। तो यह मजहब और धर्म की बात नहीं है। यह तो अपने मुल्क की आजादी की, उसकी रक्षा की, उसकी हिम्मत की बात है। हमारे देश का एक इंच, एक टुकड़ा भी कटकर नहीं जा सकता। उसको हमें बचाना है और उसके लिए हथेली पर जान रखकर हर एक भाई-बहन को आगे बढ़ना है।

देश ने बड़ा एका दिखलाया है, बड़ा मेल, बड़ा आपस में संगठन, बड़ा डिसिप्लिन। इसने एक नई जान देश के अन्दर पैदा की है, और हमें भरोसा है, मुझे विश्वास है कि इस एके को हम कायम रखेंगे। कोई इसको बिगाड़ना चाहे तो वह पाकिस्तान के हाथ में खेलेंगे, यही मैं कहना चाहता हूं। जो इस एके को बिगाड़ेगा, जो यहां आपस में झगड़ा पैदा करेगा, जो शान्ति को तोड़ेगा उसको मैं समझूंगा कि वह पाकिस्तान की मदद करता है और एक देशद्रोही की बात करता है इसलिए इस मेल, इस एके को बनाये रखना है। हम यहां अगर आपस में संगठित रहें, अपने खाने का इन्तजाम कर लिया, अपने डिफेंस को मजबूत करने के लिए जो हमसे कहा जाए उसे देने को हम तैयार हो गये और होंगे तो मुझे विश्वास है कि हमारी फौजें हमारे मैदान में, लड़ाई के मैदान में आगे जहां भी उनको मौका मिलेगा वे जी-जान से देश की आजादी की रक्षा करेंगे।

कल मैं अस्पताल में गया था और कुछ अपने सिपाहियों को, अपने जवानों को देखा कुछ अपने अफसरों को देखा, कितनी उनको जबर्दस्त चोटें लगी हैं, कैसे जख्मी हैं, लेकिन मैंने एक के चेहरे पर भी आँसू नहीं देखे बल्कि मुस्कराहट पाई। एक अफसर ने कहा, जिसका पैर जिस पर गोला गिरा था और जिसका पैर घुटने से काट दिया गया था, उसने कहा मुझ से "जब यहां मुझ पर जख्म लगा और यह पैर मेरा लटक रहा था उसके बाद मैंने उधर के पाकिस्तान के अफसर को अपनी गोली से मारकर गिराया चोट लगने के बाद भी।" एक दूसरा अफसर भूपेन्द्र सिंह, उनको देखकर जी भर आया, सारा बदन, सारा जिस्म खून से लथपथ था। एक टुकड़ा कपड़ा भी उनके शरीर पर रहना मुश्किल है आज भी, इस वक्त भी खून से तर और कितने जख्म और कितनी चोट लगी हुई थीं। लेकिन उन्होंने मुझ से कहा, आंखें बन्द थीं 'मुझे अफसोस है कि मैं बेअदबी कर रहा हूं कि हमारे प्राइम मिनिस्टर आए हैं और मैं लेटा हुआ हूं। उन्होंने कहा 'अकेले मैंने जबकि मुझ पर लगती थी गोलियां या बमों के गोले आते थे, लेकिन अकेले मैंने ७ टैंक मार गिराये।' लेकिन उन्होंने कहा 'मैंने तोड़ा और मेरी यूनिट ने ३१ टैंकों को मार गिराया। और उन्होंने कहा 'कि मैं अच्छा होऊं या न होऊं' अच्छे तो हो ही जाएंगे मुझे पूरी उम्मीद है लेकिन उन्होंने कहा 'हमने देश का सर ऊंचा ही किया है। और मैंने भी उन से कहा कि हमें भी आप पर अभिमान है, आपके लिए गौरव है, सारे देश को घमण्ड है कि आप लोगों ने किस शान के साथ अपने दुश्मनों का मुकाबला इतनी शक्ति और ताकत के साथ किया है। इसमें कोई शक नहीं है, आज सारा देश चाहे हमारी फौज हो, चाहे हमारे हवाई जहाजों के उड़ाने वाले पायलट्स हों। आज एक-एक बच्चा, एक-एक नौजवान उनके लिए दिल में आदर रखता है। और शान से उनके कामों को याद

करता है। मुझे विश्वास है कि हम सब आज पूरी ताकत के साथ अपनी फौजों के पीछे खड़े रहेंगे और उनको इस बात का मौका देंगे कि वह हमारे देश को एक कामयाबी के बाद, एक जीत के बाद दूसरी जीत पर जीत बराबर लेते जाएं मुझे विश्वास है कि न्याय हमारे साथ है, इन्साफ हमारे साथ है, सच्चाई हमारे साथ है और जीत हमारी होगी।

---

(१० अक्टूबर १९६५ को आकाशवाणी से राष्ट्र के नाम तीसरा सन्देश)

# अधिक अन्न उपजाओ, अन्न को नष्ट न करो।

पिछले कुछ सप्ताह में जो घटनाएं घटी हैं उनसे सभी देशवासियों में अपनी जिम्मेदारियों की एक नई और गहरी भावना जमी है। इनमें सबसे बड़ी जिम्मेदारी अपनी स्वाधीनता बनाए रखने की है। हमें अचानक ऐसी चुनौती, चैलेंज का सामना करना पड़ा, जो हमारे लिए एक नई चीज थी। लेकिन हमने तेजी के साथ अच्छे ढंग से इसका मुकाबला किया। भारत के बहादुर सिपाही और वायु सैनिकों ने सर हथेली पर रखकर इस चैलेंज का जवाब दिया। वीर सैनिकों ने जानलेवा जख्मों की परवाह न की और हंसते हुए मौत को गले लगाया इसलिए कि उनका देश आजादी और इज्जत के साथ जिन्दा रहे। ये बहादुर सिपाही कौन थे? हमारे ही तो बेटे और भाई थे। उन्होंने हमें वीरता और त्याग का रास्ता दिखाया और हम सबको उन पर गर्व और नाज है। लेकिन काम अभी पूरा नहीं हुआ है। सच पूछिए तो यह काम कभी खत्म होने वाला नहीं है। तन-मन-धन से भारत-माता की रक्षा करने का कर्त्तव्य सदा हमारे सामने रहेगा।

प्यारे देशवासियो ! देश की आजादी को बनाए रखना केवल सिपाहियों का ही काम नहीं । सारे देश को मजबूत बनाना है। जिस उत्साह दृढ़ता और त्याग की भावना ने लड़ाई के मैदान में हमारे जवानों को प्रेरणा दी थी, वही भावना आज हम सबके अन्दर होनी चाहिए और उसी मजबूती से हमको भी अपना कर्त्तव्य और फर्ज पूरा करना है । इसके लिए बातों की नहीं, कुछ कर दिखाने की जरूरत है ।

एक सबक जो हम सबको सीखना है । और जिसे हमें दिल से समझना है, वह यह कि आजादी की रक्षा के लिए हमारे देश की अपनी शक्ति बढ़ानी चाहिए और हमें जितना भी हो सके अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए । हमें अपना आर्थिक ढांचा ऐसा बनाना है कि जरूरी चीजें हम अपने आप बनाएं और पैदा करें ।

आज रात मैं आपसे अन्न और अनाज के बारे में कुछ बातें करना चाहता हूं । इसका महत्व सबसे ज्यादा है । अपनी जरूरत भर का अनाज पैदा करना आज मैं उतना ही जरूरी समझता हूं जितना रक्षा का प्रबन्ध करना । दूर भविष्य को ध्यान में रखते हुए यह जरूरी है कि हम भोजन में कमी करके नहीं, बल्कि देश के अन्दर ही काफी अनाज पैदा करके आत्मनिर्भर बनें । इससे हम एक स्वस्थ और ताकतवर राष्ट्र बना सकेंगे । अनाज के लिए बाहर के देशों के सहारे रहना न केवल देश की अर्थ-व्यवस्था के लिए बुरा हैं, बल्कि इससे हमारे आत्मविश्वास और स्वाभिमान, इज्जत और भरोसे को भी ठेस पहुंचती है । हमें अपने पैरों पर खड़ा होना है और अपनी जरूरत का अनाज खुद पैदा करने के लिए अभी से प्रयत्न करना है । आज अनाज का मोर्चा लगभग उतना ही अहम महत्वपूर्ण है, जितना फौजी मोर्चा।

देश में अनाज की कमी का अन्दाजा बाहर से हर साल मंगाए जाने वाले अनाज की मात्रा से लगता है । हमारी अनाज की खपत

का आठ फीसदी से भी कम, या यों समझिए कोई बारहवां हिस्सा, बाहर के देशों से आता है। अगर हम जी-जान से कोशिश करें तो कोई वजह नहीं कि इतनी-सी कमी को पूरा न किया जा सके। हमें इस सवाल को इसी समय हाथ में लेना चाहिए। रबी की बोवाई अभी-अभी होने वाली है और यही सबसे महत्वपूर्ण समय है। इस समय हम जो कुछ कर पाएंगे, उस पर हमारे देश का आनें वाले साल में बहुत कुछ भाग्य निर्भर रहेगा। "जहां पहले एक दाना उगता था, वहां अब दो उगेंगे" यही हमारा उद्देश्य, यही हमारा नारा होना चाहिए।

जहां तक खेती के काम का सम्बन्ध है, मेरे किसान भाई इस बारे में मुझसे कहीं ज्यादा जानते हैं। इसलिए मुझे विस्तार या तफसील में नहीं जाना है। खेती की पैदावार बढ़ाने का मतलब घनी खेती करना है। जहाँ पहले एक फसल उगती थी, उस जमीन पर दो फसलें उगाई जायें। अगर दो फसल उगाई जा चुकी हैं तो तीसरी फसल के लिए कोशिश की जाए। अगर सही तरीके से यह तय कर लिया जाये कि किस फसल के बाद कौन-सी चीज पैदा करनी है, तो यह दो और तीन फसलें पैदा करना कठिन नहीं है। बड़ी फसलों के साथ कुछ छोटी फसलें भी पैदा करने को पूरी कोशिश होनी चाहिए।

आप सब जानते हैं कि हमारे पास रासायनिक खाद, फर्टिलाइजर इतना नहीं है जितना हमें चाहिए। विदेशी मुद्रा की कमी के कारण हम उसे बहुत बाहर से इस समय नहीं मंगा सकते। हमें इस कमी को पूरा करने के लिए कम्पोस्ट खाद तैयार करने की ओर पूरा ध्यान देना चाहिए। कम्पोस्ट खाद में गोबर की साधारण खाद से ज्यादा नाइट्रोजन और फसलों को ताकत देने वाली चीजें होती हैं। इसलिए कम्पोस्ट खाद ज्यादा से ज्यादा तैयार करने में हमें पूरी तरह लग जाना चाहिए। मुझे शक नहीं है कि इससे खेती की पैदावार काफी हद तक बढ़ाई जा सकती है।

आपको मालूम ही है कि खेती की सफलता सिंचाई से है। देश के सभी इलाकों में सिंचाई का पूरा प्रबन्ध है। लेकिन जहां भी सिंचाई का इन्तजाम है, वहां इन साधनों का किफायत के साथ इस्तेमाल होना चाहिए और ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाया जाना चाहिए। सिंचाई के साधनों से पूरा लाभ उठाया जाना चाहिए। सिंचाई के साधनों से पूरा फायदा उठाने के लिए पहले से कारंवाई की जाये। इस साल देश भर में बारिश आम वर्षों के मुकाबले कम हुई है। तरावट की कमी के कारण रबी की फसलों के लिए कुछ दिक्कत है, लेकिन इससे हमें अपने उद्देश्य से नहीं हटना है, कोशिश में कमी नहीं करनी है। जहां सिंचाई के साधन काफी न हों, वहां कच्चे कुएं खोदे जा सकते हैं।

संकट के इस समय में हर इलाके के लोगों को चाहिए कि वे अपने यहाँ की हालत को देखते हुए अनाज और दूसरी जो भी फसलें उगा सकें, उगाएं। जमीन के हर टुकड़े पर खेती की जाए। शहरों में भी खाली जमीन के हर टुकड़े पर, बागों के छोटे-छोटे हिस्सों पर, जहां भी हो सके, सब्जियां उगाई जाएं। सब्जी का सुन्दर सजा हुआ बगीचा हर घर के लिए गर्व की चीज होना चाहिए। केला और पपीता जैसे जल्दी फल देने वाले पेड़ भी बड़ी तादाद में उगाए जा सकते हैं। ये चीजें अनाज के कम खर्च में हमारी मदद करेंगी।

अब तक मैंने अनाज की पैदावार बढाने के लिए कोशिश करने की बात कही है। जाहिर है सिर्फ अनाज पैदा करना ही काफी नहीं है। हमें सारी जनता को अनाज देना है। हमारा उद्देश्य होना चाहिए कि अनाज की मुनासिब और सही बांट हो। इस काम में भी किसान सबसे ज्यादा सहायता कर सकते हैं। किसानों को कारखानों और खानों के मजदूरों, खेतीहर मजदूरों, नगरवासियों और फिर रक्षा करने वाले सैनिकों को खिलाना है। किसान भी अपनी जरूरत का अनाज बड़ी खुशी से अपने पास रखें। लेकिन जो बाकी बचे उसे उन्हें

बेचना ही चाहिए। अपने पास रखना देश पर संकट लाना होगा। आपको यह विश्वास दिलाया जा चुका है कि आपको उपज की मुनासिब कीमत मिलेगी। मैं खास तौर से बड़े किसानों से कहना चाहता हूं जो अनाज अपने पास रोक रख सकने की कुछ शक्ति रखते हैं, वे आगे आयें और उनके पास जो भी अधिक अनाज पड़ा है, या आगे भी उनके पास बचे, उसे वे मण्डी में ले आयें। संकट की इस घड़ी में यही उनकी सबसे बड़ी देश-सेवा होगी। किसानों का इस समय एक ही नारा होना चाहिए, 'ज्यादा पैदा करो और ज्यादा बेचो' हर गांव में खेती को बढ़ाने का काम तेजी और मजबूती से होना चाहिए। मुझे आशा है ग्राम-पंचायतें और किसानों की कोआपरेटिव सोसाइटियां इस काम में पूरी से तरह हाथ बटाएंगी। आजादी की लड़ाई में भारत के किसान सदा आगे रहे हैं। मुझे भरोसा है कि आज भी जरूरत की इस घड़ी में देश का साथ देंगे।

व्यापारियों से मेरा कहना है कि वे माल अपने पास बचाकर न रखें। उन्हें यह देखना चाहिए कि लोगों को खाने-पीने की सभी जरूरी चीजें मुनासिब दामों पर मिलती रहें। मुझे इस बात की खुशी है कि व्यापारियों ने कीमतों को बढ़ने से रोकने की कोशिश की है। आशा है, कठिनाइयों के इन दिनों में वे राष्ट्रसेवा की इसी भावना से काम करेंगे। आज संकट के इस समय में उनकी जिम्मेवारी बहुत बड़ी है।

जहां तक हम दूसरे लोगों का सम्बन्ध है, हमारे लिए जरूरी है कि हम अनाज या और कोई चीज जो कम हो, उसे खरीदकर जमा करने की कोशिश न करें हम सिर्फ उतना ही माल खरीदें जो हमारी साधारण जरूरतों के लिए काफी हो। किसी के पास न हो और किसी के पास ज्यादा, यह आज हम कैसे देख और सोच सकते हैं। यदि त्याग करना पड़े तो सबको बराबर का त्याग करना चाहिए। हम लालच छोड़ें, संयम से काम लेकर देश की काफी मदद कर सकते हैं।

अमरीका के विशेष रूप से हम आभारी हैं तथा कुछ दूसरे मित्र-देशों के भी, जो हमें अनाज दे रहें हैं। लेकिन हमें ऐसी हालत के लिए तैयार रहना चाहिए, जब हम विदेशों से अपनी जरूरत के लिए अनाज नहीं मंगा पाएंगे। ऐसी हालत का सामना करने को हमें तैयार रहना है। अनाज है, तो हर एक को खाने को मिलेगा। अगर कम है तो, सबको खुशी के साथ थोड़ा त्याग करने के लिए तत्पर रहना होगा।

हम अनाज की पैदावार बढ़ाने की कोशिश तो कर ही रहे हैं, लेकिन पूरी तरह अपने पैरों पर खड़े होने में कुछ देर लगेगी। तब तक हमें अनाज की खपत में कुछ संयम से काम लेना होगा। खाने पीने की सभी चीजों की खपत कम होनी चाहिए। पार्टियों और दावतों का यह समय नहीं है। ब्याह-शादियों पर भी किसी तरह का दिखावा नहीं होना चाहिए और बहुत से खाने नहीं परोसे जाने चाहिएं। होटलों और रेस्तोरैण्टों को समय के अनुसार चलना चाहिए। आज ज़रूरत त्याग की है, किफायत की है। लोगों को इसी ओर जाना चाहिए और सारे देश को इसी ओर ले जाना चाहिए।

महिलाओ के कर्त्तव्य के बारे में भी मैं कुछ बातें कहूंगा। वे आज के संकट में बहुत सहायता कर सकती हैं। वे खाने में ऐसी चीजें परोसें जो आस-पास के इलाकों में ज्यादा पैदा होती हों, पर ज्यादा खाई नहीं जाती हों। इस प्रकार वे घर के लोगों की खुराक की आदतों को बदल सकती हैं। हम अपने भोजन में कुछ गेहूं और मक्का, जौ, बाजरा और चना आदि खा सकते हैं। गृहिणी को चाहिए कि वह अनाज की खपत में किफायत करे और इस बात की कोशिश करे कि कुछ भी बेकार नष्ट न हों। दुर्भाग्य से आजकल के दिनों में भी खाने-पीने की काफी चीजें खराब हो जाती हैं ऐसा नहीं होना चाहिए खुशहाल घरों में सब्जियों, फलों, गोश्त और मछली आदि ज्यादा खाकर अनाज की खपत में कमी की जा सकती है। मैं चाहता हूं ऐसे परिवारों में हर हफ्ते कम से कम कुछ बार का खाना बिना अनाज के परोसा जाए।

भारत की महिलाओं ने देश की सेवा में सदा योग दिया है। अब वे अनाज की बचत और त्याग में भी देश का नेतृत्व करें।

रबी की बोवाई जल्द शुरू होने वाली है और आने वाले तीन-चार हफ्तों का महत्व बड़ा है। कोई जमीन का टुकड़ा खाली नहीं रहना चाहिए। जमीन के छोटे से छोटे टुकड़े को भी काम में लाना है। सरकार की सारी मशीनरी, संगठन को किसानों की सहायता के लिए तैयार किया जा रहा है। मैं मन्त्रियों से अनुरोध कर रहा हूं कि वे जिला-अधिकारियों को अपने इलाकों में अनाज-उत्पादन-आन्दोलन फौरन शुरू करने का हुक्म दें। इस काम में सामुदायिक विकास (कम्युनिटीडेवलेपमेंट,) संगठन को बहुत कुछ करना है। बीज, रासायनिक खाद, पानी और दूसरी जरूरी चीजों को किसानों तक पहुंचाने के लिए अच्छे से अच्छे ढंग और पूरे तालमेल के साथ काम किया जाए। हर जिले की अपनी योजना हो और अलग-अलग सरकारी कर्मचारियों पर गांवों के समूहों की जिम्मेदारी सौंप दी जाए। यह उनका फर्ज होगा कि वे किसानों के साथ पूरा सम्पर्क रखें और उनको कठिनाइयों को दूर करने के लिए भरसक कोशिश करें। जिले में अधिकारियों के पूरे दल को मोर्चे पर लड़ने वाले सिपाहियों की सी भावना से काम करना होगा। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट अपने आपको, पूरी नम्रता के साथ, एक कमांडर की तरह समझें, जिसे इस आन्दोलन को चलाना है और अपना लक्ष्य पूरा करना है। अपने रोजाना काम को डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट को किसी और सीनियर अफसर को सौंप देना चाहिए और अपना ध्यान और ताकत लगभग पूरी तरह से खेती की पैदावार की ओर लगाना चाहिए। अगर अधिकारी इस काम को न केवल अपना फर्ज समझकर बल्कि संकट की घड़ी में देश के प्रति अपनी जिम्मेवारी मानकर जुट जाएंगे, तो उनकी कोशिशें जरूर जरूर सफल होंगी।

वक्त बहुत नाजुक है, खतरा अभी टला नहीं है। संकट के समय

में बहादुर जवानों ने जो रास्ता दिखाया है, क्या हमारे किसान उससे पीछे रह सकते हैं ? जवान अपना खून बहा रहा है, देश के लिए अपनी जान की बाजी लगाये बैठा है। किसान को अपनी मेहनत और अपना पसीना देना है। किसान हमारे देश के प्राण हैं। उन्हें लाखों की तादाद में उत्साह और मेहनत से खेतों में जुट जाना है। उनके सामने एक ही मन्त्र है 'अनाज की पैदावार बढ़ाओ।" हम दूसरे देशों पर निर्भर न रहें। हम अपनी आजादी को संजोये रखें। हम पर जो कुछ भी बीते, देश का सम्मान सदा बना रहे। हमें आत्मनिर्भर, शक्तिशाली देश बनाना है और हम बनकर रहेंगे।

---

(१९ अक्तूबर १९६५ को दिया गया चौथा भाषण)

## देश को आत्म-निर्भर बनायें

पिछले कई दिन मैं दौरे में कई जगह गया हूं। सबसे पहले मैं लाहौर और स्यालकोट के क्षेत्रों में अगले मोर्चों पर गया। वहां मैंने फौज और वायुसेना के जवानों को हौंसले से भरपूर और लड़ाई के लिए चुस्त और चौकस पाया। बम्बई, औरंगाबाद और पेठ गांव से मैंने लाखों लोगों को देखा। उनके चेहरों पर एक नये विश्वास की चमक थी और उनकी आंखों में नये सपने झलक रहे थे। तीन साल पहले चीन के हमले के बाद जब हमने २० अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता-दिवस मनाना शुरू किया, तो हमने अपने सामने एक उद्देश्य रखा। वह उद्देश्य—वह मकसद—आज पूरी तरह हल हो गया है। आज एकता का एक सुन्दर चित्र देश के सामने है और इस एकता को सारी दुनिया ने देख लिया है। लोगों में आज एक जोश का संचार हुआ है और वे सभी क्षेत्रों में हर कमी को पूरा करना चाहते हैं।

हम अभी भी संकट के बीच में हैं और ऐसा लगता है कि यह

हालत अभी काफी समय तक रहेगी। इसलिए हमें चीजों को काफी लम्बे अरसे के ख्याल से देखना होगा और सभी पक्षों और पहलुओं पर विचार करना होगा।

कल एकता दिवस मनाया जायेगा। इस मौके पर इस साल हम यह संकल्प लें कि हम अपने पांव पर आप खड़े होने की पूरी कोशिश दृढ़तापूर्वक करेंगे। इस ओर जनता का ध्यान खिंचा है। आत्म-निर्भरता का मतलब यह नहीं है कि हमारे पास हमारी जरूरत की हरेक चीज हो। दुनिया का कोई भी देश सब तरह से अपने ऊपर निर्भर नहीं हो सकता। आत्मनिर्भरता मन की एक रुझान है। एक गरीब आदमी भी आत्मनिर्भर हो सकता है और एक अमीर आदमी का काम औरों पर निर्भर हुए बिना शायद न चले। आत्मनिर्भरता का मतलब यह है कि हमारे पास जो कुछ भी है, उसका हम अधिक और अच्छा इस्तेमाल करें और जो नहीं है, उसके बिना काम चलाने का हौंसला रखें।

तीन ऐसे खास क्षेत्र हैं, जिनमें आत्मनिर्भरता की सबसे ज्यादा जरूरत है। सबसे पहले तो, यह जरूरी है कि हमारी फौज इस ढंग से तैयार हो कि वह हमारी सीमाओं की रक्षा कर सके और हमारे सामने जो चुनौती है, उसका सामना कर सके। इसलिए अपने रक्षा-उद्योगों का हमें अधिक तेजी से विकास करना है। दूसरा मसला यह है कि अनाज की अपनी जरूरत को हम खुद पूरा कर सकें। इसके बारे में मैं आपसे अभी कुछ ही दिन पहले कह चुका हूं। ऐसा लगता है कि किसानों को अपनी जिम्मेवारी का अनुभव है और उनके सह-योग से हौंसला बढ़ता है और सन्तोष होता है।

जो लोग हमारी मदद के लिए आगे आते हैं, उनके हम कृतज्ञ हैं, शुक्रगुजार हैं। लेकिन हमें अपने ही पांवों पर मजबूती से खड़े होने के लिए भी तैयार रहना है और यह काम आज और अभी करना है। हमें अपने आप से जो सवाल पूछना है, वह यह है कि हम अपनी

कोशिश से खुद क्या कर सकते हैं, जिससे विकास और रक्षा की हमारी जरूरतों के लिए साधन जुटाए जा सकें।

ये साधन हमें खुद पैदा करने हैं। अपने उत्पादन का काफी बड़ा हिस्सा हमें लोगों की रोजमर्रा की जरूरत पूरा करने के लिए तो लगाना ही होगा, लेकिन अगर हम अपने ऊपर निर्भर होकर तेजी से बढ़ना चाहते हैं, तो हमें दो बातें करनी हैं। हमें ज्यादा पैदा करना होगा और खपत कम करनी होगी।

मैं जानता हूं कि हमारी आमदनी कम है और हमारे लिए चीजों की मौजूदा खपत को घटाने की बात सोचना आसान नहीं है, लेकिन फिर भी हमें याद रखना है कि अगर हम आज अधिक बचत करते हैं, तो कल हमें ज्यादा खर्च करने का मौका मिलेगा। यह बात जितनी सही हमारे निजी मामलों में है, उतनी ही राष्ट्र के मामलों के लिए भी है। अपने बच्चों के लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए हमें आज त्याग करना है। इसलिए यह हो सकता है कि हमें बहुत-सी चीजों के बिना ही रहना पड़े। पिछले १५ वर्षों में तीन पंचवर्षीय योजनाओं के जरिये जहां आमदनी बढ़ी है, वहीं अनाज, चीनी, कपड़ा, बाईसिकिल, रेडियो और इसी तरह की दूसरी चीजों की खपत भी साल-दर-साल बढ़ती जा रही है। लेकिन अगर हमें तेजी से आगे बढ़ना है, तो खपत की बढ़ती हुई रफ्तार को धीमा करना होगा। आमदनी बढ़ती रह सकती है, लेकिन खर्च कम रखना होगा और बचत बढ़ानी होगी।

छोटी बचतों की—सेविंग्स की—कई रकमें आज चल रही हैं। सिर्फ दो रुपये में भी डाकखानों में बचत-खाता खोला जा सकता है। नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट सिर्फ दस रुपए में खरीदा जा सकता है, जिसके बदले दस साल में १८ रुपए मिल सकते हैं। इसके अलावा १२ साल के नेशनल डिफेन्स सर्टिफिकेट की स्कीम भी है, जिसमें पैसा

लगाने से बहुत अच्छी दर पर ब्याज मिलता है, जिस पर कोई टैक्स भी नहीं लगता। आज की हालत में डिफेंस सेविंग्स सर्टिफिकेटों में पैसा लगाने की कोशिशों को नयी तेजी पकड़नी है। देश भर में लोगों को इसकी अहमियत समझनी है और इसमें पैसा लगाना है। अगर पूरी कोशिश की जाए, तो कोई वजह नहीं कि बहुत अच्छे नतीजे न निकलें। मिसाल के तौर पर, महाराष्ट्र सरकार ने कुछ ही दिनों में कोशिश करके लगभग २ करोड़ रुपये के सर्टिफिकेटों की बिक्री की। बिक्री का अभी वहां काम शुरू ही हुआ है। जिन लोगों को आमदनी कम है, वे भी इनमें पैसे लगाकर रक्षा की कोशिश में, और खुद अपनी भी मदद कर सकते हैं।

अब हम एक नयी स्कीम शुरू करना चाहते हैं। सरकार ने फैसला किया है कि 'नेशनल डिफेन्स लोन' यानी 'राष्ट्रीय रक्षा ऋण' का काम शुरू किया जाए। एक सात वर्ष का कर्ज होगा, जिस पर पौने पांच सीसदी ब्याज मिलेगा और दूसरा तीन साल का कर्ज होगा, जिस पर सवा चार फीसदी ब्याज दिया जायेगा। इस कर्ज की कोई सीमा नहीं होगा। इनमें धन रुपयों में और विदेशी मुद्रा—फारेन एक्सचेंज—में लगा सकते हैं और उन्हें मूल और ब्याज बाहर ले जाने की सहूलियत दी जाएगी। इस पर टैक्स नहीं लगेगा।

हमारे देश के लोग मुल्क की रक्षा के लिए खुले दिल से धन देने को हमेशा तैयार रहे हैं। मौजूदा संकट में भी लोगों ने अपने आप ही डिफेंस फण्ड में पैसा दिया है और मुझे हर दिन दिल्ली के रहने वालों और देश के सभी हिस्सों से, और बाहर से भी और सभी तरह के लोगों से छोटी-बड़ी रकमें फण्ड के लिए मिल रही हैं। मुझे बिल्कुल शक नहीं कि नये नेशनल डिफेन्स लोन के लिए लोगों में इसी तरह का उत्साह और जोश होगा। मैं यह चाहता हूं कि मैं इस कर्ज में और सेविंग्स सर्टिफिकेटों में हमारे देश का रहने वाला एक-एक आदमी पैसा लगाए। मैं जानता हूं कि जिन लोगों की आमदनी कम है, उनसे दान की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। लेकिन

कर्ज में पैसा लगाकर, जो कुछ वर्षों में उन्हें वापस मिल जायेगा, वे रक्षा से प्रयत्नों में हिस्सा बंटा सकते हैं और उन्हें बंटाना ही चाहिए। मैं चाहता हूं कि डिफेन्स लोन में पैसा लाखों में नहीं, करोड़ों में लगाया जाए।

अभी तक मैंने आपसे जो बातें कही हैं, उनका सम्बन्ध देश के अन्दरूनी साधनों से है। लेकिन कहीं ज्यादा चिन्ता की बात है, विदेशी साधनों या फारेन एक्सजेंज की कमी। इसकी वजह यह है कि देश की तरक्की और फौज की जरूरतों के लिए हमें बहुत-सी ऐसी चीजें बारह से मंगवानी पड़ती हैं, जिन्हें हम देश में तैयार नहीं कर रहे हैं। यह हमारी शायद सबसे भारी कमजोरी है और हमें अपनी इस मुश्किल का हल निकालना है। हमें विदेशों से कम चीजें मंगानी है और ज्यादा से ज्यादा चीजें बाहर भेजनी हैं। हमें लगातार कोशिश करनी है कि हम देश में ही ऐसी चीजें तैयार करें, जिन्हें हम बाहर से मंगाते हैं और साथ ही ऐसी चीजें बनाए, ज़ो बाहर से मंगाई जाने वाली चीजों की जगह ले सकें।

गांधीजी ने स्वदेशी का जो मंत्र दिया था, वह आज भी उतना ही ठीक और सच्चा है, जितना चालीस साल पहले था। स्वदेशी के लिए हमें आज भी पहले जैसी भावना और पहले जैसा जोश करना है।

आयात कम करने और निर्यात बढ़ाने की कोशिशें तो हमें करनी हैं, लेकिन उनके नतीजे कुछ दिन बाद ही सामने आयेंगे। तब तक मौजूदा संकट के समय देश में विदेशी मुद्रा—फारेन एक्सचेन्ज—कैसे मिलेगा, इसकी ओर हमें ध्यान देना है। मेरा मतलब देश में मौजूद सोने से है। पहले भी लोगों ने सोना नेशनल डिफेंस फंड में और गोल्डबांडों में लगाया है। लेकिन लोग उस सोने को हमेशा के लिए नहीं देना चाहते, जो कई लोगों के लिए पीढ़ियों की बचत है। वे चाहते हैं कि अपना सोना उसी तरह अपने बच्चो को सौंप जाएं, जैसे कि उन्हें उनके माता-पिता से मिला है। इस बात को ध्यान में रखकर ही

एक नई स्कीम शुरू की जा रही है। गोल्ड-बांडों का एक नया सिल-सिला जारी किया जा रहा है, जिसका नाम होगा नेशनल डिफेंस गोल्ड-बांड। इसमें जो सोना लगाया जायेगा, उसे सरकार पन्द्रह साल बाद शुद्ध सोने के रूप में ही वापस करेगी। इस बीच जो सोना सरकार के पास रहेगा, उस पर हर दस ग्राम पीछे दो रुपया सालाना ब्याज दिया जायेगा। ब्याज पर कोई इन्कम टैक्स नहीं लगेगा और गोल्ड-बांडों पर वेल्थ टैक्स नहीं लगेगा। ये बांड किसी दूसरे को भी दिए जा सकते हैं और इन पर कैपीटल गेन्स टैक्स नहीं लगेगा। गिफ्ट टैक्स और स्टेट ड्यूटी पर भी कुछ रियायतें इनके बारे में दी जाएंगी। सोने का वजन उसकी शुद्धता के स्टैंडर्ड के मुताबिक आंका जाएगा और इसी हिसाब से उसे लिया जाएगा और वापिस किया जाएगा। सोना देने वालों के खिलाफ कोई कार्यवाही इसलिए नहीं की जाएगी कि उन्होंने गोल्ड कंट्रोल आर्डर या इन्कम टैक्स कानून का पालन नहीं किया है। जो लोग सोना देंगे, उनके नाम नहीं बताए जाएंगे।

इस तरह देश में आज जिन लोगों के पास गहने या बुलियन की शक्ल में सोना है, उनके लिए यह मौका है कि वे इस बड़े काम में इसे लगाकर रक्षा और विकास के लिए जरूरी साज-सामान बाहर से मंगाने में सहायता करें। साथ ही सोने पर उनका अधिकार बना रहेगा और जब भी चाहें वे उसे बेच सकेंगे या तोहफे के तौर पर दे सकेंगे। इसके साथ ही इस सोने से आमदनी भी होने लगेगी।

आज के संकट के समय में विदेशी मुद्रा एक और जरिये से भी मिल सकती है। हमारे बहुत से देशवासी विदेशों में रहते हैं और वे मुल्क की काफी मदद कर सकते हैं। मैं जानता हूं कि उनके दिलों में भी वैसी ही भावनाएं हैं। जैसी हमारे दिलों में है। बल्कि वे हमसे कहीं ज्यादा गहराई से आज के हालात को महसूस कर रहे हैं, क्योंकि वे अपने देश से दूर हैं। चाहे ऐसे लोग बाहर जाकर बस गये हों या कुछ समय के लिए देश से बाहर गये हों, वे अक्सर इस देश में अपने रिश्तेदारों और दूसरे लोगों को पैसा भेजते हैं। ऐसा देखा

गया है कि यह पैसा लोग गैर-कानूनी तरीके से भेजते हैं, जिससे उन्हें ज्यादा फायदा हो। लेकिन आज जबकि देश एक बड़े संकट से गुजर रहा है, मैं विदेश में रहने वाले सभी भारतीयों से अपील करूंगा कि वे जो भी पैसा भेजें वह सरकारी जरियों से ही भेजें। एक ऐसी स्कीम जारी करने का फैसला किया गया है, जिसके मातहत उन भारतीय नागरिकों को, जो विदेशों से बैंकों के जरिए धन प्राप्त करते हैं, इस धन के साठ फीसदी तक के लिए इम्पोर्ट लाइसेंस दिए जाएंगे। विदेशों में रहने वाले जिन भारतीयों के पास रिजर्व बैंक की अनुमति से विदेशी मुद्रा है, वे अगर उस धन को भारत में ले आते हैं, तो इस स्कीम के मुताबिक उन्हें भी इम्पोर्ट लाइसेंस का फायदा मिलेगा। ये इम्पोर्ट लाइसेंस कुछ खास किस्म की चीजों के लिए दिए जाएंगे, खास तौर पर ऐसे कच्चे माल के लिए जिसकी कमी है, और ऐसी मशीनों वगैरह के लिए जिनकी जरूरत देश में उत्पादन बढ़ाने के लिए पड़ती है।

मैंने जिन स्कीमों के बारे में बताया है, उनके सम्बन्ध में कायदे से ऐलान अलग से वित्त-मन्त्रालय करेगा। लेकिन ये मामले सिर्फ वित्त से सम्बन्धित नहीं है। देश की ताकत बढ़ाने के लिए रुपया चाहिए, विदेशी मुद्रा चाहिए और सोना चाहिए। हरेक आदमी को, जितना भी वह दे सके, यह सब देना है, मगर यह समझकर देना है कि इससे वह मुल्क को अपनी जरूरतें आप पूरी करने के काबिल बनाएगा।

मेरे देशवासियो, हमें वक्त नहीं खोना है और मिलकर कोशिश करनी है कि अब से कहीं ज्यादा तेजी के साथ देश को आत्मनिर्भर बनाएं और आर्थिक तरक्की के रास्ते पर आगे बढ़ें। हमारे देश में प्रकृति ने हमें बहुत कुछ दिया है और हमारे लोगों में जी-जान से जुटकर काम करने की क्षमता भी है। आइये, हम इस संघर्ष में जुट जाएं और आप देखेंगे कि कामयाबी हमारे पांव चूमती है।

# क्रान्तिकारी साहित्य के सम्पर्क कीजिए

**१. सीमा के प्रहरी** (आचार्य मित्रसैन) मूल्य-५)

भारत-पाकिस्तान के युद्ध में बलिदानी वीरों की सच्ची और रोमांचकारी घटनाएं, उन्हीं की भाषा में पढ़ें। वीरों के बलिदान का ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। वीरों के उज्ज्जव चरत्र का वर्णन करते हुए लेखक ने अतिशयोक्ति से काम नहीं किया।

**२. अमर क्रान्तिकारी** (श्री राजपाल सिंह शास्त्री) मूल्य-५)

इस पुस्तक में अनेक क्रान्तिकारियों की (सरदार भगत सिंह, बिस्मिल, आजाद आदि-आदि) जीवनी पढ़ने को मिलेगी। भाषा सरल एवं रोचक है। बालपयोगी संस्करण है।

**३. क्रान्ति के अग्रदूत** मूल्य-१२)

(विद्याभास्कर श्री सच्चिदानन्द शास्त्री)

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में आर्यसमाज का योगदान, विचित्र सन्यासी दयानन्द, अमर क्रान्तिकारी : स्वामी श्रद्धानन्द, अहिंसा का प्रतीक महात्मा गाँधी, देवता स्वरूप भाई परमानन्द, पंजाब केशरी: लाला लाजपतराय, बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, मंगल पाण्डेय, सरदार भगतसिंह, सुभाष चन्द्र बोस आदि-आदि अनेक क्रान्तिकारियों का अनोखा लेखाजोखा पढ़ने को मिलेगा।

**४. भारतीय मानवता का मूल तत्व** मूल्य-१०)

(विद्याभास्कर श्री सच्चिदानन्द शास्त्री)

भारतीय संस्कृति का विशाल महल हमारी हीनता से ढहता चला गया। विशाल भू-भाग हमारे से दूर हो गया और हम एक लघु भू-भाग के अधूरे मालिक भी न रह सके। परिणामतः हिन्दु संस्कृति एवं सभ्यता हमसे छिन गई और हमारा नामोनिशान ही अवशेष है।

हिन्दु समाज की हीन दशा पर जो करुण ... इस पुस्तक में लेखक के विचार सविस्तार पढ़ें।

मधुर-प्रकाशन

आर्यसमाजगली, २८०४, बाजार सीता राम, दिल्ली-६

# प्रेरणाप्रद साहित्य पढ़िये

**१. महर्षि दयानन्द** (श्री रामेश्वर शास्त्री) मूल्य-३)

ऋषि दयानन्द सरस्वती की जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त सभी घटनाएं लिखी गई। लेखक ने गागर में सागर भर दिया है। प्रत्येक बालक और बालिका को अवश्य पढ़नी चाहिए। भाषा सरल है। बालोपयोगी शैली से लिखा गया जीवन चरित्र है। कागज बढ़िया और मोटे टाईप में मुद्रित यह पुस्तक है। मनमोहक टाईटिल है।

**२. संघर्ष मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द** मूल्य-५)

(श्री शिवकुमार विद्यालंकार)

जिस सन्यासी ने अंग्रेजी शासन में सीना खोल दिया और सेना के सिपाही बन्दूकें ताने खड़े हैं। ऐसी वीर सन्यासी की जीवनी पढ़कर संघर्षों से जूझना सीखें। कागज और छपाई उत्तम है। टाईटिल आकर्षक है।

**३. स्वामी विरजानन्द का जीवन-चरित्र** मूल्य-१०)

(स्वामी वेदानन्द तीर्थ)

क्रान्तिकारी स्वामी विरजानन्द जी की अद्भुत घटनाक्रम पढ़ें। आपकी प्रेरणा से ही आपके शिष्य ने भी देश में एक विशेष हलचल मचा दी थी। ओजस्वी भाषा में लिखित यह जीवनी जन-साधारण के लिए मार्गदर्शक है।

**४. स्व० लालबहादुर शास्त्री जीवन कथा—** मूल्य-१०)

(श्री प्रेम चन्द शास्त्री)

भारत के द्वितीय प्रधान-मन्त्री की जीवनी, प्रेरणाप्रद प्रसंग अत्यन्त सुन्दर और सरल भाषा में लिखे गए हैं।

**मधुर—प्रकाशन**

आर्यसमाज गली, २८०४ बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६

वशिष्ट कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा, तिलक प्रिंटिंग प्रेस में मुद्रित,
बाजार सीताराम, दिल्ली-६

सं श्रुतेन गमेमहि
ओ३म्
हम वेदमार्ग पर चलें